Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 269 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, शुक्रवार 18 अप्रैल 2025 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

जहां सत्य होता है, वहां अहिंसा होती है और अहिंसा होने पर हमारा जीवन सुरक्षित होता है।

where there is truth there is non-violence and its presence secures our life.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

सीएम सचिवालय के चार अफसरों का ट्रांसफर

रायपुर (विसं)। मुख्यमंत्री सचिवालय में पदस्थ चार अधिकारियों का ट्रांसफर हो गया है। सामान्य प्रशासन से जारी आदेशानुसार राजेश जैन अनुभाग अधिकारी को मुख्यमंत्री सचिवालय से हटाकर पशुधन विकास विभाग, जयंत भगवान कोलते अनुभाग अधिकारी पशुधन विकास विभाग को मुख्यमंत्री सचिवालय, रीमती सरिता शंभरकर सहायक अनुभाग अधिकारी मुख्यमंत्री सचिवालय को राप्रवि-पुल, जितेश नागवंशी वरिष्ठ सचिवालय सहायक को राप्रवि पूल भेजा गया है।

जवानों को उड़ाने नक्सलियों ने प्लांट किया था 5 किलो का बम

नारायणपुर-रायपुर (विसं)। छत्तीसगढ़ में जवानों ने नक्सलियों की बड़ी साजिश को नाकाम किया है. सर्चिंग अभियान के दौरान गड्डाकाल के जंगल से पांच किलो वजनी कुकर प्रेसर आईईडी बरामद किया गया है. नक्सलियों ने यह आईईडी जवानों को नुकसान पहुंचाने के लिए प्लांट किया था. दरअसल, पुलिस अधीक्षक नारायणपुर प्रभात कुमार ने माओवादियों के लगाये गये आईईडी विस्फोट की घटना से हो रही नुकसान को देखते हुए क्षेत्र में आईईडी खोजने के लिए बीडीएस टीम को अगल-अलग क्षेत्रों में भेजा जा रहा है. इस दौरान नक्सलियों के द्वारा लगाये गये आईईडी को बरामद कराया जा रहा.

छत्तीसगढ़ में फैशन शिक्षा को नई उड़ान

मुख्यमंत्री साय की कैबिनेट ने नवा रायपुर में एनआईएफटी कैम्पस की स्थापना की दी मंजूरी

राज्य में फैशन और टेक्सटाइल उद्योग को मिलेगा बढ़ावा

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ सरकार ने राज्य में फैशन शिक्षा और औद्योगिक विकास को नई दिशा देने का एक ऐतिहासिक निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की अध्यक्षता में आज मंत्रालय महानदी भवन में आयोजित कैबिनेट की बैठक में नवा रायपुर में राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी) के नए कैम्पस की स्थापना को मंजूरी प्रदान की गई। इस परियोजना की अनुमानित लागत 271.18 करोड़ रुपये है। छत्तीसगढ़ सरकार का यह कदम न केवल छत्तीसगढ़ के युवाओं के लिए फैशन शिक्षा के क्षेत्र में नए अवसर खोलेगा, बल्कि राज्य में औद्योगिक विकास और निवेश को बढ़ावा देने की दिशा में भी मील का पत्थर साबित होगा।

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एन.आई.एफ.टी.) भारत में फैशन डिजाइन, प्रबंधन और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अग्रणी संस्थानों में से एक है। 1986 में कपड़ा मंत्रालय, भारत सरकार के तहत स्थापित इस संस्थान के वर्तमान में दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, बेंगलुरु सहित देश भर में 17 परिसर हैं। नवा रायपुर में

स्थापित होने वाला यह 18वां नया कैम्पस छत्तीसगढ़ के लिए एक गौरवपूर्ण उपलब्धि होगी। यह संस्थान फैशन डिजाइन, टेक्सटाइल डिजाइन, फैशन प्रबंधन और फैशन प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रम प्रदान करेगा। साथ ही, यह फैशन उद्योग के साथ सहयोग के माध्यम से छात्रों को व्यावहारिक अनुभव और प्लेसमेंट के अवसर भी उपलब्ध कराएगा।

नवा रायपुर में एनआईएफटी की स्थापना से छत्तीसगढ़ के युवाओं को विश्वस्तरीय फैशन शिक्षा प्राप्त करने का अवसर अपने राज्य में ही मिलेगा। यह संस्थान तकनीकी रूप से प्रशिक्षित मानव संसाधन तैयार करके फैशन और टेक्सटाइल उद्योग को मजबूती प्रदान करेगा। इसके अलावा, यह परियोजना स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन और आर्थिक विकास को भी बढ़ावा देगी। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा है कि छत्तीसगढ़ सरकार का लक्ष्य राज्य के युवाओं को विश्वस्तरीय शिक्षा और रोजगार के अवसर प्रदान करना है। नवा रायपुर में एनआईएफटी कैम्पस की स्थापना न केवल फैशन शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांति लाएगी, बल्कि छत्तीसगढ़ को औद्योगिक और आर्थिक विकास के नए शिखर पर ले जाएगी।

नवा रायपुर एक उभरता हुआ वैश्विक केंद्र- नवा रायपुर, जो पहले से ही एक स्मार्ट सिटी के रूप में अपनी पहचान बना चुका है, अब शिक्षा और उद्योग के क्षेत्र में भी एक नया मुकाम हासिल कर रहा है। एनआईएफटी कैम्पस की स्थापना से नवा रायपुर को फैशन और टेक्सटाइल उद्योग का एक प्रमुख केंद्र बनने का अवसर मिलेगा। यह परियोजना न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करेगी, बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसगढ़ की छवि को भी निखारेगी।

कुछ बड़ा होने वाला है... मोदी से मिले नड्डा, हाईप्रोफाइल बैठक से अटकलें शुरू

नई दिल्ली (आरएनएस)। भाजपा सांगठनिक चुनाव के मद्देनजर बीजेपी अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा की आज पीएम मोदी से मुलाकात हुई है। जेपी नड्डा की प्रधानमंत्री मोदी के साथ आज सुबह 10 बजे मुलाकात हुई जो करीब 1 घंटे तक चली।

भाजपा को अब नए अध्यक्ष मिलने की अटकलें तेज हो गई हैं क्योंकि बुधवार को दिल्ली में पीएम मोदी के नेतृत्व में एक मीटिंग हुई जिसमें भाजपा के कई बड़े नेता शामिल हुए। सूत्रों के मुताबिक, संगठनात्मक फेरबदल और राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव पर चर्चा के लिए भाजपा नेताओं ने अहम बैठक की। प्रधानमंत्री आवास पर हुई इस बैठक में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) बीएल संतोष शामिल हुए। इस बैठक में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के आगामी चुनाव पर चर्चा हुई। पार्टी सूत्रों के मुताबिक चुनाव की घोषणा एक सप्ताह के भीतर की जा सकती है।

वहीं, कल रात जेपी नड्डा के आवास पर एक हाई-प्रोफाइल बैठक ने सियासी हलकों में हलचल मचा दी है। बैठक में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल और अश्विनी वैष्णव जैसे दिग्गज नेता शामिल हुए। यह बैठक करीब ढाई घंटे तक चली। सूत्रों के मुताबिक, इस बैठक में कई अहम मुद्दों पर चर्चा हुई। अमित शाह और राजनाथ सिंह जैसे नेताओं की मौजूदगी इस बात का संकेत देती है कि चर्चा में राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा से जुड़े मुद्दे भी शामिल हो सकते हैं।

देश से 31 मार्च 2026 तक खत्म हो जाएगा नक्सलवाद : अमित शाह

नीमच (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने एक बार फिर 31 मार्च 2026 तक देश से नक्सलवाद के खात्मे का संकल्प दोहराया है, क्योंकि देश में नक्सलवाद लगातार सिकुड़ रहा है। मध्य प्रदेश के नीमच जिले में केंद्रीय रिजर्व पुलिस फोर्स (सीआरपीएफ) दिवस के समारोह में हिस्सा लेते हुए अमित शाह ने केंद्रीय सुरक्षा बलों के योगदान की चर्चा की।

उन्होंने कहा कि नक्सलवाद से मुक्त करने में सीआरपीएफ ने बहुत बड़ा योगदान दिया है। जब भी कोबरा बटालियन के जवानों के नक्सलियों की तरफ बढ़ने के समाचार मिलते हैं, तो नक्सलवादियों की रूह कांप जाती है। देश से 31 मार्च 2026 तक नक्सलवाद हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगा, यह प्रण है जो आपके ही बल पर इस देश ने तय किया है। उन्होंने देश की सुरक्षा में बलिदान देने वाले 2,264 जवानों को श्रद्धासुमन अर्पित किए और उनके परिवारों के त्याग तथा बलिदान का स्मरण किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में 248 बटालियन सहित 4 जोनल मुख्यालय, 21 सेक्टर मुख्यालय, 17 रेंज और 39 प्रशासनिक रेंज में लगभग तीन लाख जवान तैनात हैं, जो हर जगह देश की शांति और सुरक्षा के लिए काम कर रहे हैं। सीआरपीएफ को इस देश का ही नहीं, पूरी दुनिया का सबसे बड़ा अर्धसैनिक बल होने का गौरव हासिल है। सीआरपीएफ के जवानों ने हर मोर्चे पर कामयाबी हासिल की है। शाह ने कहा कि 2001 में हमारी लोकतंत्र की सबसे बड़ी पंचायत संसद भवन पर हमला हुआ, इसको नाकाम सीआरपीएफ के जवानों ने किया।

अगले आदेश तक वक्फ में कोई नई नियुक्ति नहीं, सरकार को जवाब के लिए दी 7 दिन की मोहलत

नई दिल्ली (आरएनएस)। वक्फ कानून को लेकर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई है। कोर्ट ने केंद्र सरकार को जवाब देने के लिए 7 दिन का समय दिया है। इसके साथ ही कोर्ट ने कहा है कि वक्फ संपत्ति में कोई बदलाव नहीं होगा। यानी वक्फ की स्थिति जैसी है वैसी ही रहेगी। वक्फ कानून के खिलाफ 70 से ज्यादा याचिकाएं कोर्ट में दायर की गई है।

इस मामले की अगली सुनवाई 5 मई को होगी। सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता दलील दे रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि फिलहाल वक्फ बोर्ड और काउंसिल में कोई नियुक्ति न हो। इसपर तुषार मेहता ने कहा कि सरकार अभी नियुक्ति नहीं करने वाली है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि उसने कहा था कि कानून में कुछ सकारात्मक बातें हैं और इस पर पूरी तरह रोक नहीं लगाई जा सकती। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वह नहीं चाहता कि मौजूदा स्थिति में कोई बदलाव हो। सरकार के जवाब तक यथास्थिति बनी रहेगी। इसके साथ ही अगले आदेश तक नई नियुक्तियां भी नहीं होगी।

सीजेआई संजीव खन्ना ने कहा कि सरकार 7 दिनों के भीतर जवाब दाखिल करे और उस पर प्रतिउत्तर अगले 5 दिनों के भीतर दाखिल किया जाना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि हम फैसला नहीं दे रहे। यह तो अंतरिम आदेश होगा।

पुलिस महानिरीक्षक रायपुर रेंज रायपुर द्वारा जिला रायपुर के पुलिस एवं अभियोजन अधिकारियों की ली गई बैठक

रायपुर (विश्व परिवार)। आज दिनांक 17.04.25 को पुलिस महानिरीक्षक रायपुर रेंज रायपुर श्री अमरेश मिश्रा द्वारा सिविल लाईन स्थित सी-4 भवन के सभाकक्ष में दो पालियों में बैठक आयोजित की गई। प्रथम पाली में उपमहानिरीक्षक/वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ. लाल उमेद सिंह, जिले के राजपत्रित अधिकारी, उप संचालक अभियोजन, शासकीय अभिभाषक, सहायक लोक अभियोजन अधिकारी एवं सहायक शासकीय अभिभाषक की बैठक ली गई।

उक्त बैठक में पुलिस महानिरीक्षक द्वारा पुलिस एवं अभियोजन अधिकारियों को बेहतर समन्वय स्थापित कर अपराधियों पर दोषसिद्धी का प्रतिशत बढ़ाये जाने हेतु निर्देशित किया गया। इस हेतु अभियोजन अधिकारियों को न्यायालय में प्रकरण प्रस्तुत करने के पूर्व प्रकरणों की नवीन अपराधिक कानूनों के तहत समीक्षा की जाकर कमियों को दूर करते हुये न्यायालय में अभियोग पत्र प्रस्तुत कराये जाने हेतु निर्देश दिये गये। साथ ही न्यायालय द्वारा दोष मुक्त किये गये प्रकरणों की समीक्षा की जाकर गुण दोषों के आधार पर सक्षम न्यायालय के समक्ष निश्चित समयावधि के भीतर अपील प्रस्तुत किये जाने हेतु निर्देशित किया गया। द्वितीय पाली की बैठक में रायपुर जिले के उपमहानिरीक्षक/वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सहित समस्त राजपत्रित अधिकारियों की बैठक ली गई। उक्त बैठक में नवीन अपराधिक कानून के तहत विवेचना कर प्रभावी कार्यवाही किये जाने हेतु निर्देशित किया गया।

स्वास्थ्य मंत्री ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर चिकित्सालय में चिकित्सा सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण और विस्तार के सम्बन्ध में दिए निर्देश

अस्पताल को आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित करने की दिशा में बड़ा कदम

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार जनकल्याण के संकल्प के साथ काम कर रही है, और हमारा उद्देश्य है कि प्रदेश के प्रत्येक नागरिक को सुलभ, सस्ती और उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जाएं। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल ने आज मंत्रालय नवा रायपुर में डॉ. भीमराव अम्बेडकर स्मृति चिकित्सालय, रायपुर में चिकित्सा सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण और विस्तार के सम्बन्ध में आयोजित बैठक में अधिकारियों को दिशानिर्देश देते हुए यह बात कही।

बैठक में स्वास्थ्य विभाग सहित संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में अस्पताल की संरचना और सेवाओं को आधुनिक और जनसुलभ बनाने के लिए विस्तृत विचार-विमर्श हुआ। बैठक में मंत्री श्री जायसवाल ने निर्देश दिए कि चिकित्सालय में आवश्यक सभी चिकित्सा उपकरण, तकनीकी संसाधन, और मरीजों की सुविधाओं की उपलब्धता को प्राथमिकता से सुनिश्चित किया जाए।

उन्होंने कहा कि अस्पताल में विस्तारीकरण और विद्युतीकरण के कार्यों में विभागीय समन्वय मजबूत किया जाए, ताकि निर्धारित समय-सीमा में गुणवत्तापूर्ण परिणाम प्राप्त हो सकें। बैठक में स्वास्थ्य विभाग के सचिव श्री अमित कटारिया, आयुक्त चिकित्सा शिक्षा सुश्री किरण कौशल, चिकित्सा महाविद्यालय रायपुर के डीन, अस्पताल प्रबंधन प्रतिनिधि एवं अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

ईडी ने वाड्रा को क्यों भेजा समन?

गुरुग्राम की 7.5 करोड़ की 'बैकडेटेड' रजिस्ट्री बनी वजह

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। इस ताजा अपडेट ने कांग्रेस नेता सोनिया गांधी के दामाद वाड्रा के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग जांच को तेज कर दिया और पिछले सप्ताह उन्हें तलब किया गया था।

मामले के विवरण से अवगत सूत्रों ने कहा कि स्काई लाइट हॉस्पिटैलिटी ने ओंकारेश्वर प्रॉपर्टीज को इस प्लॉट के लिए लगभग 15 करोड़ रुपये का भुगतान किया, जिसके बारे में संदेह है कि यह प्लॉट डीएलएफ से लिया गया था. हालांकि, स्काई लाइट हॉस्पिटैलिटी और ओंकारेश्वर प्रॉपर्टीज के बीच 7.5 करोड़ रुपये का बिक्री का काम भुगतान से पहले फरवरी 2008 में ही पूरा कर लिया गया था द्य आखिरकार इसे 2012 में 58 करोड़ रुपये में डीएलएफ को बेच दिया गया।

रॉबर्ट वाड्रा ने ईडी (ईडी) की पूछताछ को राजनीतिक साजिश बताया है। उन्होंने कहा कि सभी पुराने सवाल दोहराए जा रहे हैं, जिनका जवाब पहले ही दिया जा चुका है। वाड्रा ने साफ किया कि वह न तो डरने वाले हैं और न ही झुकने वाले। उन्होंने भाजपा सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि जब भी सरकार पर संकट आता है, उन्हें याद किया जाता है। -**कमल नयन नारंग**

विधायक भावना बोहरा द्वारा नगर पंचायत पांडातराई में विकास कार्यों की समीक्षा

जल आवर्धन घोटाला एवं गुणवत्ताहीन निर्माण कार्यों की जांच और पट्टा वितरण हेतु लाभार्थियों को चिन्हांकित करने दिए निर्देश

पंडरिया (विश्व परिवार)। पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने नगर पंचायत पांडातराई में चल रहे विकास कार्य, अधोसंरचना निर्माण एवं शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा की और उपस्थित अधिकारियों-कर्मचारियों को दिशा निर्देश दिए। इस दौरान भावना बोहरा ने पूर्ववर्ती सरकार के दौरान 3 करोड़ रुपए के जल आवर्धन घोटाला एवं गुणवत्ताहीन निर्माण कार्यों की जांच करने के लिए दिशा निर्देश दिए एवं पात्र हितग्राहियों को जमीन का पट्टा आवंटन, बिजली की व्यवस्था को दुरुस्त करने, प्रधानमंत्री आवास योजना, जमीन पर अवैध कब्जों को हटाने, वर्तमान में हो रहे कार्यों की गुणवत्ता एवं तय समय सीमा पर कार्य को पूर्ण करने, अधिकारियों-कर्मचारियों के कार्यालय में उपस्थिति, स्कूलों का उन्नयन और मॉडल स्कूल तथा विद्यालयों में सेनेटरी पैड की उपलब्धता सुनिश्चित करने जैसे प्रमुख विषयों पर विशेष ध्यान देते हुए उन्हें जल्द पूरा करने की बात कही।

भावना बोहरा ने कहा कि जनता की सुविधाओं का ध्यान रखना एवं केंद्र व राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ उन्हें दिलाना और विकास कार्यों को गुणवत्तापूर्ण एवं तय समय पर पूरा करना ही हमारा प्राथमिक उद्देश्य है। पांडातराई की जनता से हमने जो वादा किया है और नगर की समृद्धि के लिए हमने जो संकल्प किये हैं उसे पूरा करने के लिए हम कटिबद्ध हैं।

18 नए अग्निशमन वाहनों को मुख्यमंत्री साय ने दिखाई हरी झंडी

नागरिक सुरक्षा और आपदा प्रबंधन को सशक्त बनाने के लिए दृढ़संकल्पित है हमारी सरकार : विष्णुदेव साय

नवा रायपुर में अग्निशमन केंद्र सह आवासीय परिसर का किया लोकार्पण

अत्याधुनिक अग्निशमन वाहनों से राहत कार्यों को मिलेगी गति

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रदेश की नागरिक सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक मजबूत बनाने के लिए छत्तीसगढ़ सरकार लगातार प्रतिबद्ध प्रयास कर रही है। संसाधनों के आधुनिकीकरण, अग्निशमन सेवाओं को तकनीकी रूप से उन्नत करने और जवानों के प्रशिक्षण व मनोबल को प्राथमिकता देने की दिशा में ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। इसी कड़ी में मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने आज राजधानी रायपुर के माना कैंप स्थित नगर सेना केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थान परिसर में आयोजित कार्यक्रम में 18 नवीन अग्निशमन वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर उन्होंने सेक्टर-13, नवा रायपुर में नवनिर्मित अग्निशमन केंद्र सह आवासीय परिसर और माना में नवीन सेनानी कार्यालय का भी लोकार्पण किया। कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा सहित अनेक जनप्रतिनिधि व वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि ये अत्याधुनिक अग्निशमन वाहन प्रदेश की त्वरित आपातकालीन सेवाओं की क्षमता को नई गति देंगे। उन्होंने इसे नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करार दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि लोकार्पित भवनों के माध्यम से अग्निशमन तंत्र को मजबूती मिलेगी और हमारे जवानों की दक्षता में भी इजाफा होगा। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इन नए वाहनों से आगजनी की घटनाओं पर पहले से कहीं अधिक प्रभावी तरीके से और तेज़ी से काबू पाया जा सकेगा, जिससे जान-माल की रक्षा सुनिश्चित हो सकेगी। जीवन की रक्षा सबसे बड़ा कार्य है और इसे पूरी निष्ठा और तत्परता से निभाने वाले अग्निशमन कर्मी हमारे सच्चे नायक हैं, जिनकी सेवाओं को समाज हमेशा सम्मान की दृष्टि से देखता है।

आपातकालीन सेवा का डेमो और अत्याधुनिक उपकरणों की प्रदर्शनी- कार्यक्रम के दौरान राज्य आपदा मोचन बल और अग्निशमन राहत दल द्वारा आगजनी की घटना पर आधारित आपातकालीन सेवा का प्रदर्शन (डेमो) भी किया गया। मुख्यमंत्री श्री साय ने पूरे रेस्क्यू ऑपरेशन को गहरी रुचि और गंभीरता से देखा और जवानों की तत्परता व सजगता की भूरी-भूरी प्रशंसा की। साथ ही उन्होंने अग्निशमन सेवाओं में उपयोग होने वाले अत्याधुनिक उपकरणों की प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। विभागीय अधिकारियों ने उन्हें लुकास जैक, ग्लास ब्रेकर, एयर लिफ्टिंग बैग, पेलिकन टावर लाइट, डायमंड टिप, चेन सॉ, फायर जैल ब्लैकेट, फायर सूट और अंडर वॉटर कैमरा जैसे उपकरणों की कार्यप्रणाली और उपयोगिता की जानकारी दी। -शेष पेज 5 पर

नेपाल में चमके छत्तीसगढ़ के सितारे

कबीरधाम के चार होनहार युवाओं ने लहराया भारत का परचम

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले के चार होनहार खिलाड़ियों ने नेपाल के पोखरा शहर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय बॉडीबिल्डिंग एवं वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता में दमदार प्रदर्शन करते हुए छत्तीसगढ़ और देश का परचम लहराया है। अंतर्राष्ट्रीय संयुक्त भारतीय खेल संघ द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता में भारत, नेपाल, पाकिस्तान, भूटान, श्रीलंका, बांग्लादेश और म्यांमार समेत सात देशों के 300 से अधिक खिलाड़ियों ने भाग लिया। भारत की ओर से छत्तीसगढ़ के कवर्धा से सूरज राजपूत, दीपाली सोनी, अभिषेक तिवारी और अनुराग जांगड़े ने इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में भाग लेकर स्वर्ण पदक हासिल किए।

ज्ञात हो कि बॉडीबिल्डिंग स्पर्धा में कबीरधाम के सूरज राजपूत ने सात देशों के प्रतिभागियों को पीछे छोड़ते हुए इंटरनेशनल मिस्टर ओवरऑल का खिताब अपने नाम किया। सूरज पूर्व में मिस्टर छत्तीसगढ़, सीनियर नेशनल बॉडीबिल्डिंग चौंपियनशिप और पावरलिफ्टिंग में भी पदक जीत चुके हैं। वर्तमान में वे कवर्धा के भारत हेल्थ क्लब में कोच की भूमिका निभा रहे हैं और लगभग 50 युवाओं को नि:शुल्क प्रशिक्षण दे रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

ठगड़ा बांध का निरीक्षण करने पहुँची महापौर अलका बाघमार, अधिकारियों के साथ वर्षा जल संचयन हेतु बनाई गई रणनीति

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम सीमा क्षेत्र अंतर्गत आज ठगड़ा बांध निष्कारी तालाब में वर्षा जल संचयन की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए, नगर निगम दुर्ग की महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने आज मौके पर पहुंचकर निरीक्षण किया। यह निरीक्षण तालपुरी बांध में जल स्तर कम होने की स्थिति को देखते हुए किया गया, ताकि बरसात के समय ठगड़ा तालाब में जल संग्रहण कर भविष्य में पानी की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके।महापौर ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि बरसात के दौरान चैनल निर्माण कर जल प्रवाह को ठगड़ा तालाब तक लाया जाए, जिससे स्थानीय क्षेत्र में जल आपूर्ति सुदृढ़ हो सके।निरीक्षण के दौरान एमआईसी सदस्य देवनारायण चंद्राकर, एसडीओ श्री एन.शुक्ला, एवं इंजीनियर यशवंत लाल चंद्राकार उपस्थित रहे।यह योजना ठगड़ा क्षेत्रवासियों के लिए जल संरक्षण की दिशा में एक दूरदर्शी और सराहनीय कदम है। महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने तालाब और बांध में जल स्तर को बनाए रखने के लिए एक रणनीति बनाई है। इस रणनीति में, तालाबों का पुनर्जीवन और जल संरक्षण, और कटाव को रोकने के उपाय शामिल किया जाएगा।

दतान (खैरा) में रासेयो ने सुशासन रजत जयंती वर्ष 2025 पर चित्रकला प्रतियोगिता

लवन (विश्व परिवार)। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दतान (ख), बगबुडा में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंम सेवकों ने रजत जयंती सुशासन दिवस पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया संस्था के प्रभारी प्राचार्य एवं कार्यक्रम अधिकारी चन्द्र कुमार बंछोर भूतपूर्व सैनिक के उपस्थिति में राष्ट्रीय सेवा योजना के 36 स्वयंम सेवकों ने विद्यालय स्तर पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें स्वयंम सेवकों ने बहुत ही सुन्दर चित्र छत्तीसगढ़ के उपलब्धियों को सुशासन दिवस रजत जयंती वर्ष 2025 पुरे राज्य भर में मनाया जा रहा है प्रतियोगिता में प्रथम स्थान खुशबू वैष्णव, द्वितीय स्थान रिंकी निषाद, तृतीय स्थान मुस्कान साहू हासिल किया चित्र कला में संस्था के शिक्षक कैलाश साहू, शशिभूषण गायकवाड़, ओंकार ध्रुव भी उपस्थित थे।

विश्वसनीय हेल्थकेयर की पहचान बनता वी केयर सुपरस्पेशलिटी हॉस्पिटल की नौवीं वर्षगांठ

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ में मेडिकल क्षेत्र में अग्रिम पंक्ति में गिने जाने वाले तेलीबांधा रिंग रोड नंबर 1 में स्थित वी केयर सुपरस्पेशलिटी हॉस्पिटल ने सफलतापूर्वक नौ वर्ष पूर्ण कर दसवें वर्ष में प्रवेश किया। वी केयर हॉस्पिटल के प्रमुख डायरेक्टर डॉक्टर विवेक पांडे ने जानकारी देते हुए बताया कि उनके हॉस्पिटल ने छत्तीसगढ़ वासियों के असीम सहयोग व विश्वास से तथा हॉस्पिटल के सभी साथी डॉक्टर्स, नर्स व कर्मचारियों के सहयोग से सफलतापूर्वक 9 वर्ष पूर्ण कर दसवें वर्ष में प्रवेश किया है। इस अपार स्नेह के लिए उन्होंने समस्त छत्तीसगढ़ वासियों का आभार व्यक्त किया।

उन्होंने आगे जानकारी देते हुए बताया कि विगत 9 वर्षों में वी केयर हॉस्पिटल ने लोगों का विश्वास हासिल किया है, जो अपने आप में गौरवपूर्ण उपलब्धि है। उपलब्धियों का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि विगत के वर्षों में 50 हजार से अधिक [illegible] 20 हजार से अधिक सर्जरी 25 हजार से अधिक [illegible] एवं अन्य जटिल सर्जरी सफलतापूर्वक पूर्ण की गई।

100 बिस्तरों का अस्पताल पूर्णत: आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है जिसमें एडवांस ऑर्थोपेडिक ट्रॉमा विभाग, घुटने एवं कंधे की ऑर्थोस्कोपी, ज्वाइंट रिप्लेसमेंट सेंटर, न्यूरो सर्जरी, क्रिटिकल केयर यूनिट, स्त्री एवं प्रसूति रोग, जनरल सर्जरी, मिनिमल एक्सेस सर्जरी विभाग, गैस्ट्रोएंटेरोलॉजी एवं एंडोस्कोपी यूनिट, मेडिसिन एवं डायलिसिस यूनिट, श्वास एवं छाती रोग, थोरेसिक एवं वास्कुलर सर्जरी, पीडियाट्रिक विभाग, यूरोलॉजी विभाग, कान नाक एवं गला रोग विभाग, कैंसर केयर यूनिट, मनोरोग विभाग, प्लास्टिक सर्जरी विभाग, आदि विभागो की सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही है। इसके अलावा यहां 24 घंटे आपात सुविधा मॉड्यूलर आईसीयू, 16 स्लाइस सीटी स्कैन, डिजिटल एक्सरे, प्रत्येक बेड पर ऑक्सीजन सुविधा एवं सोनोग्राफी, ईसीजी एवं इकोकार्डियोग्राफी, हाईटेक पैथोलॉजी लैब, 24 घंटे एंबुलेंस, मेडिकल शॉप एवं कैंटीन सुविधाएं उपलब्ध है।

उपरोक्त सभी विभागों में अनुभवी व दक्ष विशेषज्ञ अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। सुविधाओं का विस्तार करते हुए नए विभाग की सेवाएं भी आरंभ की गई है।

इनमें न्यूरोलॉजी एवं स्पाइन केयर, यूरोलॉजी एवं स्टोन क्लीनिक भी आरंभ किया गया है। इसमें बहुत ही गुणी विशेषज्ञ अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

भविष्य में इलाज के लिए लोगों को दूसरे राज्य ना जाना पड़े, मरीजों को संपूर्ण इलाज यहां पर ही उपलब्ध कराया जा सके ऐसा प्रयत्न किया जा रहा है।

साथ ही आम लोगों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर निशुल्क चिकित्सा परामर्श एवं ओपीडी का आयोजन किया जाता है जिससे अधिक से अधिक संख्या में लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हो सके। अधिक जानकारी हेतु हॉस्पिटल में संपर्क किया जा सकता है।

बिलासपुर और काचेगुडा के मध्य 08 फेरों के लिए सुपर फास्ट साप्ताहिक समर स्पेशल ट्रेन की सुविधा

रायपुर/बिलासपुर (विश्व परिवार)। ग्रीष्मकालीन छुट्टियों के दौरान बिलासपुर एवं काचेगुडा के मध्य यात्रा करने वाले रेल यात्रियों की सुविधा के लिए रेल प्रशासन के द्वारा एक सुपर फास्ट साप्ताहिक समर स्पेशल ट्रेन की सुविधा 08 फेरों के लिए चलाई जा रही है।

यह ट्रेन बिलासपुर से काचेगुडा के लिए गाड़ी संख्या 08263 के साथ दिनांक 12, 19, 26 मई एवं 02 जून 2025 को प्रत्येक सोमवार को चलेगी। इसी प्रकार विपरीत दिशा में भी काचेगुडा से बिलासपुर के लिए गाड़ी संख्या 08264 के साथ दिनांक 13, 20, 27 मई एवं 03 जून 2025 को प्रत्येक मंगलवार को चलेगी। यह ट्रेन 01 एसी - 1, 02 एसी-1, 03 एसी- 2, 01 एसी कुर्सीयान, 09 स्लीपर, 02 एसएलआरडी एवं 06 जनरल कोच सहित 22 कोचों के साथ चलेगी।

इस गाड़ी की विस्तृत समय-सारणी इस प्रकार है- दिनाँक 12, 19, 26 मई एवं 02 जून 2025 प्रत्येक सोमवार को बिलासपुर से रवाना होने वाली गाड़ी संख्या 08263 बिलासपुर-काचेगुडा समर स्पेशल साप्ताहिक एक्सप्रेस बिलासपुर से 10.05 बजे रवाना होकर भाठापारा आगमन 10.43 बजे प्रस्थान 10.45 बजे, रायपुर आगमन 11.40 बजे प्रस्थान 11.45 बजे, दुर्ग आगमन 12.40 बजे प्रस्थान 12.45 बजे, राजनांदगांव आगमन 13.09 बजे प्रस्थान 13.11 बजे, डोंगरगढ़ आगमन 13.34 बजे प्रस्थान 13.36 बजे, गोंदिया आगमन 14.35 बजे प्रस्थान 14.45 बजे, वडसा आगमन 15.58 बजे प्रस्थान 16.00 बजे, बल्हारशाह आगमन 18.45 बजे प्रस्थान 18.55 बजे, सिरपुर कागजनगर आगमन 19.43 बजे प्रस्थान 19.45 बजे, मंचिर्याल आगमन 20.23 बजे प्रस्थान 20.25 बजे, रामगुंडम आगमन 20.48 बजे प्रस्थान 20.50 बजे, काजीपेट आगमन 22.03 बजे प्रस्थान 22.05 बजे, चरलापल्ली आगमन 23.50 बजे प्रस्थान 23.55 बजे, मलकाजगिरी आगमन 00.38 बजे प्रस्थान 00.40 बजे एवं काचेगुडा 01.30 बजे पहुंचेगी। दिनाँक 13, 20, 27 मई एवं 03 जून 2025 प्रत्येक मंगलवार को काचेगुडा से रवाना होने वाली गाड़ी संख्या 08264 काचेगुडा-बिलासपुर समर स्पेशल साप्ताहिक एक्सप्रेस जचेगुडा से 04.30 बजे रवाना होकर मलकाजगिरी आगमन 04.43 बजे प्रस्थान 04.45 बजे, चरलापल्ली आगमन 05.28 बजे प्रस्थान 05.30 बजे, काजीपेट आगमन 07.08 बजे प्रस्थान 07.10 बजे, रामगुंडम आगमन 08.18 बजे प्रस्थान 08.20 बजे, मंचिर्याल आगमन 08.38 बजे प्रस्थान 08.40 बजे, सिरपुर कागजनगर आगमन 09.58 बजे प्रस्थान 10.00 बजे, बल्हारशाह आगमन 11.45 बजे प्रस्थान 11.55 बजे, वडसा आगमन 14.30 बजे प्रस्थान 14.35 बजे, गोंदिया आगमन 16.15 बजे प्रस्थान 16.25 बजे, डोंगरगढ़ आगमन 17.28 बजे प्रस्थान 17.30 बजे, राजनांदगांव आगमन 18.05 बजे प्रस्थान 18.07 बजे, दुर्ग आगमन 18.50 बजे प्रस्थान 18.55 बजे, रायपुर आगमन 19.30 बजे प्रस्थान 19.35 बजे भाठापारा आगमन 20.25 बजे प्रस्थान 20.27 बजे एवं बिलासपुर 21.35 बजे पहुचेगी।

बढ़ती गर्मी को देखते हुए अब संपत्ति कर सुबह 8 बजे से जमा कर सकते हैं निगम काउंटर पर

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। बढ़ती गर्मी को देखते हुए नगर निगम भिलाई के कैश काउंटर आज सुबह 8 बजे से संचालित हो रहे हैं। छुट्टी के दिन भी संपत्ति कर, भू-भाटक, जलकर इत्यादि शुल्क जमा कर सकते हैं। निगम भिलाई का संपत्तिकर काउंटर सुबह 8 से साम 5 बजे तक खुले रहेगे। वित्तीय वर्ष 2025-26 के संपत्तिकर जमा करने वालो को 6.25 प्रतिशत का छूट मिल रहा है। इसके साथ ही शासन द्वारा वर्ष 2024-25 के संपत्तिकरदाताओं को माह अप्रेल तक अपने बकाया संपत्तिकर जमा करने विशेष राहत प्रदान किया है।

नगरी निकाय चुनाव, पंचायत चुनाव, लोकसभा चुनाव आदि के कारण कार्यालयीन समय कम मिला है। कर्मचारियो की डयूटी ज्यादातर शासकीय कार्यो में लगी रही, लोग संपत्ति कर नहीं जमा कर पाए थे। उनके सुविधा के लिए शासन द्वारा अप्रैल माह तक के लिए वर्ष 2024-25 के संपत्ति कर पर 18 प्रतिशत अधिभार और 1000 पेनल्टी शुल्क नहीं

लेने का निर्णय लिया गया है, इसी के परिपालन में कार्य किया जा रहा है। नागरिको की मांग थी कि गर्मी बहुत पड़ रही है और छुटटी के दिनों में बहुत सारे काम रहते है। इसको ध्यान में रखते हुए निगम भिलाई द्वारा संपत्तिकर जमा करने के लिए सुबह संपत्तिकर का काउंटर खोल दे, तो हमे बहुत सुविधा मिलेगी। जिससे हम सुबह-सुबह संपत्तिकर जमा करके घर के अन्य काम भी कर सके।

नागरिको के मांग पर आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय ने मुख्य कार्यालय एवं जोन कार्यालय के अधिकारियों एवं संबंधित एजेंसी को निर्देशित किए है कि संपत्तिकर के काउंटर सुबह 8 से साम 5 बजे तक खुला रखें। जिससे नागरिको को घूप में, घर से बाहर निकलने एवं गर्मी से राहत मिलेगी। इसके साथ ही संपत्तिकर वसूली एजेंसी के कर्मचारी भी डोर-टू-डोर नागरिको के घर पर जाकर संपत्तिकर जमा करने में सहयोग कर रहे है। नागरिक घर पर बैठे-बैठे अपना संपत्तिकर एजेंसी के कर्मचारी को देकर उनसे जमा राशि का रसीद भी प्राप्त कर सकते है।

अग्निवीर के लिए ऑलाईन आवेदन 25 अप्रैल 2025 तक

रायपुर (विश्व परिवार)। भारतीय थल सेना द्वारा अग्निवीर की भर्ती के लिए अधिसूचना जारी की जा चुकी है। अधिसूचना की विस्तृत जानकारी www.joinindianarmy.nic.in पर उपलब्ध है। अग्निवीर की भर्ती जनरल, तकनीकी, कर्लक, ट्रेडमेन (8वीं एवं 10वीं) महिला सैन्य पुलिस और रेगुलर कैडर मर्ती धर्म गुरू, नर्सिंग सहयोगी और सिपाही फार्मा के पदों के लिए जारी की गई है। सेना में भर्ती के लिए अब ऑनलाईन आवेदन की प्रक्रिया 25 अप्रैल 2025 तक बढ़ा दी गयी है। आवेदकों को यदि ऑनलाईन आवेदन करने में किसी भी प्रकार की समस्या आ रही हो तो वे सेना भर्ती कार्यालय के दूरमाष क्रमांक 0771-2965212 अथवा 0771-2965214 पर संपर्क कर सकते है। भारतीय सेना द्वारा यह भी अवगत कराया जाता है कि सेना में चयन निष्पक्ष, पारदर्शी एवं केवल योग्यता के आधार पर ही किया जाता है। इसलिए आवेदन भर्ती के लिए किसी भी अनाधिकृत व्यक्तियों के झांसे में ना आये।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./19888/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2025
रायपुर, दिनांक 17-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19888
वार्ड का नाम-45-स्वामी विवेकानंद सदर बाजार वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 45 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR739E00415 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती LAXMAN DAS पिता/पति, श्री/श्रीमती RELUMAL SHADIJA के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती 1. कमल शादीजा पिता स्व. लक्ष्मण शादीजा 2. कुनाल शादीजा पिता स्व. होलाराम शादीजा पिता/पति, श्री/श्रीमती N/A ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ शपथ पत्र, टैक्स रसीद, मलमा बिक्रीनामा, परिचय पत्र व अन्य दस्तावेज/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार जशपुर, जिला जशपुर (छ.ग.)
रा.प्र.क्र. / 202504031400032/अ-21 (5)/2024-25
ग्राम जशपुर, प0ह0नं0 07, तहसील जशपुर

इश्तिहार

एतद् द्वारा सर्व संबंधित ग्रामीण **जनता ग्राम जशपुर, प.ह.नं. 07, तहसील जशपुर** के समस्त ग्रामवासियों को सूचित किया जाता है कि आवेदक **मो0 रिजवान पिता ऐनुल हक निवासी ग्राम जशपुर, तहसील व जिला जशपुर (छ.ग.)** के द्वारा उपस्थित होकर **ग्राम जशुपर, प.ह.नं. 07,** तहसील जशपुर स्थित अपने स्वामित्व की भूमि **खसरा नं0 37/7 शामिल 38/1 कुल रकबा** 0.0320 हे. व्यपवर्तित भूमि को **क्रेता नेहा ताम्रकार पिता विकास ताम्रकार, जाति ताम्रकार, निवासी ग्राम नवाटोली जशपुर तहसील जशपुर, जिला जशपुर (छ.ग.)** को विक्रय करने की अनुमति हेतु कलेक्टर महोदय जशपुर के समक्ष आवेदन पत्र पेश करने पर अनुविभागीय अधिकारी (रा.) जशपुर के माध्यम से प्रकरण जॉच एवं प्रतिवेदन हेतु प्राप्त हुआ है।

उक्त मामले की सुनवाई **दिनांक 25.04.2025** को इस न्यायालय में होना नियत किया गया है। इस संबंध में यदि किसी व्यक्ति को किसी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो वे अपना लिखित आपत्ति स्वत: अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से उपस्थित होकर प्रस्तुत कर सकते है। नियत तिथि के पश्चात प्राप्त किसी भी आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज **दिनांक** 11.04.2025 को मेरे हसताक्षर एवं न्यायालय के मुद्रा से जारी किया जावे।

मुहर

तहसीलदार जशपुर,
जिला जशपुर (छ.ग.)

कार्यालय राजस्व निरीक्षक रायपुर-11 टिकरापारा, तहसील व जिला रायपुर
सीमांकन के संबंध में आम सूचना
दिनांक 15/04/2025/

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक/आवेदिका **जगजीत सिंह अरोरा पिता श्री ईशर सिंह निवासी एच.आई.जी. - 26 सेक्टर 01 शंकर नगर रायपुर** द्वारा आवेदित **ग्राम पुरेना प.ह.नं. 67** राजस्व निरीक्षक मंडल रायपुर-05 (भनपुरी) स्थित भूमि खसरा नंबर **408/3, 406/1, 408/2. रकबा क्रमश: 0.1410 हे 0.0020 हे. 0.0610 हे.** हेक्टेयर का सीमांकन न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार रायपुर के ज्ञापन **क्र. 202502114900027** वाचक/अति. तह0 / वर्ष 2025 रायपुर के आदेश **दिनांक 01/04/2025** / के परिपालन में **दिनांक 22/04/2025** को समय 12 बजे पश्चात किया जाना है। अत: उक्त भूमि के सीमांकन में जिस किसी व्यक्ति या संस्था को कोई दावा या आपत्ति हो वह उक्त दिनांक / समय तक पटवारी हल्का नंबर 67 के .... स्थित कार्यालय में दस्तावेजों सहित स्वयं अथवा अपने वैध अभिभाषक के माध्यम से उपस्थित होकर प्रस्तुत कर सकते हैं। बाद के किसी दावा या आपत्ति पर मेरे द्वारा विचार किया जाना संभव नहीं होगा। अत: सूचना जानें।

राजस्व निरीक्षक
रायपुर -1 (टिकरापारा)

कार्यालय राजस्व निरीक्षक रायपुर-11 टिकरापारा, तहसील व जिला रायपुर
सीमांकन के संबंध में आम सूचना
दिनांक 15/04/2025/

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक/आवेदिका **जगजीत सिंह अरोरा पिता श्री ईशर सिंह निवासी एच.आई.जी. - 26 सेक्टर 01 शंकर नगर रायपुर** द्वारा आवेदित **ग्राम पुरेना प.ह.नं. 67** राजस्व निरीक्षक मंडल रायपुर-05 (भनपुरी) स्थित भूमि खसरा नंबर **409/6, 406/2 रकबा क्रमश: 0.0970 हे., 0.0640 हे.** हेक्टेयर का सीमांकन न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार रायपुर के ज्ञापन **क्र. 2025024114900009** वाचक/अति. तह0 / वर्ष 2025 आदेश **दिनांक 01/01/2025** / रायपुर के परिपालन में **दिनांक 22/04/2025** को समय 12 बजे पश्चात किया जाना है। अत: उक्त भूमि के सीमांकन में जिस किसी व्यक्ति या संस्था को कोई दावा या आपत्ति हो वह उक्त दिनांक / समय तक पटवारी हल्का नंबर 67 के .... स्थित कार्यालय में दस्तावेजों सहित स्वयं अथवा अपने वैध अभिभाषक के माध्यम से उपस्थित होकर प्रस्तुत कर सकते हैं। बाद के किसी दावा या आपत्ति पर मेरे द्वारा विचार किया जाना संभव नहीं होगा। अत: सूचना जानें।

राजस्व निरीक्षक
रायपुर -1 (टिकरापारा)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./19692/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2025
रायपुर, दिनांक 16-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19692
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 30 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR331E00275 जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती SHVETA SHUKLA पिता/पति श्री/श्रीमती W/O SANJAY SHUKLA के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती रेखा त्रिपाठी** पिता/पति श्री/श्रीमती **पति - श्री चंद्रभूषण त्रिपाठी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./19690/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2025
रायपुर, दिनांक 16-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19690
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 30 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR331E00005 जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती KIRTI LINO पिता/पति श्री/श्रीमती W/O LINO K. ABRAHAM के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती VIKAS MISHRA पिता/पति श्री/श्रीमती S/O JATASHANKAR MISHRA ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./19433/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2025
रायपुर, दिनांक 16-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19433
वार्ड का नाम-34- लाल बहादुर शास्त्री वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 34 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR333A00058 जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती PUSHPA PATLE पिता/पति श्री/श्रीमती W/O LATE. GOVARDHAN के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती शकुन्तला डोंगरे** पिता/पति श्री/श्रीमती **पति - श्री श्याम डोंगरे** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 964 दिनांक 17-04-2025
वार्ड का नाम- मां परमेश्वरी वार्ड
वार्ड क्र. 25 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 25 मांग **पंजी क्र. 309 युआईडी 24845** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **पारस सेन / नाथूराम सेन** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **सुनील कुमार देवांगन / पुरूषोत्तम देवांगन** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **17-05-2025** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 965 दिनांक 17-04-2025
वार्ड का नाम- मां परमेश्वरी वार्ड
वार्ड क्र. 25 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 25 मांग **पंजी क्र. 308 युआईडी 24844** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **सुनील कुमार देवांगन/पुरूषोत्तम देवांगन** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **सुनील कुमार देवांगन / पुरूषोत्तम देवांगन** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **17-05-2025** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 966 दिनांक 17-04-2025
वार्ड का नाम- डॉ. राधाकृष्णन वार्ड
वार्ड क्र. 22 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 22 मांग **पंजी क्र. 116 युआईडी 23270** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **लिलकराम ध्रुव / बरातुराम ध्रुव** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **उर्मिला ध्रुव / स्व. सीता राम ध्रुव** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **17-05-2025** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 967 दिनांक 17-04-2025
वार्ड का नाम- छत्रपति शिवाजी वार्ड
वार्ड क्र. 15 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 15 मांग **पंजी क्र. 381 युआईडी 19112** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **गांधी साहू / बूधा साहू** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **पुनीत राम साहू / गांधीराम साहू** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **17-05-2025** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि **छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा नरदहा, रायपुर** में निर्मित **सामान्य आवास योजनांतर्गत ई.डब्ल्यू.एस. फ्लैट कं.-10/11 (द्वितीय तल), श्रीमती सीमा वर्मा पति श्री संतोष वर्मा,** के नाम पर एकमुश्त आधार पर आबंटित है। आबंटी द्वारा समस्त राशि जमा कर उक्त फ्लैट कि सेलडीड **दिनांक 05.02.2021** को पंजीकृत करने उपरांत इस कार्यालय का **पत्र क्रमांक 543** दिनांक **17.02.2021** द्वारा आधिपत्य आदेश प्राप्त कर लिया गया है। वर्तमान में आबंटी **श्रीमती सीमा वर्मा पति श्री संतोष वर्मा, पता ई.डब्ल्यू.एस. क्रमांक-10/11, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, नरदहा, रायपुर (छ.ग.)** पिन-493111 के द्वारा उक्त फ्लैट को **क्रेता श्री रूपेश यादव पिता श्री जीतू यादव, निवासी वार्ड नं.-05, पठारी मुडा, सिरींपथारी मुडा, महासमुंद (छ.ग.) पिन-493449** को विक्रय करने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त फ्लैट के विक्रय के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय बैंक अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो सूचना प्रकाशन दिनांक के 15 दिवस के अंदर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./20005/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2025
रायपुर, दिनांक 17-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 20005
वार्ड का नाम-45-स्वामी विवेकानंद सदर बाजार वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 45 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR757B00513 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती VIMALA DEVI पिता/पति, श्री/श्रीमती PUKHRAJ KANUGA के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती 1 **सुरेश कानूगा** 2 **प्रवीण कानूगा** पिता/पति, श्री/श्रीमती **दोनो के पिता पुखराज कानूगा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, टैक्स रसीद, मलमा बिक्रीनामा, परिचय पत्र व अन्य दस्तावेज**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./.20006/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2025
रायपुर, दिनांक 17-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. .20006
वार्ड का नाम-45-स्वामी विवेकानंद सदर बाजार वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 45 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR739E00481 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती LAXMAN DAS H.U.F. LAXMAN DAS SHADIJA पिता/पति, श्री/श्रीमती RELUMALU SHADIJA के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती 1. **कुनाल शादीजा पिता स्व. होलाराम शादीजा** 2. **कमल शादीजा पिता स्व. लक्ष्मण शादीज** पिता/पति, श्री/श्रीमती N/A ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, टैक्स रसीद, मलमा बिक्रीनामा, परिचय पत्र व अन्य दस्तावेज**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./20007/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2025
रायपुर, दिनांक 17-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 20007
वार्ड का नाम-45-स्वामी विवेकानंद सदर बाजार वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 45 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR739E00460 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती 1. YASHWANT RAO, 2. BHARASKAR RAO, 3. NARESH RAO, 4. SURESH RAO, 5. ANNU BAI DORLE, 6. ANJU DHURVE, 7. SAROJ BAI JOUNJAR पिता/पति, श्री/श्रीमती LATE. NAMADEV RAGHATATE के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती 1. **सोनल कोटडिया पति प्रवर कोटडिया** 2. **प्रवर कोटडिया पिता शैलेन्द्र कोटडिया** पिता/पति, श्री/श्रीमती N/A ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

संयुक्त टीम ने दिनों में रोके 5 बाल विवाह

कलेक्टर ने जिले वासियों से बाल विवाह से बेटियों को सुरक्षित रखने के लिए की विनम्र अपील

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)- जिला के कलेक्टर एस. जयवर्धन के निर्देश पर जिला कार्यक्रम अधिकारी रमेश साहू के मार्गदर्शन में जिला बाल संरक्षण अधिकारी मनोज जायसवाल के नेतृत्व में महिला एवं बाल विकास विभाग के साथ समस्त विभाग सक्रिय होकर बाल विवाह रोकथाम के लिये सक्रिय रहे है। विवाह के इस शुभ मुहर्त में होने वाले विवाहों की आड़ में बाल विवाह करने की कोशिशो पर विभाग त्वरित कार्रवाई कर रहा है।

वर्तमान में तीन दिनों में प्रशासनिक टीम ने जिला बाल संरक्षण अधिकारी मनोज जायसवाल के नेतृत्व में 14 अप्रैल को 1 बाल विवाह 15 अप्रैल को 1 बाल विवाह एवं 16 अप्रैल को 2 बाल विवाह इस तरह कुल 5 बाल विवाह रोके गये हैं। जिसमें प्रतापपुर विकास खण्ड में 1, विकास खण्ड ओड़गी में 3 विकास खण्ड भैयाथान में 1 बाल विवाह इस तरह कुल 5 बाल विवाह रोके गये हैं।

बाल विवाह रोकने गये टीमों को कई प्रकार के कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। ओड़गी विकासखंड के गांव में बाल विवाह की सूचना प्राप्त हुआ जिसमें संयुक्त टीम द्वारा तत्काल मौके पर पहुंच कर जांच की गई बालिका नाबालिक थी परिवार वालों द्वारा नाबालिग जानते हुए भी उसकी शादी करायी जा रही थी, परिजनों को यह बाल विवाह नही करने एवं बाल विवाह होने पर उसके दुष्प्रभाव के बारे में बताया गया काफी समझाईस एवं जददोजहद के बाद बाल विवाह नही करने पर परिवार वाले राजी हो गये, पूर्व मे एक दिन पहले ही उसी गांव में बाल विवाह की सूचना पर उसको समझाइश दिया गया था संयुक्त टीम द्वारा जाकर उनका फालोअप किया

गया। बालिका का विवाह नहीं कराया जाना पाया गया।

प्रतापपुर के प्रकरण में बाल विवाह रोकने टीम पहुंची तो बालक की उम्र 20 वर्ष एवं बालिका की उम्र 27 वर्ष के साथ दोनों का विवाह की तैयारी लगभग पूर्ण हो गयी थी, बाल विवाह की सूचना प्राप्त होने पर संयुक्त टीम द्वारा जिला बाल संरक्षण अधिकारी एवं अनुविभागीय अधिकारी (रा0) प्रतापपुर एवं नायब तहसीलदार तथा थाना प्रभारी प्रतापपुर के साथ तत्काल मौके पर पहुंच कर जांच किया गया। जिसमें पाया गया कि बालक का उम्र विवाह योग्य नहीं हुआ है बालक का विवाह बालक के जिद के कारण 08 वर्ष बडी लडकी से घर वालो द्वारा कराया जा रहा था। बालक एवं परिवार वालो को बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम की जानकारी दी गई कि अगर किसी बालक की शादी 21 वर्ष से पहले होती है तो वह बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 के तहत कार्यवाही की जा सकेगी जिसमें दो लाख रूपये की जुर्माना एवं 01 वर्ष का सजा का प्रावधान है। बाल विवाह में सम्मिलित सभी बैंड बाजा वाले मेहमान टेंट वाले खाना बनाने वाले एवं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित सभी दोषी होते है। समझाइश पश्चात बालक एवं परिवार वालो द्वारा इस विवाह को स्थगित कर दिया गया।

भैयाथान के ग्राम सिरसी में विगत रात 9:30 बजे बालक एवं परिजनों को संयुक्त टीम द्वारा समझाइश दिया गया पूर्व में आ.बा. कार्यकर्ता एवं पर्यवेक्षक द्वारा समझाइश दिया गया था

जिसमें संयुक्त टीम मौके पर जाकर विस्तृत समझाइश दिया गया। परिजनों द्वारा बाल विवाह स्थगित करने का आश्वासन दिया गया, इस विषय में पंचनामा एवं कथन लिया गया।

अपील- जिला कलेक्टर श्री एस. जयवर्धन ने जिले वासियों से विनम्र अपील है कि बेटियों को सुरक्षित रखने के लिए उन्हें बाल विवाह से बचाऐं। बालिका के स्वास्थ्य शिक्षा एवं समग्र विकास में यदि कोई बाधा है तो वह बाल विवाह है। जिले को बाल विवाह मुक्त कराने हेतु पुरा प्रशासन लगा है। बाल विवाह होने पर वैद्यानिक कार्यवाही की जायेगी उससे अच्छा है कि हम अपनी बच्चियों के उम्र होने पर अर्थात 18 वर्ष पूर्ण होने पर एवं लड़को का विवाह 21 वर्ष पूर्ण होने पर ही विवाह करें।

बाल विवाह रोकवाने वालो में श्री मनोज जायसवाल जिला बाल संरक्षण अधिकारी, श्रीमती ललिता भगत अनुविभागीय अधिकारी राजस्व प्रतापपुर, तहसीलदार प्रतापपुर, श्री जागेश्वर साहू परियोजना अधिकारी ओडगी, मो. ईमरान अख्तर परियोजना अधिकारी भैयाथान, श्रीमती संतोषी सिंह प्रभारी परियोजना अधिकारी प्रतापपुर, थाना प्रभारी श्री लक्ष्मण सिंह प्रतापपुर, पर्यवेक्षक ज्योति राज, शीला वर्मा, सीमा, प्रियांशि सिंघल, विभा साहू, जिला बाल संरक्षण अधिकारी से काउंसलर जैनेन्द्र दुबे, आउट रिच वर्कर पवन धीवर, चाईल्ड लाईन से शीतल सिंह, नंन्दनी खटिक, चौकी बसदेई से प्रधान आरक्षक राम प्रसाद सांडिल्य, शिव कुमार सारथी, आरक्षक अशोक कुमार सिंह, महिला प्रधान आरक्षक अल्का टोप्पो एवं सरपचं बसंत लाल , आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सक्रिय रहे।

संक्षिप्त समाचार

सूरजपुर पुलिस ने 50 बोरी चोरी का कोयला व 13 मोटर सायकल किया जप्त

सूरजपुर (ब्यूरो दैनिक विश्व परिवार)-एसएसपी प्रशांत कुमार ठाकुर ने अवैध कारोबार पर अंकुश लगाने के सख्त निर्देश थाना-चौकी प्रभारियों को दिए है। इसी क्रम में दिनांक 16 अप्रैल को थाना सूरजपुर पुलिस को मुखबीर से सूचना मिली कि गायत्री खदान से कोयला चोरी कर मोटर सायकल में परिवहन का प्रयास किया जा रहा है। सूचना पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची जहां लावारिश हालत में मोटर सायकल तथा जमीन में कोयला से भरी बोरी पाये जाने पर 50 बोरी कोयला तथा 13 नग मोटर सायकल जप्त कर धारा 106 बीएनएसएस के तहत कार्यवाही की गई। मौके से जप्त मोटर सायकलों के वाहन स्वामी की पतासाजी की जा रही है ताकि उनके विरूद्ध भी कार्यवाही जा सके। इस कार्यवाही में थाना प्रभारी विमलेश दुबे की टीम सक्रिय रही।

म्युल अकाउंट से ठगी करने वाले तीन युवा ठगो को विश्रामपुर पुलिस ने किया गिरफ्तार

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्वा परिवार)-विश्रामपुर पुलिस को सूरजपुर जिला केअतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कार्यालय से म्यूल एकाउंट से संबधित अपराध पंजीबद्ध करने हेतु जांच प्रतिवेदन मय दस्तावेज के प्राप्त मिला था जिस पर पुलिस ने अज्ञात अपराधियों के खिलाफ धारा 413, 420,120 (बी) IPC/BNS की धारा 317(4), 318(2), 61(2) (.) का अपराध धंटित होना पायें जाने पर अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया था। अपराध विवेचना दौरान म्यूल एकाउण्ट खाता धारक चन्द्र देव पैकरा से पूछताछ करने पर बताया कि मेरा एक्सीस बैंक में खाता जिसे मैं अपने साथी कमलेश्वर सिंह के कहने पर खोलकर तीन सौ रुपए प्रतिमाह के दर पर किराया पर दिया था जिसके एवज में मुझे कमलेश्वर सिंह से 1500 रू0 प्राप्त हुआ था। चन्द्रदेव पैकरा के साथी कमलेश्वर सिंह से पूछताछ करने पर बताया कि वह चन्द्र देव पैकरों का खाता खुलवाकर उसका खाता एवं अन्य 1 अपने पड़ोसी रूपन पैकरा एवं स्वयं का 8 बैंकों का खाता को किराया पर देना स्वीकार किया तथा प्रत्येक करेन्ट एकाउण्ट के बदने 2 हजार रूपए प्रतिमाह एवं सेविंग एकाउण्ट के बदले 1000 रु. प्रतिमाह अपने उपर के साथी से प्राप्त करना बताते हुए किराया के खाता को ऑन लाईन ठगी कर पैसा ट्रान्सफर करने के लिए उपलब्ध कराता था। सभी से पूछताछ कर मेमोरण्डम कथन तैयार किया तथा मेमोरण्डम कथन में बताए घटना में प्रयुक्त म्यूल एकाउण्ट से संबंधीत पासबुक एटीएम व चेकबुक को जप्त कर कब्जे पुलिस लिया ।आरोपियों दद्वारा जुर्म घटित करने पर विधीवत् गिरफ्तार कर न्यायालय भेजा गया। कार्यवाही में निरीक्षक थाना प्रभारी अलरिक लकड़ा, सउनि , अविनाश सिंह, आर0 नवीन सिंह, सोहर लाल पावले, आर. जय प्रकाश यादव, असिफ अख्तर, योगेश्वर पैकरा, मनोज शर्मा, कृष्णा सिंह, प्यारे लाल राजवाडे सक्रीय रहे ।आरोपागण क्रमश: चन्द्रदेव पैकरा पिता लालबरन पैकरा उम्र 24 वर्ष साकिन सोनपुर (सु) बोदेलीपारा चैकी करंजी थाना बिश्रामपुर,कमलेश्वर सिंह पिता बसंत सिंह उम्र 29 वर्ष साकिन सोनपुर (सु) बोदेलीपारा चैकी करंजी थाना विश्रामपुर एवं रूपन पैकरा पिता चुन्नु लाल पैकरा उम्र 25 वर्ष साकिन सोनपु (सु) बोदेलीपारा चैकी करंजौ थाना विश्रामपुर जिला सूरजपुर छ.ग को गिरफ्तार कर पूछताछ की जा रही है।

जयनगर में भाजपा कार्यकर्ताओं ने वन विकास निगम अध्यक्ष राम सेवक पैकरा का फलों से तौल कर गर्मजोशी से किया स्वागत

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)- आज छत्तीसगढ़ राज्य वन विकास निगम बोर्ड के अध्यक्ष रामसेवक पैकरा का प्रथम मंडल शिवनंदनपुर के आगमन पर ग्राम पंचायत जयनगर में भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य अजय गोयल के नेतृत्व में गर्मजोशी से स्वागत किया गया।वन विकास निगम बोर्ड के अध्यक्ष राम सेवक पैकरा को फल से तोल कर फूल माला पहनकर स्वागत किया गया उनके साथ प्रेम नगर विधायक

भूलन सिंह मरावी, भाजपा जिला अध्यक्ष मुरली मनोहर सोनी उपस्थित थे, इस कार्यक्रम में भाजपा मंडल शिवनंदनपुर के पूर्व मंडल अध्यक्ष देवधन राम बिनझिया ,भाजपा मंडल महामंत्री संदीप सरकार ,युवा मोर्चा मंडल अध्यक्ष पवन बर्मन, जयनगर के बीडीसी धनेश्वरी जयनगर के सरपंच श्रीमती राधाबाई ,बलराम सील ,कृष्ण पाल बिंझिया, रतन गर्ग ,श्यामल

समादार ,जनार्दन कुशवाहा, गौरांग मंडल ,आनंद विश्वास, देवशरण सिंह, भूलचू राजवाड़े, गु लन राम मनियारो, रीता देवी, बंटेश्वर, संतरा बाई ,राजेंद्र गोटिया, बंधु राम ,ब्रह्मदेव, नोहर साईं ,देवेंद्र सोनवानी ,मुकंद राम, काशीनाथ ,सुदन राम ,राजू राम, सुमित्रा देवी ,सुखमनिया, रामबाई ,परमेश्वरी शाहिद काफी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे

कैबिनेट मंत्री देवांगन की उपस्थिति में बाबा साहब भीम राव की 135वीं जयंती कार्यक्रम का हुआ आयोजन

संविधान निर्माण में बाबा साहब का योगदान अमूल्य:- कैबिनेट मंत्री

कोरबा(विश्व परिवार) । वाणिज्य उद्योग व श्रम मंत्री छत्तीसगढ़ शासन श्री लखन लाल देवांगन की उपस्थिति में कोरबा नगर के घण्टाघर स्थित ओपन थियेटर मैदान में संयुक्त आयोजन समिति द्वारा विश्व रत्न डॉ भीम राव अम्बेडकर की 135वीं जयंती कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मंत्री श्री देवांगन ने बाबा भीमराव अंबेडकर की छायाचित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर उन्हें नमन किया।उन्होंने बाबा साहब के जीवन संघर्ष एवं उनकी उपलब्धियों का स्मरण कराते हुए उपस्थित लोगों को जयंती की शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि बाबा साहब का देश के संविधान निर्माण में योगदान अमूल्य है। संविधान के कारण ही देश का हर नागरिक को संवैधानिक अधिकार प्राप्त है। सभी स्वत्रंत रूप से आगे बढ़ रहे है। कैबिनेट मंत्री श्री देवांगन ने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी बाबा साहब के सम्मान में संविधान को नतमस्तक होकर प्रणाम करते है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने बाबा साहब से जुड़े सभी स्थानों को स्मारक के रूप में विकसित किया है। प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के मार्गदर्शन में सभी स्थानों में आज समरसता जैसे कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। जहां समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले प्रमुख व्यक्तियों को सम्मानित किया गया है।श्री देवांगन ने कहा कि कोरबा शहर में के प्रमुख स्थान ओपन थियेटर मैदान का नाम भी बाबा साहब के नाम पर डॉ भीमराव अम्बेडकर ओपन थियेटर मैदान रखा गया है। साथ ही यहां मैदान में बाबा साहब का भव्य मूर्ति की स्थापना भी की गई है।

प्रदेश में बिगड़ती कानून व्यवस्था के खिलाफप्रदेश कांग्रेस 21 अप्रैल को मुख्यमंत्री निवास का करेगा घेराव- अनुपम फिलिप

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-महिलाओं के प्रति उत्पीड़न, हत्या, बलात्कार जैसे गंभीर अपराधों में बेतहाशा वृद्धि हुई है। छत्तीसगढ़ में हर 5 घंटे में एक नाबालिग के साथ बलात्कार की घटना हो रही है। इसके विरोध में प्रदेश काँग्रेस कमेटी 21 अप्रैल को मुखमंत्री विष्णु देव साय के आवास का घेराव करेगी। प्रदेश काँग्रेस संयुक्त महामंत्री सह प्रवक्ता अनुपम फ़िलिप ने बताया कि प्रदेश में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर सरकार गंभीर नहीं हैं। प्रदेश में हत्या, लूट, चाकूबाज़ी, चोरी जैसे अपराधों में अप्रत्याशित बढ़ोतरी हुई है। प्रतिदिन बढ़ते अपराधों से आमजनता के बीच भय और असुरक्षा का वातावरण निर्मित हो रहा है। प्रदेश प्रवक्ता अनुपम फ़िलिप ने बताया कि प्रदेश काँग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज सहित वरिष्ठतम नेताओं के नेतृत्व में कांग्रेस रायपुर में मुख्यमंत्री आवास का घेराव करेगी। और उनसे प्रदेश में क़ानून व्यवस्था के बहाली की पुरजोर माँग करेगी। अनुपम फिलिप ने बताया कि प्रदेश काँग्रेस के निर्देशन पर बड़ी संख्या में कार्यकर्ता आंदोलन में शामिल होने रायपुर जायेंगे।

विधायक भूलन सिंह ने किया पटना के मंगल साय का सर्वे

30 अप्रैल सर्वे की अंतिम तिथि, सभी अविलंब कराए सर्वे-भूलन सिंह मरावी मरावी

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- शासन के निर्देशानुसार एवं कलेक्टर एस. जयवर्धन के मार्गदर्शन में प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण अंतर्गत चल रहे मोर दुआर साय सरकार महाअभियान के तहत प्रेमनगर विधानसभा के विधायक भूलन सिंह मरावी द्वारा स्वयं से ग्राम पंचायत पटना में परिवार का सर्वे किया गया। शासन स्तर से इसके लिए विस्तृत दिशा निर्देश जारी किए गए है जिसमें प्रथम चरण में राज्य के समस्त जनप्रतिनिधियों द्वारा सर्वे करने का कार्य किया जाना है। विधायक श्री मरावी ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए, कहा कि यह बहुत अच्छा अवसर है मोदी जी एवं मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में सभी छूटे हुए पात्र परिवारों का पुन: सर्वे होकर पक्का मकान देने की दिशा में कार्य हो रही है। आप सभी इस महाअभियान का लाभ लीजिए और इस बात को सुनिश्चित करिए कि कोई भी पात्र व्यक्ति सर्वे से वंचित न रहे। इसके लिए किसी को भी राशि देने की आवश्यकता नहीं है यह पूर्णत: नि:शुल्क है,

अगर कोई राशि को मांग करे तो तत्काल जिला/जनपद पंचायत में हेल्पलाइन नंबर 9244 049 285 पर सूचित करिए। इसी क्रम में उन्होंने कहां कि विगत 6-8 माह में हमने हजारों की संख्या में आवास की स्वीकृति करने का कार्य किया है इन मकानों को भी आप सभी अविलंब पूरा करिए। सीईओ जनपद पंचायत श्री संजय राय ने बताया कि सर्वे की अंतिम तिथि 30 अप्रैल 2025 निर्धारित है इसके बाद सर्वे हुए सभी नामों का ग्राम पंचायत में वाचन करके अंतिम में पूर्णता प्रमाण पत्र लिया जायेगा। प्राप्त जानकारी अनुसार जिले में अब तक 76811 परिवारों का सर्वे पूर्ण किया जा चुका है। जिसमें भैयाथान से 20953, ओड़गी से 7657, प्रतापपुर से 14359, प्रेमनगर से 6697, रामानुजनगर से 14276 एवं सूरजपुर से 12869 का सर्वे हो चुका है। उक्त कार्यक्रम में जपनद अध्यक्ष श्री गुलाब सिंह, उपाध्यक्ष श्री राम प्रताप साहू, श्री सुजीत देव पांडेय, जनपद सदस्य,सरपंच सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणजन एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित रहें।

भारत रत्न बाबा भीमराव अंबेडकर का जरही एवं भटगांव में किया गया याद

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार) नगर पंचायत जरही स्थित मैत्री भवन में संविधान निर्माता, भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती बड़े ही हर्षोल्लास और गरिमामय वातावरण में मनाई गई। कार्यक्रम की शुरुआत शोभा यात्रा से हुई, जो प्रात: 10 बजे जरही से भटगांव तक निकाली गई। शाम 5 बजे से मंचीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें जनसमूह ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

मुख्य अतिथि के रूप में एसईसीएल, भटगांव क्षेत्र के महाप्रबंधक दिलीप माधवराव बोबड़े उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथियों में पूर्व सीबीआई मजिस्ट्रेट प्रभाकर ग्वाल, अधिवक्ता उच्च न्यायालय झनेन्द्र कुमार महिलांग, कार्मिक प्रबंधक

राजकुमार शर्मा, उप महाप्रबंधक मंगल राम, सब एरिया मैनेजर बी आर बिश्नोई, एडी जुबली स्कूल के प्राचार्य जोसेफ धन्ना स्वामी तथा शासकीय हाई सेकेंडरी स्कूल सोनगरा की व्याख्याता सोना सिंह मराबी शामिल रहे।

कार्यक्रम में छोटे-बड़े बच्चों के लिए पेन्टिग प्रतियोगिता, क्वीज, रंगोली प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

साथ ही महिला समूहों एवं बच्चो के द्वारा भी भाषण, एकल न्रत्य, सामुहिक न्रित्य, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने सभी का मन मोह लिया। इस अवसर पर सामाजिक कार्यकर्ता सपना ओल्को, नरेन्द्र साहू, सीताराम भास्कर सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

समारोह के संरक्षक डॉ. महेश्वर सिंह, अजय शर्मा, कौशल प्रसाद, दिलीप मंडल, पुष्पराज सिंह पटेल और विष्णु साहू ने आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम की अध्यक्षता खेमराज पाटिल और तुलसी सिंह ने की, वहीं सचिव हंसाराम प्रधान, पुष्पा गदेवाल, अशोक यादव और कोषाध्यक्ष केशव प्रसाद लहरे, कांति प्रधान सहित समस्त डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती समारोह समिति के सदस्य आयोजन में सक्रिय रूप से शामिल रहे। समारोह में सभी वक्ताओं ने डॉ. अंबेडकर के विचारों और संविधान निर्माण में उनके अतुलनीय योगदान को याद करते हुए सामाजिक समानता और एकता का संदेश दिया।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर शुक्रवार 18 अप्रैल 2025

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

भारत की टैरिफ कूटनीति के लाभ

डा. जयंतीलाल भंडारी

चूंकि अब दुनिया में नए डिजिटल दौर की नई संपत्तियों से विकास की मंजिलें तय होंगी, अतएव ऐसी सबसे कीमती संपत्तियों के विकास पर भारत को ध्यान देना होगा। अब भारत में भारी पूंजी वाले उद्योगों को सबसिडी देने के बजाय शिक्षा और कौशल विकास पर अधिक निवेश किया जाना अधिक लाभप्रद होगा। भारत को सेवा क्षेत्र की नई चमकीली राजधानी बनाने पर ध्यान केंद्रित किया जाना होगा यकीनन इस समय टैरिफवॉर के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कूटनीति और अमेरिका के लिए शुल्कों में कमी की रणनीति रंग लाते हुए दिखाई दे रही है। 9 अप्रैल को अमेरिका के ट्रेजरी सचिव स्कॉट बेसेंट ने व्हाइट हाउस में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि पूरी दुनिया में भारत एक ऐसे पहले देश के रूप में सामने आया है, जो अमेरिका के साथ सबसे पहले टैरिफ पर प्रभावी बातचीत करते हुए दिखाई दे रहा है। वास्तव में प्रधानमंत्री मोदी की टैरिफ कूटनीति के लाभ उभरकर दिखाई दे रहे हैं। उल्लेखनीय है कि जहां अमेरिका के द्वारा चीन पर 145 फीसदी रेसिप्रोकल टैरिफलागू कर दिया गया है, वहीं अमेरिका पर जवाबी टैरिफ नहीं लगाने वाले भारत सहित सभी देशों के लिए 90 दिनों तक टैरिफके अमल को स्थगित कर दिया है। ट्रंप के इस निर्णय के बाद चीन ने अमेरिका पर 125 फीसदी टैरिफ लगा दिया है। इससे अमेरिका और चीन के बीच व्यापार युद्ध शुरू हो गया है। ट्रंप के इस ऐलान के बाद भारतीय निर्यात पर मंडरा रही अनिश्चितता फिलहाल रुक गई है। इसमें कोई दो मत नहीं है कि अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के द्वारा विभिन्न देशों पर रेसिप्रोकल टैरिफ लागू किए जाने के बाद नई व्यापार दुनिया ने जन्म ले लिया है। यह नई व्यापार दुनिया राष्ट्रपति ट्रंप की उस हठ पर आधारित है जिसमें वे विश्व अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन और अमेरिका के साथ कथित आर्थिक दुर्व्यवहार को रोकने के लिए अमेरिकी अर्थव्यवस्था और उपभोक्ताओं को होने वाले किसी भी तरह के कष्ट की अनदेखी करने को भी तैयार हैं। नई व्यापार दुनिया पहले की व्यापार दुनिया से पूरी तरह से अलग है। कल तक दुनिया में मजबूत आर्थिक विश्व व्यवस्था और बहुपक्षीय व्यापार समझौतों के आधार पर विकास की कहानी आगे बढ़ती रही है, वहीं अब संरक्षणवाद तथा द्विपक्षीय और मुक्त व्यापार समझौतों का नया सितारा उदित हो रहा है। ऐसे में भारत को अमेरिका की संरक्षणवादी नीतियों और दुनिया की बदलती आर्थिक सूरत की नई हकीकत के मद्देनजर नई रणनीति के साथ आगे बढना होगा। गौरतलब है कि ट्रंप के द्वारा भारत पर 26 प्रतिशत टैरिफ लागू किया गया है। ट्रंप का टैरिफ वियतनाम पर 46 प्रतिशत, बांग्लादेश पर 37 प्रतिशत तथा थाइलैंड पर 36 प्रतिशत सुनिश्चित किया गया है। वित्त वर्ष 2023-24 में भारत के कुल निर्यात में अमेरिका की हिस्सेदारी करीब 18 फीसदी रही, जो करीब 77.5 अरब डॉलर थी, निर्यात की ऐसी ऊंचाई अमेरिका को भारत का बड़ा व्यापारिक साझेदार बनाती है। ट्रंप के टैरिफ से भारत के कई प्रमुख निर्यात क्षेत्र प्रभावित हो सकते हैं। इनमें आईटी, टेक्सटाइल और परिधान, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, रत्न और आभूषण, इलेक्ट्रॉनिक्स, कृषि उत्पाद शामिल हैं। भारत के दवा और सेमीकंडक्टर उद्योग पर भी टैरिफकी तलवार लटक रही है। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) की रिपोर्ट के मुताबिक भारत पर 26 फीसदी पारस्परिक टैरिफ लगाने के अमेरिकी फैसले से भारत के द्वारा अमेरिका को किए जाने वाले निर्यात में करीब 5.76 अरब डॉलर की गिरावट आ सकती है और भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के करीब 0.2 फीसदी घटने की आशंका रहेगी। खास बात यह भी है कि ट्रंप के टैरिफ की आपदा के बीच भारत के लिए मौके भी छिपे हैं। जहां अमेरिका के द्वारा भारत पर लगाए गए टैरिफदूसरे कई प्रतिस्पर्धी देशों से कम होने से अमेरिका सहित दुनिया में भारत के निर्यात बढने की संभावना है। भारत जिस तरह से अमेरिका के साथ नए व्यापार समझौते के लिए तथा अन्य देशों के साथ भारत द्विपक्षीय व्यापार समझौतों के लिए रणनीतिपूर्वक कदम बढ़ा रहा है, उससे भारत के लिए अमेरिका सहित दुनिया के विभिन्न देशों में निर्यात और कारोबार बढ़ाने के मौके भी बढ़ सकते हैं। चूंकि एशिया के उभरते बाजारों में भारत पर टैरिफ फिलीपींस को छोडक़र सबसे कम है, ऐसे में तुलनात्मक रूप से कम टैरिफ से भारत को वैश्विक व्यापार और मैन्युफैक्चरिंग में अपनी स्थिति मजबूत करने का मौका मिल सकता है। इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्टर में अमेरिकी बाजार में भारत की निर्यात प्रतिस्पर्धा मजबूत होगी। प्रमुख इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यातक देशों की तुलना में भारत पर कम टैरिफ लगा है। खास तौर पर चीन और वियतनाम के मुकाबले भारत बेहतर स्थिति में है। टेक्सटाइल के निर्यात बाजार में अभी से भी बेहतर अवसर मिल सकते हैं। अन्य देशों के सामान अमेरिका में ज्यादा महंगे होने से अमेरिका में भी भारतीय उत्पादों की मांग बढ़ेगी। टैरिफ की चुनौतियों के बीच भी भारत की विकास दर बढने की संभावनाएं हैं। हाल ही में प्रकाशित अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की रिपोर्ट के मुताबिक टैरिफ चुनौतियों के बीच भी चालू वित्त वर्ष 2025-26 में भारत की जीडीपी वृद्धि दर 6.5 फीसदी रहेगी और यह स्थिति अर्थव्यवस्था के मजबूत और स्थिर विस्तार का संकेत देती है। साथ ही भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनी रहेगी। यद्यपि भारत में सरकार ने संसद में ट्रंप की नई टैरिफ नीति के मद्देनजर घरेलू उद्योगों के संरक्षण की बात कही है, लेकिन अब देश के उद्योग जगत के द्वारा टैरिफ संरक्षण की बजाय वैश्विक प्रतिस्पर्धा व अनुसंधान व विकास (आरएंडडी) पर ध्यान दिया जाना होगा। इस बात को ध्यान में रखना होगा कि वर्ष 1991 में उद्योगों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा की ओर बढ़ाने की जो रणनीति लागू हुई, उससे देश को उदारीकरण के लाभ मिले हैं। चूंकि टैरिफ प्रतिस्पर्धा से जुड़े हैं, अगर हम टैरिफकी आड़ में रहेंगे तो प्रतिस्पर्धी नहीं बन पाएंगे। नए अवसरों का पूरा लाभ उठाने के लिए भारत को कारोबार करने में आसानी बढ़ानी होगी। लॉजिस्टिक्स व बुनियादी ढांचे में निवेश करना होगा और नीतिगत स्थिरता कायम रखनी होगी। हम उम्मीद करें कि अमेरिका के द्वारा चीन पर लागू किए गए 145 फीसदी टैरिफ से शुरू हुए अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध के बीच वैश्विक आर्थिक मौकों को मुट्ठी में लेने के साथ-साथ भारत पर लागू किए जाने वाले 26 फीसदी टैरिफकी चुनौती का मुकाबला करने में भारत के लिए अमेरिका के साथ नया कारोबार समझौता, विभिन्न देशों के साथ नए द्विपक्षीय और मुक्त व्यापार समझौते और मजबूत घरेलू आर्थिक घटक असरकारक आर्थिक हथियार के रूप में उपयोगिता देते हुए दिखाई देंगे। हम उम्मीद करें कि सरकार नई व्यापार दुनिया में भारत को रचनात्मक देश बनाने के लिए ऐसी नई आर्थिक रणनीति के साथ आगे बढ़ेगी, जिसमें बड़े-बड़े उद्योगों के साथ सूक्ष्म, छोटे और मझौले उद्योगों के लिए भी अनुकूलताएं हों। चूंकि अब दुनिया में नए डिजिटल दौर की नई संपत्तियों से विकास की मंजिलें तय होंगी, अतएव ऐसी सबसे कीमती संपत्तियों के विकास पर भारत को ध्यान देना होगा। अब भारत में भारी पूंजी वाले उद्योगों को सबसिडी देने के बजाय शिक्षा और कौशल विकास पर अधिक निवेश किया।

जाना अधिक लाभप्रद होगा। भारत को सेवा क्षेत्र की नई चमकीली राजधानी बनाने पर ध्यान केंद्रित किया जाना होगा। साथ ही भारत को अधिक डिजिटल महारत हासिल करने पर ध्यान देना होगा। निश्चित रूप से ऐसी नई आर्थिक और द्विपक्षीय वैश्विक व्यापार रणनीति से भारत नई व्यापार दुनिया के आकाश में एक चमकते हुए आर्थिक और प्रभावी सितारे के रूप में दिखाई दे सकेगा।

घिबली का ट्रेंड

घिबली एप से अपनी तस्वीरों को नया कलेवर देने के लिए लोग पागल हुए जा रहे हैं, बिना यह जाने-समझे कि इसका इस्तेमाल किस कदर खतरनाक है। आजकल आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) की मदद से अपनी तस्वीरों को स्टूडियो घिबली स्टाइल में बदलने का चलन आम जन को इस कदर अपनी आगोश में लिये हुए है कि इससे होने वाले नुकसान की चिंता किसी को रत्ती भर भी नहीं है। स्वाभाविक रूप से यह गोपनीयता के लिए गंभीर खतरा है। साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों का भी यही मत है कि इसके इस्तेमाल में बेहद सतर्कता और समझदारी की जरूरत है। क्योंकि भले इस तरह के एप और एआई टूल्स सुरक्षित दिखें, मगर इनकी शत्रे और नियम बेहद अस्पष्ट होती हैं। एक बड़ा खतरा निजी तस्वीरों की चोरी और उसके गलत उपयोग का है। कई बार डीपफेक बनाने में कई सेलेब्रिटी की तस्वीरों का उपयोग किया गया है। कई बार तो फोटो या डाटा डार्क वेब को बेचे भी गए हैं। दरअसल, घिबली जापानी एनिमेशन की कला शैली स्टूडियो घिबली का ट्रेंड ओपन एआई के जीपीटी-40 मॉडल है, जिसमें तस्वीरों में महज आपका चेहरा ही नहीं बल्कि आपकी लोकेशन, वक्त और डिवाइस की जानकारी जैसा छिपा हुआ मेटाडाटा भी होता है और ये सभी निजी गोपनीय जानकारी आसानी से दे सकते हैं। हम भारतीयों में भेड़ चाल चलने की बुरी आदत घर कर चुकी है। कोई भी नई तकनीक का इस्तेमाल हम बिना उसके गुण-दोष के आधार पर नहीं करते हैं। साइबर युग में इस तरह की गलती के बेहद खतरनाक अंजाम भुगतने की आशंका बलवती होती है। पहले भी तस्वीरों का डीपफेक की मदद से कितना भद्दा और गंदा मजाक किया गया, यह बताने की जरूरत नहीं है।सरकार इन सब बातों से भिज्ञ है, मगर उसकी तरफ से कोई चेतावनी या निर्देश देने की पहल अब तक नहीं की गई है। होना तो यह चाहिए कि जनता को इसके बारे में सूचना और प्रसारण मंत्रालय को एक जागरूकता कैंपेन चलाना चाहिए। सोशल मीडिया के जरिये सरकारी संस्थाओं को इस तरह के एप्लीकेशन पर बराबर नजर रखने और जनता को लगातार सतर्क रहने की कवायद करते रहना होगा। छोटी सी खुशी के चक्कर में बड़ा और कभी न भूलने वाले कृत्य को लेकर जनता को भी सोचना होगा। सिर्फ भीड़ का हिस्सा बनने से बचने में ही आज के वक्त में भलाई है। यह दौर वाकई बेहद खतरनाक है।

आलेख

राष्ट्र और मानवता के कल्याण हेतु धर्मानुकूल आचरण को अनिवार्य मानते हैं मोहन भागवत

कृष्णमोहन झा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने गत दिवस गुजरात के वलसाड जिले के धरमपुरा में स्थित सदगुरु धाम में श्री भावभावेश्वर महादेव मंदिर के रजत जयंती समारोह में मुख्य अतिथि की आसंदी से सचेत किया कि भय अथवा प्रलोभन का दैनिक जीवन में सामना करना पड़ सकता है और ये लोगों को उनके धर्म से दूर ले जा सकते हैं लेकिन धर्म ही खुशी की ओर ले जा सकता है। धर्म हमें जोड़ता है और सही रास्ते पर ले जाता है। इसीलिए भय या प्रलोभन के प्रभाव में आकर लोगों को अपना धर्म परिवर्तन नहीं करना चाहिए। संघ प्रमुख ने कहा कि हम एक जुट होना जानते हैं और एक जुट होना भी चाहते हैं । हम किसी से लडना नहीं चाहते लेकिन आज भी कुछ ऐसी ताकतें मौजूद हैं जो चाहती हैं कि हम अपने आप को बदल बदल दें हमें ऐसी ताकतों से बच कर रहना है।

संघ प्रमुख ने महाभारत काल का एक दृष्टांत देते हुए कहा कि उस काल में धर्म परिवर्तन कराने का प्रयास करने वाली ताकतें मौजूद नहीं थीं लेकिन दुर्योधन ने पांडवों का राज्य हड़पने के लिए जो कुछ किया वह अधर्म था। संघ प्रमुख ने दैनिक जीवन में धार्मिक आचरण को व्यवहार में लाने का आह्वान करते हुए कहा कि लालच और भय हमें अपनी आस्था से विमुख करते हैं इसीलिए सदगुरु धाम जैसे स्थलों का निर्माण किया गया है। लोगों में धार्मिक चेतना के प्रचार प्रसार हेतु सदगुरु धाम के द्वारा संचालित गतिविधियों एवं कार्यों की सराहना करते हुए संघ प्रमुख ने कहा कि यह संस्थान सुदूर आदिवासी क्षेत्रों में जाकर आदिवासियों के उत्थान के लिए सामाजिक गतिविधियों का संचालन कर रहा है। अतीत में जब इस तरह के केंद्रों का अभाव था तब तपस्वी गांव गांव में अपने सत्संग कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को धर्म के मार्ग पर दृढ़ रखते थे लेकिन अब आबादी बढ़ जाने से सदगुरु धाम जैसे केंद्र बन गये हैं जहां समाज के लोग एकत्र हो कर पूजा करते हैं और आध्यात्मिक सत्संग का लाभ प्राप्त करते हैं । यहां उनके कला का अभ्यास करने का अवसर भी मिलता है। संघ प्रमुख ने अपनी इस बात को रेखांकित किया कि सदगुरु धाम जैसे आध्यात्मिक केंद्र लोगों का धर्म परिवर्तन नहीं करते बल्कि उन्हें अपने धर्म पर दृढ़ रहकर धर्म के अनुसार आचरण करने के लिए प्रेरित करते हैं। ऐसे केंद्रों को मजबूत करना हमारी जिम्मेदारी है।इसी से हमारा कल्याण , राष्ट्र की सेवा और संपूर्ण मानवता का कल्याण सुनिश्चित होगा।भागवत ने कहा कि धर्म के अभाव में मनुष्य बुरी आदतों में पड़कर जीवन बर्बाद कर लेता है और धर्म के अनुसार आचरण करने से समाज और राष्ट्र का कल्याण होता है। यही हमारे राष्ट्र की प्रगति भी सुनिश्चित करता है। भागवत ने कहा कि हमारा सनातन धर्म किसी के प्रति दुर्भावना नहीं रखता इसीलिए सारी दुनिया भारत की ओर देख रही है । संघ प्रमुख ने कहा कि भारत को अपनी आध्यात्मिक परंपरा के मार्ग पर सतत अग्रसर रहना चाहिए क्योंकि सारी दुनिया मानती है कि भारत के पास ही इस क्षेत्र में सारी दुनिया का नेतृत्व करने का सामर्थ्य है।

गौरतलब है कि गुजरात के वलसाड जिले के अंतर्गत धरमपुरा की हरी-भरी पहाड़ियों के मध्य बसा श्री सदगुरु धाम पिछले ढाई दशकों से दक्षिण गुजरात में विशेष धार्मिक एवं आध्यात्मिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ है । श्री सदगुरु धाम में निर्मित भगवान भाव भावेश्वर के भव्य मंदिर में दर्शन लाभ हेतु प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं का आगमन होता है। इस भव्य मंदिर के रजत जयंती समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सरसंघचालक मोहन भागवत की उपस्थिति ने इस समारोह को और भी महत्वपूर्ण बना दिया। 30 मार्च से 6 अप्रैल तक यहां शिव पुराण कथा का आयोजन किया गया जिसे सुनने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। लगभग एक माह तक चलने वाले रजत जयंती समारोह में प्रथम दिवस से ही दूर दूर से श्रद्धालुओं के आगमन का क्रम जारी है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस-अजूबा नहीं

विवेक रंजन श्रीवास्तव

एआई कोई अजूबा नहीं, बल्कि मानव मस्तिष्क की ही एक उपज है। यह हमारी जीवनशैली को अधिक आरामदायक, सुलभ और प्रभावशाली बना सकती है-बशर्ते हम इसे विवेक और संतुलन के साथ अपनाएँ। विद्यालय के दिनों में विज्ञान- लाभ और हानि जैसे विषयों पर भाषण, वाद-विवाद और निबंध लिखना आम बात थी। समय बदला, विज्ञान ने रोज़मर्रा की ज़िंदगी में पहले रेडियो, फिर टेलीविजन, मोबाइल और अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के रूप में हमारी जिंदगी आसान बनाने के लिए हस्तक्षेप बढ़ाया है। आज एआई हमारी बातचीत, सोच, कामकाज, और यहां तक कि निर्णयों तक को प्रभावित कर रहा है। ऐसे में एआई के लाभ और हानि पर विचार करना आवश्यक हो गया है। एआई यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता वह तकनीक है, जो मशीनों को सीखने, तर्क करने और निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। वर्ष 2025 में वैश्विक एआई बाज़ार 244.22 बिलियन तक पहुँच चुका है, और 2031 तक इसके 26.6त्न की वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ने की संभावना है। यह दर्शाता है कि यह तकनीक केवल भविष्य नहीं, बल्कि वर्तमान की भी एक सशक्त वास्तविकता है।

ए.आई. के लाभ

एआई के उपयोग से दक्षता और उत्पादकता में जबरदस्त वृद्धि हुई है। यह 24/7 कार्य कर सकती है, मानव त्रुटियों को कम करती है, और डेटा विश्लेषण द्वारा निर्णय लेने में सहायता करती है। स्वास्थ्य, वित्त और निर्माण जैसे क्षेत्रों में यह क्रांतिकारी बदलाव ला रही है। उदाहरण के लिए, विनिर्माण इकाइयों में एआई संचालित रोबोट उत्पादन को सुव्यवस्थित करते हैं। एआई आधारित चैटबॉट्स ग्राहक सहायता को बेहतर बनाते हैं- नेटफ्लिक्स की एआई सिफारिशें सालाना 1 बिलियन का मुनाफा कमा रही हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में एआई नई दवाओं की खोज को गति दे रही है- जैसे नवीडिया और फाइज़र का 80 मिलियन का निवेश। यह खतरनाक कार्यों में मानव जीवन की रक्षा करती है, और पर्यावरणीय मॉडलिंग से जलवायु संकट की समझ को बेहतर बनाती है। एआई का सबसे बड़ा योगदान यह है कि यह हर व्यक्ति के पास जानकारी और समाधान की पहुंच संभव बनाता है। इसके चलते शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के नए द्वार खुल रहे हैं।

ए.आई. के नुकसान

हर क्रांति की एक कीमत होती है। एआई के आगमन से स्वचालन बढ़ा है, जिससे पारंपरिक नौकरियों पर खतरा मंडरा रहा है। एचआर, ग्राहक सेवा, लेखांकन जैसे क्षेत्रों में मानव संसाधनों की आवश्यकता घट रही है। एआई को लागू करने की लागत भी ऊँची है-हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, और विशेषज्ञों की ज़रूरत छोटे व्यवसायों के लिए चुनौती है। गोपनीयता की बात करें तो एआई विशाल डेटा पर आधारित है, जिससे डेटा उल्लंघन, निगरानी, और एल्गोरिदमिक पक्षपात जैसे खतरे बढ़ जाते हैं। एआई का अत्यधिक उपयोग मानवीय संबंधों और संवेदनशीलता को भी प्रभावित कर सकता है-यह भावनाओं को नहीं समझ सकती, जो कि स्वास्थ्य सेवा और मानसिक परामर्श जैसे क्षेत्रों में ज़रूरी हैं। भविष्य की सबसे बड़ी चिंता यह है कि एआई कहीं ऐसी दिशा में न बढ़ जाए, जहाँ उसका नियंत्रण मानव के हाथों से निकल जाए। जनरेटिव एआई कभी-कभी भ्रामक जानकारी भी दे सकता है, जिससे भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है। यह मानना होगा कि एआई मानव का विकल्प नहीं, सहायक है। हमें इससे भयभीत होने की बजाय इसके लाभों का विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए, और इसकी सीमाओं को समझते हुए मानवीय संवेदनाओं, कला, संस्कृति और मौलिकता की रक्षा करनी चाहिए। एआई हमारे समय की वह क्रांति है, जो सही दिशा में उपयोग हो तो मानव जाति के लिए वरदान साबित हो सकती है-और गलत दिशा में गई तो चुनौती। ज़रूरत है इसे नियंत्रित नवाचार के सकारात्मक रास्ते पर आगे बढ़ाने की। जहां मानवीय क्षमता कुछ वर्किंग घंटे प्रतिदिन से अधिक नहीं हो सकती, ऐ आई हमारे लिए चौबीसों घंटे बिना थके लगातार काम कर सकता है। समय बदला, विज्ञान ने रोज़मर्रा की ज़िंदगी में पहले रेडियो, फिर टेलीविजन, मोबाइल और अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के रूप में हमारी जिंदगी आसान बनाने के लिए हस्तक्षेप बढ़ाया है। आज एआई हमारी बातचीत, सोच, कामकाज, और यहां तक कि निर्णयों तक को प्रभावित कर रहा है। ऐसे में एआई के लाभ और हानि पर विचार करना आवश्यक हो गया है। एआई यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता वह तकनीक है, जो मशीनों को सीखने, तर्क करने और निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। हम किसी काम को आज की जगह कल पर टाल सकते हैं, किंतु ए आई तुरत फुरत ही काम निपटाता है। बस हमें इसे सही प्राम्पट देने की आवश्यकता होती है। इसलिए ए आई के बढ़ते प्रयोग से प्राम्पट इंजीनियरिंग में रोजगार बढ़ भी रहे हैं । यह इस नई टेक्नोलॉजी का सकारात्मक प्रभाव है।

ऑपरेशन मेघदूत के गुमनाम जांबाजों को नमन

प्रताप सिंह पटियाल

सन् 1977 के दौर में 'हाई एल्टीट्यूड वारफेयर स्कूल' के कमांडर रहते 'कर्नल नरेंद्र बुल' ने सियाचिन के साल्टोरो रेंज, जस्कर व काराकोरम जैसे दुर्गम क्षेत्रों में पर्वतारोहण को अंजाम देकर पाकिस्तान के नापाक मंसूबे भांप लिए थे। कर्नल बुल के साहस भरे पर्वतारोही अभियानों से ही आपरेशन मेघदूत को अधिकृत किया गया था चार दशक पूर्व 13 अप्रैल 1984 को भारतीय सेना ने 'आपरेशन मेघदूत' को अंजाम देकर 22 हजार फीट की बुलंदी पर मौजूद सियाचिन ग्लेशियर के बिलाफोंड लॉ व सियाला जैसे दुर्गम क्षेत्रों पर तिरंगा फहरा कर अदम्य साहस का ऐतिहासिक मजमून लिख डाला था। दरअसल सन् 1947-48 में भारत-पाक सेनाओं के दरम्यान कश्मीर युद्ध की जंगबंदी के बाद 'अक्काम-ए-मुत्तहिदा' की मध्यस्थता से जुलाई 1949 को हुए 'कराची समझौते' के तहत मुकर्रर की गई 'युद्धविराम रेखा' का अंतिम बिंदु 'एनजे 9842' सुनिश्चित किया गया था। लेकिन एनजे 9842 के आगे हिमालय की काराकोरम रेंज में मौजूद बर्फ का रेगिस्तान कहा जाने वाला सियाचिन ग्लेशियर अधूरा रह गया था। पाक सेना ने 'बुर्जिल फोर्स' तैयार करके 'आपरेशन अबाबील' मंसूबे के तहत 17 अप्रैल 1984 को सियाचिन पर पेशकदमी की योजना बनाई थी। मगर भारतीय सेना ने 13 अप्रैल 1984 को विश्व के सबसे ऊंचे रणक्षेत्र सियाचिन के उपखंडों पर तिरंगा फहरा कर अपनी मौजूदगी सुनिश्चित कर दी थी। सन् 1984 के आपरेशन 'मेघदूत' में सियाचिन पर कब्जा करने में सेना की 'चार कुमाऊं' व '19 कुमाऊं' बटालियन तथा 'लद्दाख स्काउट' के जवानों ने अनुकरणीय बहादुरी का परिचय दिया था। जब पाक हुक्मरानों को सियाचिन में भारतीय सेना की मौजूदगी का एहसास हुआ तो पाक सेना ने भी सियाचिन पर कब्जा करने के लिए सैन्य अभियान शुरू कर दिए। शुरुआती दौर में भारतीय सेना को सियाचिन में कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा। मौके की नजाकत का लाभ उठाकर पाक सेना ने नवंबर 1986 में बिलाफोंड ला के नजदीक 'कायद पोस्ट' नामक सैन्य चौकी कायम कर ली। भारतीय सेना की 'आठ जैकलाई' बटालियन के बहादुर जवानों ने बेहद जोखिम भरे ऑपरेशन को अंजाम देकर 26 जून 1987 को कायद चौकी पर मौजूद पाक 'स्पेशल सर्विस ग्रुप' के सैनिकों को हलाक करके तिरंगा फहरा दिया था। उस सैन्य अभियान में सूबेदार 'बाना सिंह' को 'परमवीर चक्र' तथा मेजर 'वरिंदर सिंह

मिन्हास' को 'वीर चक्र' से नवाजा गया था। उस खतरनाक मिशन में 29 मई 1987 को बलिदान हुए लेफ्टिनेंट 'राजीव पांडे' को 'वीर चक्र' 'मरणोपरांत' से अलंकृत किया गया था। कायद पोस्ट अब 'बाना पोस्ट' के नाम से जानी जाती है। सन् 1989 में सियाचिन में 'आपरेशन आईबेक्स' के दौरान पाक सेना पर जोरदार हमले में 'डोगरा रेजिमेंट' के हिमाचली शूरवीर 'सरदार सिंह' को अदम्य साहस के लिए 'वीर चक्र' से सरफराज किया गया था। सन् 1992 में सियाचिन के 'चुलुंग' में पाक सेना ने भारतीय चौकियों पर हमला किया। लेकिन भारतीय सेना ने शिद्दत भरा पलटवार करके पाक हमलावर दस्ते को हलाक करके पाक 'फोर्स कमांडर नार्दर्न एरिया' ब्रिगेडियर 'मसूद नबीद अनवारी' को उनके हैलीकॉप्टर सहित मार गिराया था। सियाचिन पर कब्जा करने का सफर सेना के लिए आसान नहीं रहा है। 29 मई 1984 को सियाचिन में गश्त के दौरान 19 कुमाऊं के लेफ्टिनेंट 'प्रदीप सिंह पुंडीर' सहित 20 जवान बर्फीले तूफान की चपेट में आकर ग्लेशियर की आगोश में समा गए थे, जिनमें 14 सैनिकों के शव कुछ दिनों बाद बरामद हुए थे। एक सैनिक 'चंद्रशेखर' का पार्थिव शव 38 वर्षों बाद सन् 2022 में मिला था। बाकी पांच सैनिकों के शव आज तक लापता हैं। चंद्रशेखर जैसे सैकड़ों सैनिक ग्लेशियरों की बर्फ तले दबे हैं। उन गुमनाम सैनिकों के परिजन आज भी अपने सपूतों के इंतजार में हैं। अप्रैल 1989 में 'गार्ड्स रेजिमेंट' के नौ जवान तथा सन् 2016 में 'मद्रास रेजिमेंट' के दस सैनिक सियाचिन में एवलांच की चपेट में आकर बलिदान हो गए थे। सियाचिन में सैन्य बलिदान का सिलसिला बदस्तूर जारी है। जुलाई 2023 को सेना के डॉक्टर कैप्टन 'अंशुमान सिंह' 'कीर्ति चक्र' 'मरणोपरांत' सियाचिन में एक हादसे का शिकार हुए। हालांकि सन् 2012 में सियाचिन के पश्चिम 'ग्यारी सेक्टर' में पाक सेना के 140 सैनिक बर्फीले तूफान की जद में आकर शहीद हो गए थे। बेशक पाकिस्तान के गिलगित व बाल्टिस्तान पर नजर रखने में सक्षम 2583 वर्ग कि.मी. में फैला सियाचिन भारत को चीन तक सीधी पहुंच प्रदान करता है। लेकिन 22 हजार फीट की बुलंदी पर मौजूद सियाचिन का तापमान शून्य से सत्तर डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है। वहां जीवित रहना भी चुनौती है। सन् 1972 के 'शिमला समझौते' में भारत व पाक के हुक्मरानों ने भी सियाचिन ग्लेशियर को बेजान व बंजर करार देकर इनसानों के रहने के काबिल नहीं बताया था। कराची समझौते में 'संयुक्त राष्ट्र' के अधिकारियों का भी यही तर्क था कि सियाचिन जैसे बर्फीले व निर्जन क्षेत्र के लिए भारत व पाक के बीच कोई विवाद नहीं होगा। मगर पाकिस्तान ने 1970 में पर्वतारोहण अभियानों की शुरुआत करके तथा 1980 के दशक में सियाचिन को अपने मानचित्र पर प्रदर्शित करके भारत को उकसाने की हिमाकत की। लेकिन सन् 1977 के दौर में 'हाई एल्टीट्यूड वारफेयर स्कूल' के कमांडर रहते 'कर्नल नरेंद्र बुल' ने सियाचिन के साल्टोरो रेंज, जस्कर व काराकोरम जैसे दुर्गम क्षेत्रों में पर्वतारोहण को अंजाम देकर पाकिस्तान के नापाक मंसूबे भांप लिए थे। कर्नल बुल के साहस भरे पर्वतारोही अभियानों से ही आपरेशन मेघदूत को अधिकृत किया गया था।

संक्षिप्त समाचार

चरौदा में सीआरपीएफ कैम्प ने लगाया स्वास्थ्य शिविर, डाक्टरों ने कहा नशापान से दूर रहें बच्चे

आरंग (विश्व परिवार)। गुरुवार को सीआरपीएफ कैंप भिलाई द्वारा ग्राम पंचायत चरौदा के सहयोग से शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला चरौदा में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें डाक्टरों ने स्कूली बच्चों, शिक्षकों व ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उपचार व परामर्श दिये।इस अवसर सीआरपीएफ कैंप के डाक्टर मनीषा गर्ग ने बच्चों को प्रेरित करते हुए तम्बाकू, गुटखा, खैनी इत्यादि नशा से दूर रहने प्रेरित किया। साथ ही गर्मी में तेज धूप से बचने, अधिक से अधिक पानी पीने तथा खान -पान का विशेष ध्यान रखने को कहा।इस मौके पर डाक्टर तनिंदर, डाक्टर मोहित जम्भोलकर, डाक्टर शालिनी, सिस्टर कलाश्रीनिवासन सहित स्कूली बच्चे, शिक्षक शिक्षिका, सीआरपीएफ के जवानों व ग्रामीणों की उपस्थिति व सहभागिता रही।

महाराष्ट्र मंडल के स्पोर्ट्स क्लब में बढ़ रही खिलाड़ियों की रुचि, बैडमिंटन, कैरम और शतरंज से शुरू हुए क्लब में अब टेबल टेनिस की व्यवस्था भी

रायपुर (विश्व परिवार)। हिंदू नववर्ष-गुड़ीपाड़वा से शुरू हुए महाराष्ट्र मंडल के स्पोर्ट्स क्लब को चंद हफ्तों में ही शानदार प्रतिसाद मिल रहा है। महज तीन खेलों बैडमिंटन, शतरंज और कैरम से शुरू हुए क्लब में अब सदस्यों के लिए टेबल टेनिस की भी व्यवस्था की गई है। क्लब बनने के बाद से यहां खिलाड़ी सदस्यों की संख्या लगातार बढ़ते जा रही है। संत ज्ञानेश्वर स्कूल के प्रभारी परितोष डोनगांवकर ने बताया कि स्पोर्ट्स क्लब का समय प्रतिदिन सुबह- शाम छह से नौ बजे तक निर्धारित है। सुबह ज्यादातर खिलाड़ी बैडमिंटन खेलने वाले ही होते हैं। वहीं शाम को बैडमिंटन कोर्ट और टेबल टेनिस खेलने के लिए खिलाड़ियों के बीच बराबर होड़ लगी रहती है। महाराष्ट्र मंडल के आजीवन सभासद और उनके नाबालिग परिजन स्पोर्ट्स क्लब के नियमित सदस्य बन सकते हैं। इसके लिए उन्हें बकायदा फार्म भरकर क्लब की सदस्यता लेनी होगी। स्पोर्ट्स क्लब में कैरम खेल रहे एक युवा सदस्य ने कहा कि वे 26- 27 अप्रैल को चौबे कॉलोनी स्थित महाराष्ट्र मंडल में होने वाली नगर स्तरीय कैरम स्पर्धा में हमारी यह प्रैक्टिस काम आएगी। बच्चों की परीक्षाएं समाप्त होते ही और ग्रीष्मकालीन छुट्टियां लगते ही क्लब में खिलाड़ियों की संख्या बढ़ेगी। इसमें निश्चित ही कैरम के खिलाड़ी भी होंगे। स्पोर्ट्स क्लब के अजय पोतदार ने बताया कि बच्चों को शतरंज सीखने के लिए अभिभावकों को जरूर भेजना चाहिए, ताकि उनकी बौद्धिक क्षमता बढ़ सके।

पीडीएस भवन से अवैध कब्जा हटाने की कार्यवाही

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्र अंतर्गत शासकीय उचित मूल्य दुकान पंजीयन क्रं. 1973 वार्ड 33 बैकुण्ठधाम में संचालित हो रही थी। शासन द्वारा संचालन हेतु पी.डी.एस. के 2 भवन बनाये गये थे। जिसमें से 1 भवन को स्टील नगर महिला स्व सहायता समूह द्वारा शासकीय उचित मुल्य दुकान का संचालन किया जा रहा था। प्राप्त शिकायत के अनुसार पी.डी.एस भवन के बगल में सुरेश विश्वकर्मा द्वारा अवैध कब्जा करके वहां से टेन्ट हाउस संचालित किया जा रहा था। जोन आयुक्त सतीश यादव के निर्देश पर जोन सहायक राजस्व अधिकारी बसंत देवांगन अपने दल के साथ जब मौके पर निरीक्षण करने पहुचे तो शिकायत सही पाया। सामने से पता नहीं चल रहा था, पिछे के रास्ते से व्यापार किया जा रहा था। सुरेश विश्वकर्मा दिव्यांग व्यक्ति निकला, उसके द्वारा जीविकोपार्जन के लिए सरकारी भवन का उपयोग किया जा रहा था। मानवीय दृष्टिकोण रखते हुए उससे 2000 रूपये का अर्थदण्ड वसूल कर रसीद प्रदान किया गया। वहां पर टेंट हाउस के सामग्री, बॉस बल्ली, फर्नीचर, बर्तन इत्यादि थे।

18 नए अग्निशमन वाहनों को...पेज-1 का शेष

अग्निशमन सेवाओं का निरंतर हो रहा सशक्तिकरण- उप पुलिस महानिरीक्षक श्री अजात शत्रु बहादुर सिंह ने बताया कि वर्ष 2017 में अग्निशमन सेवा को नगरीय निकाय से हस्तांतरित किया गया था। वर्तमान में प्रतिवर्ष औसतन 8,000 फायर कॉल प्राप्त होते हैं, जबकि ग्रीष्मकाल में यह संख्या प्रतिदिन 40 तक पहुंच जाती है। उन्होंने कहा कि आज जिन 18 नवीन अग्निशमन वाहनों को शामिल किया गया है, उनके साथ विभाग के पास अब कुल 161 अग्निशमन वाहन उपलब्ध हो गए हैं। रायगढ़, कोरबा, कबीरधाम, दंतेवाड़ा, धमतरी, कोरिया और अंबिकापुर जैसे जिलों को आज ही ये वाहन सौंपे गए हैं। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि एनआरडीए द्वारा नवा रायपुर में अग्निशमन एवं आपातकालीन सेवाओं के लिए 5.5 करोड़ रुपये की लागत से फायर स्टेशन सह आवासीय परिसर का निर्माण कराया गया है, जिसका आज लोकार्पण हुआ।

शहीद अग्निशमन कर्मियों को समर्पित अग्निशमन सुरक्षा सप्ताह- श्री अजात शत्रु बहादुर सिंह ने बताया कि अग्निशमन सेवाओं में अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर कर्मचारियों की स्मृति में प्रतिवर्ष 14 अप्रैल को शहीद दिवस मनाया जाता है और 14 से 20 अप्रैल तक पूरे देश में अग्निशमन सुरक्षा सप्ताह आयोजित किया जाता है। इसी क्रम में छत्तीसगढ़ में भी इस वर्ष अग्निशमन सुरक्षा सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में विधायक श्री मोतीलाल साहू, अपर मुख्य सचिव गृह श्री मनोज कुमार पिंगुआ, पुलिस महानिदेशक श्री अरुण देव गौतम और मुख्यमंत्री के सचिव श्री राहुल भगत सहित अन्य अधिकारी व जनप्रतिनिधिगण उपस्थित थे।

आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज की आज अष्टापद बद्रीनाथ अहिंसा संस्कार पदयात्रा

प्रात :काल आहारचार्य हेतु उत्तराखंड पद विहार

आचार्य श्री की कुलचाराम से बद्रीनाथ अहिंसा संस्कार पदयात्रा चल रही है

कुलचाराम (विश्व परिवार)। भारत गौरव साधना महोदधि सिंहनिष्कड़ित व्रत कर्ता अन्तर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागर जी महाराज एवं सौम्यमूर्ति उपाध्याय 108 श्री पीयूष सागर जी महाराज ससंघ का पदविहार देव मैरिज हॉल सोमेश्वर जिला अल्मोड़ा उत्तराखंड से वैष्णवी हिमालयन पेराडाइस होटल एंड रेस्टुरेंट जिला अल्मोड़ा उत्तराखंड दुरी-09.00km के लिए होगा। सत युग पूरा विश्व मेरा परिवार है।त्रेता युग मेरा देश मेरा परिवार है। द्वापर युग मेरा परिवार ही मेरा परिवार है।कलयुग मैं ही मेरा परिवार है।

अब जिन्दगी जीने के मायने बदल गये भाई। जिन्दगी जीना आसान नहीं है। हर हालात के लिए अपने आपको तैयार रखना होगा। मित्र कब दुश्मन बन जाये, अपने कब पराये हो जाये, दवाई कब जहर बन जाये, जहर कब दवाई बन जाये। इसलिए दूसरों के भरोसे नहीं, स्वयं अपने भाग्य के भरोसे जीवन जीयें।

आप अपने बच्चों के भरोसे जीवन नहीं जी सकते। आज के बच्चे मां बाप के बुढ़ापे की लाठी नहीं बल्की वृद्ध आश्रम की व्यवस्था का एक जरिया है इसलिए बच्चे चार प्रकार के पहला लेनदार बच्चा पिछले जन्म का लेनदार बच्चा। आपके घर में बच्चा बनकर आया है ङ्क आप खूब पढ़ाओ, लिखाओ, विवाह करो, कराओ, वह अपना लेन-देन पूरा करके नो दो ग्यारह हो जायेगा। दूसरा दुश्मन बच्चा पिछले जन्म की आज दुश्मनी निकालेगा, कदम कदम पर अपमान करेगा, दु:ख देगा, ना जीयेगा ना जीने देगा। तीसरा उदासीन बच्चा ऐसा बच्चा ना सुख देता है ना दु:ख। कहने को बच्चा है, पर उससे कोई उम्मीद नहीं कर सकते। -**नरेंद्र अजमेरा, पियूष कासलीवाल**

जिनालयों में चित्र लगाने का आगम में उल्लेख नहीं : मुनि पुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज

मेरा सौभाग्य कि मेरे गुरु संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

गौरेला (विश्व परिवार)। जिनालयों में साधुओं, आचार्यों के चित्रों से समाज में वैमनस्य और विवादों में वृद्धि हो रही है, इसीलिए केवल जिनेन्द्र भगवानों के ही चित्र लगायें जाना चाहिए। वैसे आगम में चित्र लगाये जाने का कोई उल्लेख नहीं है। निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव श्री सुधा सागर महाराज ने जिज्ञासा का समाधान करते हुए उपरोक्त उद्बोधन दिया।

चेतनोदय तीर्थ क्षेत्र बहोरीबंद में एक जिज्ञासा का समाधान करते हुए मुनिपुंगव श्री सुधा सागर महाराज ने कहा कि जैन धर्मावलंबियों में सहिष्णुता का ह्रास हो रहा है। पहले तो पंथवाद के आधार पर विभेद व्याप्त था। धीरे धीरे ये विभेद संघवाद में आया और अब तो एक ही संघ के साधुओं में भेद आ गया है। समाज में भेद का दुष्प्रभाव दिखाई देता था, अब तो ये अवांछनीय भेद दुर्भाग्य से साधुओं में भी दिखने लगा है।

निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव सुधा सागर महाराज ने कहा कि अब तो आहार के चौका लगाने दर्शन करने में भी ये देखने लगा है कि कौन साधु है। मूल प्रश्न था कि जिनालयों में समाज में आचार्यों साधुओं के चित्रों को लगाने पर विवाद होता है इस जिज्ञासा के समाधान में उपरोक्त भाव व्यक्त करते हुए मुनिपुंगव श्री सुधा सागर महाराज ने कहा कि जिनागम में जिनालयों में चित्र लगाने का कोई उल्लेख नहीं है। जिनालयों में जिनेन्द्र भगवान ही होना चाहिए।

जिनालयों में आचार्यों साधुओं के चित्र लगाने के स्थान पर एक वृहद कमरा बनाकर उसमें समाज के सदस्य अपनी-अपनी पसंद के और जिन साधु आचार्य पर श्रद्धा है उन सभी के चित्र लगा लें जिससे चित्र के आधार पर कोई विवाद न हो। महाराज जी ने कहा कि साधु और समाज में सहिष्णुता और परस्पर आदर में वृद्धि होना उचित होगा। साधु गुण और साधना के कारण पूज्यनीय आदरणीय होता है। मेरा सौभाग्य है कि मैं पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर महाराज का शिष्य हूं जिनकी साधना की श्रेष्ठता, गुणों की पूजा पूरा संसार करता है। -**वेदचन्द जैन**

पंचायत सचिवों ने मांगो को लेकर क्रमिक भूख हड़ताल में बैठे

मांगे नहीं होनें पर पंचायत सचिव दिल्ली में अनिश्चित कालीन हड़ताल करेंगे

दुलदुला (विश्व परिवार)। पंचायत सचिवों ने शासकीयकरण को लेकर क्रमिक भूख हड़ताल में बैठे है। धीरे-धीरे यह बड़ा रूप ले रहा है। सचिव संघ शासन को ध्यानआकृष्ट कराने के लिए तमाम तरह के प्रयास कर रहें है। फिलहाल उनका भूख हड़ताल 19 अप्रैल तक जारी रहेगा। सचिव संघ अध्यक्ष शिवशंकर यादव ने बताया की पंचायत सचिवों ने शासकीयकरण की मांग को लेकर लम्बे समय से संघर्ष कर रहे लेकिन इसके बाद भी शासन इस पर कोई निर्णय नही कर रहीं है। मांगों को लेकर शासन को अवगत कराया गया है।इसके बाद भी पंचायत सचिवों की सुनवाई नही हो रहीं। अब वह दिल्ली के जंतर मंतर में हड़ताल करेंगे।

रमेश कुमार सिंह ने बताया कि बुधवार को दुलदुला ब्लॉक के सचिवों ने शासकीयकरण को लेके संघर्ष कर रहे दिवंगत पंचायत सचिव राजकुमार कश्यप जिला कोरबा से, मोहित साहू जिला महासमुंद से, रामेश्वर चौहान निवासी जिला जशपुर को धरना स्थल पर दो मिनट मौन धारण कर श्रद्धांजलि अर्पित किये। हड़ताल में ब्लॉक सचिव संघ अध्यक्ष शिवशंकर यादव, महेश्वर राम, रामदेव नायक, नरेन्द्र राम, बालकेश्वर सिंह, प्रेम प्रकाश टोप्पो, प्रेम साय बघेल, गायत्री इंद्रवार, नारायण राम, विशेषवर यादव, कृष्णा राम यादव, नारायण राम, जगेश्वर साय, गोविंद प्रसाद, लम्बोधर राम, जीवंती बाई, उर्मिला प्रधान, श्रीमती नम्रता गुप्ता, श्रीमती देवकी यादव, , प्रशांत मिश्रा, परमेश्वर सिंह, रमेश कुमार सिंह, अरविन्द कुमार साय, विनोद कुमार सिंह, महाबीर प्रसाद राज, इस्मेल भगत, रोजलीना खलखो समेत सभी पंचायत सचिव मौजूद थे।

गुड फ्राइडे एवं ईस्टर पर्व पर विशेष

गुडफ्राइडे भारत ही नहीं पूरे विश्व में मनाया जाने वाला एक धार्मिक पर्व है। इस दिन प्रभु यीशु मसीह के दुख, वेदना और बलिदानी मृत्यु को स्मरण किया जाता है। क्योंकि वास्तव में गुडफ्राइडे वही दिन है जिसमें प्रभु यीशु को सलीबी मौत दी गई थी, उन्हें सलीब पर लटका कर मार दिया गया था। लेकिन पवित्र शास्त्र- बाईबल के अनुसार उन्हों ने, अर्थात् प्रभु यीशू ने स्वयं ही अपने प्राणों की कुर्बानी दी थी। इस आलेख को पढ़ने के द्वारा हम इस बात को जान पायेंगे कि कैसे ये दु:खद शुक्रवार भविष्य में आने वाले संपूर्ण काल के सारे मानवजाति के लिए शुभशुक्रवार के रूप में बदल गया।

और ईस्टर पर्व वो पर्व है जो गुड फ्राइडे के तीसरे दिन आता है जिसे यीशु मसीह के कि जी उठने के रूप में याद किया जाता है। इस दिन प्रभु यीशु मसीह अपने कथन अनुसार अपनी मृत्यु के तीन दिन बाद मृतकों में से जीवित हो उठे।

प्रभु यीशु ने अपने प्राणों को बलिदान क्यों दिया और वो दुबारा जीवित क्यों हो उठे? उन्हों ने स्वयं कहा था।

अच्छा चरवाहा मैं हूँ अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है। (युहन्ना 10.11; पवित्र बाइबिल)

मनुष्य का पुत्र (स्वयं यीशु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों के प्राणों के छुटकारे के लिए अपने प्राण को दे।

(मत्ती 20.28 पवित्र बाइबिल)

इस प्रकार उपरोक्त इन दोनों कथनों में प्रभु यीशु मसीह ने अपने इस बलिदान के उ?द्देश्य को प्रगट किया। परमेश्वर के वचन के अनुसार मनुष्य अपने मन, विचार और कर्मों से कहीं न कहीं और किसी न किसी रूप (प्रकार) से उस परम पवित्र परमात्मा की अदालत में गुनाहगार है जिसका परिणाम दंड या अनंत विनाश है।

इस दंड से मनुष्य को बचाने और उनका उद्धार (छुटकारा) करने हेतु प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं उस दंड को अपने ऊपर ले लिया, और उस हृदय विदारक सलीबी मौत को सह लिया, ये सब सिर्फ इसलिए हुआ क्योंकि उसने संपूर्ण मानवजाति से, इस पृथ्वी पर के हर एक मनुष्य से बेहद प्रेम किया, वो नहीं चाहता कि मनुष्य इस दंड का भागी होकर अनंत मृत्यु को प्राप्त करे। इस अनंत मृत्यु (आत्मा का परमपिता परमेश्वर से अनंतकाल का वियोग) से मनुष्य को अनंत जीवन (हमारी आत्मा का स्वर्गलोक में सदा का निवास) का दान देने हेतु प्रभु यीशु स्वयं मृतकों में से जीवित हो उठे। वे पुनर्जन्म नहीं हुए लेकिन पुनरुत्थित (मरके हमेशा के लिए जीवित) हो गए।

क्योंकि परमात्मा ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने स्वयं (यीशु) को बलिदान होने के लिए दे दिया ताकि जो भी / जो कोई उस पर विश्वास करेगा वो कभी नष्ट (नाश) न होगा परंतु अनंत जीवन पाएगा।

(युहन्ना 3.16 पवित्र शास्त्र: बाइबिल)

अत: ईस्टर के रोज अर्थात् अपनी मृत्यु के तीसरे दिन प्रभु यीशु मसीह जीवित हो उठे ताकि अनंत जीवन (सदा का जीवन) का दान वो दे सके। प्रभु यीशु मसीह जगत का मोक्षदाता है और जो उस पर विश्वास करता है उसे वो अनंत जीवन, परमपिता से संगति, मिलन और पापों की क्षमा और आज़ादी का उपहार देता है।

आर्यिका स्वास्तिभूषण माताजी ने कहा- प्रभु स्तुति भगवान से बातचीत करने का एक तरीका है

केकड़ी (विश्व परिवार)। मानव मात्र को प्रतिदिन प्रभु स्मरण एवं स्तुति अवश्य करनी चाहिए, इससे अपने जीवन मे पूर्व में किए गए खोटे कर्मों का क्षय होता है। संतो की मुख वाणी, प्रभु की मुखवाणी को शब्दों को व्यक्त करने का साधन है जिससे हम ज्ञानार्जन प्राप्त कर सकते हैं। प्रभु स्तुति भगवान से बातचीत करने का एक तरीका है। यह उदगार बोहरा कॉलोनी स्थित श्री नेमिनाथ दिगंबर जैन मंदिर के समीप शिवम वाटिका में गणिनी आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी ने अपने धर्मोपदेश में कहे।

उन्होंने कहा कि तीर्थ यात्रा, तीर्थ वंदना सौभाग्यशाली, पुण्यशाली जीव ही कर सकता है और पुण्य फल को प्राप्त कर लेता है। अत:तीर्थ यात्रा, वंदना करके व आचार्य भगवन व 24 तीर्थंकरों की स्तुति कर मोक्ष मार्ग प्रशस्ति कर सकते है। प्रात: जिनाभिषेक, शांति धारा, जिनेंद्र अर्चना एवं धार्मिक क्रियाएं आर्यिका ससंघ के सानिध्य में संपन्न हुई। शांति धारा करने का सौभाग्य त्रिलोकचंद कमलेश कुमार राजकुमार कालेडा परिवार एवं ओमप्रकाश गोविंद कुमार राजकुमार सदारा परिवार ने प्राप्त किया। भगवान महावीर व आचार्य श्री का चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलन कैलाश चंद्र दीपक कुमार जूनियाँ वालों ने द्वारा किया गया। पाद प्रक्षालन का सौभाग्य ओमप्रकाश ताराचंद प्रेमचंद पुनीत कुमार बड़ला परिवार को प्राप्त हुआ। शास्त्र भेंट करने का चांदमल भेरूलाल गोयल बावड़ी वालों को प्राप्त हुआ। धर्म सभा के प्रारंभ में मंगलाचरण शकुंतला राँवका ने किया। प्रियंका दीदी व माताजी के सानिध्य में आनंद यात्रा संपन्न हुई। धर्म सभा का संचालन कपिल जैन शास्त्री द्वारा किया गया। रमेश बंसल पारस जैन मीडिया प्रभारी से प्राप्त जानकारी।

-**अभिषेक जैन लुहाड़िया**

डॉ. वर्णिका शर्मा ने छत्तीसगढ़ बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया

महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने दी शुभकामनाएं

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग को नया नेतृत्व मिल गया है। वरिष्ठ शिक्षाविद् एवं सामाजिक सरोकारों से जुड़ी डॉ. वर्णिका शर्मा ने आज राजधानी रायपुर स्थित आयोग के कार्यालय में आयोग के अध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। इस अवसर पर वनमंत्री केदार कश्यप, महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े, सांसद रायपुर बृजमोहन अग्रवाल, विधायक किरण देव, धरमलाल कौशिक भी उपस्थित थे। उन्होंने डॉ. शर्मा को पुष्पगुच्छ भेंट कर बधाई दी और उनके कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने डॉ. वर्णिका शर्मा को आयोग के अध्यक्ष पद का कार्यभार ग्रहण करने पर बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने कहा है कि डॉ. शर्मा के नेतृत्व में आयोग बाल संरक्षण की दिशा में प्रभावी ढंग से कार्य करेगा। उन्होंने बच्चों विशेष रूप से नक्सल पीड़ित परिवारों के बच्चों के लिए काफी काम किया है। उनके अनुभवों का लाभ आयोग को मिलेगा। मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि डॉ. वर्णिका शर्मा के अनुभव और नेतृत्व में आयोग बच्चों के अधिकारों की रक्षा, कल्याण और न्याय सुनिश्चित करने की दिशा में नई ऊर्जा के साथ कार्य करेगा। उन्होंने कहा कि बच्चों की सुरक्षा और अधिकारों के संरक्षण में आयोग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है और नई अध्यक्ष के नेतृत्व में यह और अधिक प्रभावी होगी।

संयम जैन का जैन यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत अमेरिका की यात्रा के लिए हुआ चयन

नौगामा (विश्व परिवार)। संयम जैन का JAINA ङ्घश्नह्लह्ढ श्व×ष्द्धड्डठ्ठद्द्र प्रोग्राम के तहत America की यात्रा के लिए चयन होने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की जा रही हैं।

संयम का चयन 450 में से उत्कृष्ट 12 युवा प्रतिभागियों में 4 सिलेक्शन स्टेज के बाद हुआ जिन्हें अब America में Google, Microsoft, Apple, Tesla जैसी कंपनियो के C.E.O. से मिलने का मौका मिलेगा। इसके साथ ही उन्हें America के विभिन्न जैन मंदिरों में दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। वे अपनी इस सफलता का श्रेय अपनी बहन सिद्धि जैन एवं अपनी माँ एव अपने परिवारजनों को देते हैं। आप सब परिवारजन का आशीर्वाद संयम पर ऐसे ही बना रहे।

संयम जैन पुत्र श्री सुभाष जैन (NABARD BANK) का दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित Leadership Conclave में देश के 200 Young Leaders में चयन हुआ है। उन्हें देश की विभिन्न 20 हस्तियों जिनमें शक्तिकांत दास (Former RBI Governor), D.Y. Chandrachud (Former Chief Justice of India), Kiran Bedi, Sunil Bharti Mittal एवं सुष्मिता सेन के विचार सुनने और बात करने का मौका मिलेगा। इस कार्यक्रम का उद्घाटन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा किया जाएगा। यह आयोजन स्कूल ऑफ अल्टीमेट लीडरशिप के द्वारा आयोजित कराया जा रहा है जिसकी नींव प्रधानमंत्री मोदी ने रखी हैं जिसके तहत वह 1 लाख युवाओं को भारतीय राजनीति में लाना चाहते है। संयम जैन को दिल्ली में आयोजित विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग में VVIP कैटिगरी में प्रधानमंत्री जी से मिलने का मौका भी मिला था। जिसके तहत अब उनका देश के 200 युवाओं में चयन हुआ है। संयम इस सफलता का श्रेय अपने पिता श्री सुभाष जैन, माँ साधना जैन और अपनी बहन सिद्धि जैन को देते है।

कालोनियों एवं मानव मंदिर चौक में सफाई देख आवश्यक मरम्मत तथा सफाई व पार्किंग व्यवस्था के आयुक्त ने दिये निर्देश

बरसात के पूर्व नाली नालो की सफाई कराने कहा

राजनांदगांव (विश्व परिवार)। प्रात: कालीन सफाई निरीक्षण की कडी में नगर निगम आयुक्त श्री अतुल विश्वकर्मा आज प्रात: स्वास्थ्य एवं तकनीकि अधिकारी के साथ इंडस्ट्रीयल एरिया, आरा मशीन रोड, बास टाल, बैंक कालोनी एवं पटेल कालोनी के अलावा गंज चौक, मानव मंदिर चौक में सफाई देख कालोनियों में सफाई व्यवस्था दुरूस्त कर बारिश के पूर्व बड़े नाली नालो की सफाई करने के निर्देश स्वास्थ्य अधिकारी श्री राजेश मिश्रा को दिए। वही उप अभियंता श्री अशोक देवांगन को तिरूपति काम्पलेक्स के पार्किंग के लिये दुकानदारों से बात कर आरा मशीन रोड मरम्मत व डामरीकरण के लिये प्रस्ताव तैयार करने कहा।

सफाई निरीक्षण में आयुक्त श्री विश्वकर्मा स्पीकर हाउस रोड, आरा मशीन रोड में साफ सफाई देख वार्ड प्रभारी को रोड एवं बैक व पटेल कालोनी में साफ सफाई कर कचरा उठाने, सडक के दोनो ओर साफ सफाई कराने तथा स्पीकर हाउस के बाजू यूरिनल की सफाई कराने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि कालोनियों में साफ सफाई के अलावा डोर टू डोर कचरा संग्रहण में गिला सुखा कचरा अलग अलग देने समझाईस देवे तथा सत प्रतिशत यूजर चार्ज वसूली करे। उन्होंने उक्त रोड मरम्मत व डामरीकरण के लिये प्रस्ताव तैयार करने तकनीकि अधिकारी से कहा। उन्होंने इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.ई.रोड हनुमान मंदिर के बाजू गाडी सर्विसिंग सेन्टर का नल कनेक्शन काटने, अम्बेडकर चौक श्रमिक भवन के पास अतिक्रमण हटाने निर्देशित किए। आयुक्त ने गंज चौक में साफ सफाई देख निगम काम्पलेक्स के बाजू पार्किंग स्थल में समुचित साफ सफाई कराने तथा गाडी वालो को व्यवस्थित वाहन रखने व साफ सुथरा रखने समझाईस देने कहा। उन्होंने नव निर्मित सामुदायिक भवन का निरीक्षण कर तकनीकि अधिकारी को आवश्यक दिशा निर्देश दिये। मानव मंदिर चौक में सफाई देख वार्ड प्रभारी से कहा कि व्यस्तम चौक के साथ साथ शहर का प्रमुख मार्ग है, जिसे ध्यान मे रखकर समुचित साफ सफाई करावे।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर शुक्रवार 18 अप्रैल 2025

संक्षिप्त समाचार

बुजुर्ग महिला को हाथी ने कुचला

बलरामपुर(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के बलरामपुर जिले में हाथियों का आतंक थमने का नाम नहीं ले रहा है। ताजा मामला वाड्रफनगर वन परिक्षेत्र के रजखेता गांव का है, जहां फेकली जंगल में महुआ बीनने गई एक बुजुर्ग महिला की हाथी के हमले में मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। बताया जा रहा है कि जंगल में महुआ बीनने गई महिला की अचानक हाथी से मुठभेड़ हो गई। गुस्साए हाथी ने महिला को बुरी तरह से पटक दिया, जिससे उसका शरीर क्षत-विक्षत हो गया। घटना के बाद पूरे गांव में दहशत का माहौल है। हादसे की सूचना मिलते ही वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और ग्रामीणों को सतर्क रहने की समझाइश दी जा रही है। लगातार हो रहे ऐसे हमलों से ग्रामीणों में डर गहराता जा रहा है और वे जंगल जाने से घबरा रहे हैं। वन विभाग की ओर से हाथियों की गतिविधियों पर नजर रखने की कोशिश की जा रही है।

तीन लाख के इनामी दो खूंखार नक्सली ढेर, हथियार बरामद

कोण्डागांव(विश्व परिवार)। कोंडागांव जिले के मरकाम पाल क्षेत्र में सुरक्षा बलों को बड़ी सफलता हाथ लगी है। 15 अप्रैल की रात हुई मुठभेड़ में सुरक्षा बलों ने दो खूंखार नक्सलियों को मार गिराया। यह मुठभेड़ कोंडागांव-नारायणपुर सीमा से सटे किलम-बरगुम जंगल इलाके में हुई, जहाँ माओवादियों की मौजूदगी की सूचना पर डीआरजी और बस्तर फाइटर्स की टीम माओवादी विरोधी अभियान पर निकली थी।पुलिस अधीक्षक अक्षय कुमार ने पुष्टि की कि मुठभेड़ में मारे गए नक्सलियों की पहचान पूर्वी बस्तर डिवीजन के कुख्यात माओवादी कमांडर डीवीसीएम हलदर और एसीएम रामे के रूप में हुई है। इन पर क्रमशः 8 लाख और 5 लाख का इनाम घोषित था। इस प्रकार सुरक्षा बलों ने कुल 13 लाख के इनामी नक्सलियों को मार गिराया है। मुठभेड़ स्थल से एक एके-47 राइफल, अन्य हथियार, विस्फोटक सामग्री और माओवादी दस्तावेज बरामद किए गए हैं। फिलहाल इलाके में सर्च ऑपरेशन जारी है।

नशे की लत से बच्चों को बचाने नशा मुक्ति अभियान शुरू

बलौदाबाजार(विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक सोनी के मार्गदर्शन में एक युद्ध, नशे के विरूद्ध अभियान को जिले में सघन रूप से एक सुरक्षित, स्वच्छ और शिक्षित भविष्य देने की मंशा से अप्रैल माह में विशेष अभियान संचालित किया जा रहा है। इसमें हॉट- स्पाट स्थलों पर नशावृत्ति में लिप्त बालकों को चिन्हांकन एवं उन्हें नशे से दूर रहने की समझाईश दी जा रही है। इसी तारतम्य में जिला कार्यक्रम अधिकारी टिक्केन्द्र जाटवार के नेतृत्व में 15 अप्रैल से 30 अप्रैल 2025 तक चलने वाले अभियान के प्रारंभिक चरण में जिला बाल संरक्षण इकाई, श्रम विभाग, खाद्य एवं औषधि विभाग तथा पुलिस विभाग की संयुक्त टीम द्वारा भाटापारा परिक्षेत्र में सघन भ्रमण कर जनसमुदाय को नशावृत्ति के दुष्परिणामों के बारे में जानकारी प्रदान की गई। बालकों में ड्रग्स और अन्य मादक पदार्थों के उपयोग की बढ़ती प्रवृत्ति एवं उससे पूरे परिवार-समाज पर होने वाले दूरगामी दुष्प्रभावों के प्रति समुदाय को टीम के द्वारा आगाह किया गया। संयुक्त अभियान टीम के द्वारा भाटापारा परिक्षेत्र में 2 बालिकाओं एवं 1 बालक को भिक्षावृत्ति एवं अपशिष्ट संग्रहण में संलिप्त पाया। बच्चों की सुरक्षा और पुनर्वास को ध्यान में रखते हुए, उन्हें बाल कल्याण समिति में प्रस्तुत किए जाने के निर्देश दिए गए हैं।

विधायक एवं कलेक्टर ने ली जीवनदीप समिति की बैठक, अस्पताल व्यवस्था सुधारने दिए आवश्यक निर्देश

गरियाबंद (विश्व परिवार)। जिला अस्पताल सभाकक्ष में आज कलेक्टर दीपक अग्रवाल की अध्यक्षता में जीवनदीप समिति की कार्यकारिणी बैठक आयोजित हुई। बैठक में अस्पताल की व्यवस्थाओं, सुविधाओं और समिति के विभिन्न कार्यों पर विस्तार से चर्चा की गई।

कलेक्टर ने समिति के बजट, आय-व्यय विवरण एवं कर्मचारियों पर होने वाले व्यय की जानकारी लेते हुए विगत दो वर्षों के लंबित ऑडिट कार्य को शीघ्र पूर्ण कराने के निर्देश दिए। उन्होंने समिति के कर्मचारियों को निर्धारित यूनिफार्म में ड्यूटी करने और मोबाइल आधारित फेस रीडिंग बायोमैट्रिक उपस्थिति व्यवस्था जल्द लागू करने के निर्देश भी दिए। बैठक में अस्पताल की सुविधाओं को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से कई अहम निर्णय लिए गए, जिनमें फायर एग्जिट गेट निर्माण, बायोमेडिकल वेस्ट निपटान के लिए चिन्हित स्थल, सीसीटीवी कैमरा की स्थापना, नए कर्मचारियों की भर्ती तथा दवाइयों और लैब सामग्री की खरीदी शामिल हैं। उन्होंने सीआरएम टीम के कार्यों के भुगतान में विलंब न करने के भी निर्देश दिए। इस अवसर पर विधायक रोहित साहू ने अस्पताल में मरीजों को बेहतर सुविधाएं देने की बात कहते हुए साफ-सफाई, पार्किंग, सुरक्षा, ऑक्सीजन प्लांट की सक्रियता और पर्याप्त रोशनी सुनिश्चित करने को कहा। उन्होंने इलाज में किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं बरतने की हिदायत दी।

कलेक्टर ने अस्पताल परिसर में संचालित मेडिकल स्टोर्स के संचालन की समीक्षा करते हुए 24 घंटे दवा दुकानें संचालित करने और सभी आवश्यक दवाइयां पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराने के निर्देश दिए।

बैठक में सीएमएचओ डॉ. गार्गी यदु पाल, सिविल सर्जन डॉ. टी.सी. पात्रा, डॉ. हरीश चौहान, डॉ. गजेन्द्र ध्रुव सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी, समिति सदस्य एवं अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

गरियाबंद में एनडीपीएस एक्ट पर एक दिवसीय कार्यशाला का सफल आयोजन

लोक अभियोजक अधिकारी रामगोपाल दूबे ने दिया महत्वपूर्ण प्रशिक्षण

गरियाबंद (विश्व परिवार)। पुलिस अधीक्षक कार्यालय के सभा कक्ष में एनडीपीएस एक्ट की प्रभावी विवेचना हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला गरियाबंद पुलिस अधीक्षक निखिल राखेचा के निर्देशन व मार्गदर्शन में आयोजित की गई, जिसमें जिले के सभी थानों से आए विवेचकों ने भाग लिया। कार्यशाला में लोक अभियोजक अधिकारी रामगोपाल दूबे ने एनडीपीएस एक्ट के अंतर्गत दर्ज प्रकरणों की विवेचना में बरती जाने वाली सावधानियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने पीपीटी के माध्यम से घटनास्थल की कार्यवाही, जप्ती, गिरफ्तारी, गवाहों के कथन दर्ज करने तथा फोटो एवं वीडियोग्राफी की

अनिवार्यता को समझाया। प्रशिक्षण सत्र के दौरान विवेचकों द्वारा अपनी-अपनी विवेचनाओं में आने वाली समस्याओं को सामने रखा गया, जिनका तत्काल समाधान कर उन्हें उचित मार्गदर्शन प्रदान किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य विवेचकों को तकनीकी जानकारी प्रदान कर एनडीपीएस एक्ट के तहत दर्ज प्रकरणों की विवेचना को और अधिक मजबूत व न्यायोचित बनाना था।

विधायक एवं कलेक्टर ने जिला चिकित्सालय का किया निरीक्षण, मरीजों से जाना हालचाल

गरियाबंद (विश्व परिवार)। राजिम विधायक रोहित साहू एवं कलेक्टर दीपक कुमार अग्रवाल ने आज जिला चिकित्सालय का निरीक्षण कर वहां की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने ओपीडी, महिला एवं पुरुष वार्ड, प्रसूति वार्ड, लैब सहित विभिन्न विभागों का दौरा किया और मरीजों से सीधे बातचीत कर स्वास्थ्य सेवाओं की जानकारी प्राप्त की।

निरीक्षण के दौरान मरीजों ने बताया कि अस्पताल में उन्हें समय पर दवाई, भोजन और चिकित्सकीय सुविधा प्राप्त हो रही है। ग्राम तांवरबाहरा की श्रीमती राजबाई साहू और श्रीमती बुधिया बाई, ग्राम गोंदलाबाहरा की रत्ना मरकाम सहित अन्य मरीजों ने कहा कि चिकित्सकों और नर्सों का व्यवहार सराहनीय है और समय पर इलाज मिलने से उनकी स्थिति में सुधार हो रहा है। विधायक एवं कलेक्टर ने अस्पताल की साफ-सफाई, भोजन की गुणवत्ता, दवाओं की उपलब्धता एवं स्टाफ की उपस्थिति का भी अवलोकन किया। उन्होंने चिकित्सकों को मरीजों के बेहतर उपचार के लिए निर्देशित किया और स्वास्थ्य अधिकारियों को सभी मरीजों को गुणवत्तापूर्ण एवं सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

कलेक्टर ने जन औषधि केन्द्र को चौबीसों घंटे चालू रखने के निर्देश दिए, ताकि आम जनता को सस्ती एवं गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाएं उपलब्ध हो सकें। इसके साथ ही उन्होंने इस सुविधा के व्यापक प्रचार-प्रसार पर जोर दिया।

निरीक्षण के दौरान सीएमएचओ डॉ. गार्गी यदु पाल, सिविल सर्जन डॉ. टी.सी. पात्रा, डॉ. हरीश चौहान, डॉ. गजेन्द्र ध्रुव सहित चिकित्सालय का स्टाफ उपस्थित रहा।

उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा सर्व ब्राह्मण समाज गरियाबंद जिला सम्मेलन में होंगे शामिल

गरियाबंद (विश्व परिवार)। सर्व ब्राह्मण समाज गरियाबंद द्वारा आयोजित होने वाले जिला सम्मेलन में छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री एवं गृह मंत्री विजय शर्मा शामिल होंगे। समाज के पदाधिकारियों ने रायपुर में उपमुख्यमंत्री से सौजन्य भेंट कर उन्हें सम्मेलन में आमंत्रित किया, जिसे उन्होंने सहजता से स्वीकार कर लिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ललित मिश्रा के नेतृत्व में हुए इस प्रतिनिधिमंडल में जिला अध्यक्ष अश्वनी तिवारी, उपाध्यक्ष बसंत त्रिवेदी, तहसील अध्यक्ष बसंत मिश्रा, युवा मंच प्रदेश सचिव सागर शर्मा, गोविंद तिवारी, महेंद्र द्विवेदी, देवेंद्र शर्मा, सुभाष शर्मा, धीरेंद्र शर्मा, धर्मेंद्र शर्मा, शरद शर्मा, सुधा शर्मा, मीनाक्षी शर्मा सहित अनेक समाजजन उपस्थित थे। सर्व ब्राह्मण समाज के इस सम्मेलन को लेकर समाजजनों में उत्साह का माहौल है, और उपमुख्यमंत्री की सहमति से कार्यक्रम की गरिमा और भी बढ़ गई है।

दंतेवाड़ा के युवाओं को सशक्त बनाने की पहल

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में नवाचार की श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए, दंतेवाड़ा जिला प्रशासन ने एक और प्रभावशाली पहल के तहत स्थानीय युवाओं को डिजिटल दुनिया से जोड़ने और उन्हें रोजगारोन्मुखी कौशल प्रदान करने के उद्देश्य से, नवगुरुकुल संस्था के सहयोग से शैक्षणिक सत्र 2025, 26 के लिए प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ कर दी है। यह कार्यक्रम पूर्णतः निःशुल्क एवं आवासीय है, जिसमें छात्रों को कंप्यूटर प्रोग्रामिंग, व्यावसायिक और पेशेवर कौशलों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। उल्लेखनीय है कि नवगुरुकुल का यह कार्यक्रम विशेष रूप से उन युवाओं के लिए डिजाइन किया गया है जो सीमित आर्थिक संसाधनों के बावजूद कोडिंग एवं बिजनेस एजुकेशन के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं। इस प्रशिक्षण की अवधि 18 से 24 महीने की होगी, जिसमें छात्रों को निःशुल्क हॉस्टल, लैपटॉप, इंटरनेट और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जाएगा। ज्ञात हो कि नवगुरुकुल द्वारा इसके पाठ्यक्रम को इस प्रकार से तैयार किया गया है कि प्रतिभागी प्रशिक्षण पूर्ण करने के बाद आत्मविश्वास के साथ रोजगार की दुनिया में प्रवेश कर सकें। मालूम हो कि अब तक दंतेवाड़ा जिले के शत प्रतिशत से अधिक छात्र इस कार्यक्रम में शामिल हो चुके हैं, जिनमें से 52 से अधिक छात्र देश की प्रतिष्ठित कंपनियों में चयनित होकर रोजगार की दृष्टि से स्थापित हो चुके है। विशेष बात यह है कि नवगुरुकुल के इस प्रशिक्षण सत्र में केवल मौलिक अंग्रेजी ज्ञान पर्याप्त रखी गयी है। इस प्रशिक्षण सत्र में सभी युवक-युवतियों अपना दाखिला ले सकते है। हालांकि महिलाओं को इस में प्राथमिकता दी जाएगी, और अधिकतम आयु की कोई सीमा नहीं है। प्रवेश प्रक्रिया पारदर्शी और समावेशी रखी गई है। इसके लिए सबसे पहले एक स्क्रीनिंग टेस्ट आयोजित किया जाएगा, जो 8वीं कक्षा स्तर के गणितीय विषयों जैसे कि पैटर्न्स, प्रतिशत, कार्य और समय, तथा रैखिक समीकरणों पर आधारित होगा। उम्मीदवार नवगुरुकुल कैंपस में आकर यह परीक्षा दे सकते हैं या फिर ऑनलाइन आवेदन भी कर सकते हैं जो उम्मीदवार स्क्रीनिंग में उत्तीर्ण होंगे, उनकी सोचने की क्षमता, सीखने का दृष्टिकोण, और टीम के साथ संवाद जैसे गुणों का आकलन किया जाएगा। यह परीक्षण नवगुरुकुल कैंपस, युवा बीपीओ एजुकेशन सिटी, जवांगा, दंतेवाड़ा में सोमवार से शनिवार, प्रातः 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक आयोजित किए जा रहे हैं। प्रवेश प्रक्रिया 17 अप्रैल 2025 से प्रारंभ हो चुकी है और यह सीटें भरने तक, पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर जारी रहेगी। पात्रता के लिए आवेदक की न्यूनतम आयु 17 वर्ष होनी चाहिए (अधिकतम आयु की कोई सीमा नहीं है) और उसके परिवार की वार्षिक आय रूपये 5 लाख से कम होनी चाहिए। सभी चयनित प्रतिभागियों को यह प्रशिक्षण और सुविधाएं पूर्णतः निःशुल्क प्रदान की जाएंगी, ताकि किसी भी आर्थिक रूप से कमजोर युवा को पीछे न रहना पड़े। इसके लिए अधिक जानकारी के लिए कॉल या व्हाट्सएप 8103248471 6265158142 से संपर्क किया जा सकता है। इसके अलावा इच्छुक युवक युवतियां ऑनलाइन आवेदन हेतु लिंक https://admissions-navgurukul-org/partnerLanding/dantewada का अवलोकन कर सकते है।

बस्तर जिला कांग्रेस कमेटी ने जलसंकट में जूझ रही बस्तर की जीवनदायिनी इंद्रावती नदी, बस्तर के खनिज संसाधनों के निजीकरण व Ed.CBI के दुरुपयोग के खिलाफकाले झंडे साथ मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय व केंद्र की भाजपा सरकार का किया विरोध प्रदर्शन....

देश के नेता राहुल गांधी, सोनिया गांधी पर आरोप पत्र दाखिल कर सिर्फबदले की भावना से राजनीति कर रही केंद्र की मोदी सरकार...

इंद्रावती नदी में तत्काल पानी व मटनार,देउर गांव में बैराज,रावघाट रेल परियोजना करें जल्द से जल्द शुरू करे भाजपा सरकार..कांग्रेस पार्टी लड़ेगी जनता लड़ती रहेगी...

जगदलपुर (विश्व परिवार)। आज संभाग मुख्यालय जगदलपुर में बस्तर जिला कांग्रेस कमेटी शहर ग्रामीण के संयुक्त नेतृत्व में जलसंकट में जूझ रही बस्तर की जीवनदायिनी इंद्रावती नदी,बस्तर के खनिज संसाधनों के निजीकरण व देश के लोकप्रिय नेता राहुल गांधी , सोनिया गांधी पर आरोप पत्र दाखिल कर श्वष्ठ.ष्टङ्क्क के दुरुपयोग के खिलाफ एवं इंद्रावती नदी में तत्काल पानी छोड़ने व मटनार,देउर गांव में बैराज बनाने सहित रावघाट रेल परियोजना जल्द से जल्द शुरू करने की मांग को लेकर कांग्रेस पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं द्वारा भाजपा सरकार में प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय व केंद्र की भाजपा सरकार के खिलाफ काले झंडे के साथ विरोध प्रदर्शन किया गया...

शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष सुशील मौर्य ने बताया,प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और भाजपा सरकार इंद्रावती विकास प्राधिकरण के कार्यालय में ताला लगाकर अपनी उद्योगिग् नीति हेतु बैठक शहर के आलीशान होटल में करती है, भाजपा की सरकार बस्तर के खनिज सम्पदा को अपने पूंजीपति मित्रो सौंपने जा रही है,बस्तर की जीवनदायिनी इंद्रावती नदी के सूखने के कगार पर है..बस्तर के आदिवासियों की जल, जंगल,जमीन को उजाड़ कर बस्तर की सुंदरता के साथ साथ खिलवाड़ यह सरकार कर रही है..एक बार फिर से बस्तर के लोंगों का लोकतांत्रिक अधिकार खतरे में है। हमारे जल, जंगल, जमीन हमारी संस्कृति पर सरकार और सरकार के पूंजीपति मित्रों की नजर लग चुकी है।आज बस्तर की प्राणदायिनी इंद्रावती नदी पूरी तरह से सूख चुकी है, पिछले कई दिनों से इंद्रावती से सटे किसान इंद्रावती नदी में पानी की मांग को लेकर आंदोलनरत हैं, परंतु डबल इंजन की सरकार किसानों की मांग को अनसुना कर रही है,विगत 14

महीना से राज्य में भाजपा की सरकार है, जल संसाधन मंत्री बस्तर से ही आते हैं भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष बस्तर से हैं जो कि स्वयं जगदलपुर के विधायक हैं बावजूद इसके केंद्र सरकार द्वारा स्वीकृत 9 बड़े प्रोजेक्ट आज तक इंद्रावती नदी में इस सरकार ने आरंभ नहीं करा पाया है वही उड़ीसा सीमा से चित्रकूट जलप्रपात के बीच 10 छोटे एनीकेट बने हैं जिनमें से वर्तमान स्थिति में चार एनीकेट पूरी तरह से सूख चुके हैं, मटनार बैराज और देउरगांव बैराज को प्रशासनिक स्वीकृति ये सरकार नहीं दे रही है और ना ही ओडिशा सरकार पर खातिगुड़ा डैम से पानी छोड़ने दबाव बनाया जा रहा है भाजपा सरकार बताए रावघाट रेल परियोजना , मटनार और देउरगांवँ बैराज कब बनेगा? वही कांग्रेस के विरोध पश्चात शहर के आलीशान होटल में होने वाली समीक्षा बैठक को जिला कार्यालय कलेक्ट्रेट में किया गया और आनन फानन में की गई समीक्षा बैठक में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की तस्वीर लगाना ही भूल गए...!!

शहर कांग्रेस अध्यक्ष श्री मौर्य ने कहा आज कुल मिलाकर भाजपा सरकार सिर्फ सत्ता की लोलुपता में मस्त है आज भाजपा सरकार की लापरवाही से इन्द्रावती और बस्तर दोनों बहुत बड़े संकट में है..आज हाथ में काले झंडे लिए कांग्रेस पार्टी द्वारा शांतिपूर्ण आंदोलन करने निकले कार्यकर्ताओं को बलपूर्वक रोका गया और अलग अलग थानों में नज़रबंद किया गया जिसका कांग्रेस पार्टी पुरजोर विरोध करती है..अगर सरकार हमारी मांग नहीं मानेगी तो आगामी समय में उग्र आंदोलन किया जाएगा ... श्री मौर्य ने आगे वही भाजपा सरकार लगातार एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है हाल ही में श्रीमती सोनिया गांधी, श्री राहुल गांधी और हमारी पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेताओं के खिलाफ श्वष्ठ द्वारा आरोप पत्र दाखिल करना राज्य की शक्ति का एक भयावह दुरुपयोग दर्शाता है। यह लोकतांत्रिक विपक्ष के विचार पर सीधा हमला है, सत्तारूढ़ शासन द्वारा राजनीतिक धमकी का एक भद्दा प्रयास है जो पूरी तरह से पागल हो चुका है। यह बदले की राजनीति के अलावा और कुछ नहीं है।कांग्रेस पार्टी और उसका नेतृत्व कभी चुप नहीं रहेगा।इस दौरान प्रेमशंकर शुक्ला, रेखचंद जैन, अतिरिक्त शुक्ला, हनुमान द्विवेदी,कविता साहू, रविशंकर तिवारी,जाहिद हुसैन, सेमीयल नाथ,सुषमा सुता, शहर अध्यक्ष महिला कांग्रेस लता निषाद, चम्पा ठाकुर, ब्लॉक अध्यक्ष सहदेव नाग, अल्पसंख्यक अध्यक्ष रोजबीन दास,यूंका अध्यक्ष अजय बिसाई, आदित्य बिसेन आदि उपस्थित थे।

व्यापार समाचार

ब्रिजस्टोन इंडिया ईवी-रेडी टायरों के साथ बाजार विस्तार की तैयारी में

नईदिल्ली(एजेंसी)। ब्रिजस्टोन इंडिया, यात्री और वाणिज्यिक वाहनों के लिए टायर निर्माता कंपनी, अपनी ट्यूरांज़ा 6द्ब और ड्यूलर ऑल टेरेन (ढ्ढ/ञ्ज) 002 टायर श्रृंखला का विस्तार करने के लिए तैयार है। कंपनी विभिन्न वाहनों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए इन लोकप्रिय श्रेणियों में नए आकार पेश करेगी। कंपनी के कार्यकारी निदेशक राजर्षि मोइत्रा के अनुसार, ट्यूरांज़ा 6द्ब टायर एसयूवी, सीयूवी, सेडान और हैचबैक जैसे वाहनों के लिए डिज़ाइन किया गया है और वर्तमान में 14 से 20 इंच के आकार में उपलब्ध है। वहीं, ड्यूलर ढ्ढ/ञ्ज 002 विशेष रूप से 4ङ्ग4 वाहनों के लिए बनाया गया है। मोइत्रा ने बताया कि कंपनी ने पिछले साल इन श्रेणियों में कुछ आकार लॉन्च किए थे और अब 2025 में मई से अक्टूबर के बीच कई नए विकल्प पेश किए जाएंगे। भारतीय टायर बाजार लगभग 4.4 करोड़ यूनिट का है, जिसमें ओईएम (ओरिजिनल इक्विपमेंट मैन्युफैक्चरर) खंड में 2 करोड़ यूनिट और आफ्टरमार्केट खंड में 2.4 करोड़ यूनिट शामिल हैं। ब्रिजस्टोन इंडिया का आफ्टरमार्केट खंड में 20त्न बाजार हिस्सेदारी का दावा है और यह मारुति सुजुकी, हुंडई, टाटा मोटर्स और महिंद्रा जैसे प्रमुख कार निर्माताओं के साथ काम करती है। मोइत्रा ने अगले पांच वर्षों में आफ्टरमार्केट खंड में 6-8त्न वार्षिक वृद्धि का अनुमान जताया और कहा कि कंपनी अपनी 20त्न हिस्सेदारी बनाए रखने और उससे आगे बढ़ने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) की बढ़ती बिक्री के साथ, ईवी-रेडी टायरों की मांग भी बढ़ रही है। मोइत्रा ने कहा कि ट्यूरांज़ा 6द्ब एक ईवी-रेडी टायर है और कंपनी इस साल के अंत तक अपने ईवी टायर पोर्टफोलियो का विस्तार करेगी। उन्होंने बताया कि ईवी वाहन पारंपरिक वाहनों से भारी होते हैं, जिसके कारण ईवी टायरों में अधिक टॉर्क सहने की क्षमता, कम शोर और कम रोलिंग प्रतिरोध की आवश्यकता होती है। 1996 में स्थापित ब्रिजस्टोन इंडिया की इंदौर और पुणे में दो उत्पादन इकाइयां हैं, जिनकी कुल दैनिक उत्पादन क्षमता 30,000 टायर है। कंपनी ने उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए 2024 में 85 मिलियन डॉलर के निवेश की घोषणा की है, जिससे 2029 तक पुणे संयंत्र की क्षमता में प्रति दिन 3,000 अतिरिक्त टायर की वृद्धि होगी। ब्रिजस्टोन इंडिया के वर्तमान में 3,200 चैनल पार्टनर हैं और कंपनी टियर 2, टियर 3 और टियर 4 शहरों में अपने नेटवर्क का विस्तार करने का लक्ष्य लेकर चल रही है।

गूड न्यूज: अब चलती ट्रेन में भी यात्री निकाल सकेंगे पैसे

नई दिल्ली(एजेंसी)। अक्सर लंबी दूरी की यात्रा के दौरान नकदी की कमी महसूस होती है। यात्रियों की इसी परेशानी को ध्यान में रखते हुए भारतीय रेलवे ने एक अनूठी पहल की है। अब ट्रेन में सफर करने वाले यात्री भी आसानी से ्रञ्जरूसे पैसे निकाल सकेंगे। रेलवे ने यात्रियों की सुविधा के लिए चलती ट्रेन में ्रञ्जरूसेवा शुरू करने की तैयारी कर ली है और फिलहाल इसका ट्रायल किया जा रहा है। रेलवे ने इस सुविधा को प्रायोगिक तौर पर नांदेड़ से छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस तक चलने वाली पंचवटी एक्सप्रेस में शुरू किया है। इस ट्रेन में एक एटीएम मशीन लगाई गई है, जिससे यात्री अपनी यात्रा के दौरान ही नकदी निकाल सकेंगे। यह नई सुविधा उन यात्रियों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद साबित होगी जो ऑनलाइन भुगतान के बजाय नकद में लेनदेन करते हैं। साथ ही, उन लोगों को भी राहत मिलेगी जिन्हें ट्रेन में ऑनलाइन पेमेंट की सुविधा न होने या नकदी खत्म हो जाने के कारण असुविधा होती थी। अब उन्हें जरूरत पड़ने पर तुरंत पैसे निकालने के लिए स्टेशन का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। रेलवे अधिकारी इस ट्रायल के दौरान यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि चलती ट्रेन में ्रञ्जरूमशीन सुचारू रूप से काम करे। नेटवर्क कनेक्टिविटी, सुरक्षा, गोपनीयता, यात्रियों की सुविधा और अन्य आवश्यक पहलुओं पर बारीकी से ध्यान दिया जा रहा है। यदि यह परीक्षण सफल होता है, तो रेलवे भविष्य में अन्य ट्रेनों में भी ्रञ्जरूलगाने की योजना बना सकता है। यह सुविधा लंबी दूरी की यात्रा करने वाले और अधिक नकदी साथ लेकर चलने से बचने वाले यात्रियों के लिए भी काफी उपयोगी सिद्ध होगी। ट्रेनों में अक्सर जेबकतरों और चोरी का खतरा बना रहता है, ऐसे में ऑनबोर्ड ्रञ्जरूकी सुविधा से यात्री अपनी यात्रा को अधिक सुरक्षित और आरामदायक बना सकेंगे।

अमेरिका से तनातनी बढ़ी: चीन ने बोइंग विमानों की डिलीवरी रोकी, एयरलाइनों को नए विमान न खरीदने के निर्देश

नई दिल्ली(एजेंसी)। अमेरिका और चीन के बीच गहराते व्यापारिक तनाव का असर अब विमानन उद्योग पर भी दिखने लगा है। चीन ने अमेरिकी विमान निर्माता कंपनी बोइंग से नए विमानों की डिलीवरी लेने पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है। इसके साथ ही, चीनी सरकार ने अपनी सभी एयरलाइनों को स्पष्ट निर्देश दिया है कि वे अब बोइंग से न तो कोई नया विमान खरीदें और न ही अमेरिका से विमानों से जुड़े उपकरण या कलपुर्जे मंगाएं। यह कड़ा कदम अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा चीनी आयातों पर 145 प्रतिशत तक का भारी टैरिफ लगाने के फैसले के बाद उठाया गया है। इस टैरिफ वॉर के जवाब में चीन ने भी अमेरिकी उत्पादों पर 125 प्रतिशत तक का जवाबी शुल्क लगाने की घोषणा की थी। इन नए शुल्कों के कारण अमेरिका से आने वाले विमानों और उनके पार्ट्स की लागत चीन में दोगुनी से भी ज्यादा हो गई है, जिससे चीनी एयरलाइनों के लिए बोइंग विमान खरीदना और संचालित करना आर्थिक रूप से अव्यवहारिक हो गया है। ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट के अनुसार, चीन अब उन एयरलाइनों की मदद करने के तरीके तलाश रहा है जिन्होंने पहले से बोइंग विमान लीज पर ले रखे हैं और अब बढ़ी हुई लागत का सामना कर रही हैं। चीन का यह फैसला बोइंग के लिए एक गंभीर चुनौती है, क्योंकि चीन दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते विमानन बाजारों में से एक है। अनुमान है कि अगले 20 वर्षों में वैश्विक विमानों की कुल मांग का लगभग 20 प्रतिशत हिस्सा अकेले चीन से आएगा। साल 2018 में बोइंग ने जितने विमान बेचे थे, उनमें से करीब एक-चौथाई (25त्न) चीन को ही डिलीवर किए गए थे। हालांकि, हाल के वर्षों में अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध और बोइंग के विमानों की गुणवत्ता को लेकर उठे सवालों (खासकर 2019 में दो घातक दुर्घटनाओं के बाद 737 मैक्स विमानों की ग्राउंडिंग, जिसमें चीन ने सबसे पहले रोक लगाई थी) के चलते चीन ने बोइंग को कोई बड़ा नया ऑर्डर नहीं दिया था।

11 करोड़ अब होंगे वसूल, एलएसजी की टीम से जुड़ा 156.7 किमी प्रति घंटे की रफ्तार वाला गेंदबाज

लखनऊ(एजेंसी)। दाएं हाथ के तेज गेंदबाज मयंक यादव की लखनऊ सुपर जायंट्स (आईपीएल) में वापसी की खबर क्रिकेट प्रशंसकों के लिए उत्साहजनक हैं. मयंक, जो अपनी रफ्तार भरी गेंदबाजी के लिए जाने जाते हैं, चोट के कारण कुछ समय तक बाहर थे. अब उनकी वापसी से आईपीएल 2025 में शानदार प्रदर्शन कर रही आईपीएल की टीम की गेंदबाजी इकाई को मजबूती मिलने की उम्मीद है. लखनऊ सुपर जायंट्स के तेज गेंदबाज मयंक यादव की चोट से रिकवरी हो गई है. एलएसजी ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो पोस्ट कर इसकी जानकारी दी है. मयंक यादव आईपीएल 2024 में शानदार प्रदर्शन के बाद चोटिल हो गए थे. उन्होंने उस सीजन में केवल 4 मैच खेले, जिसमें 12.14 की औसत और 6.98 की इकोनॉमी रेट से 7 विकेट लिए. उनकी सबसे तेज गेंद 156.7 किमी/घंटा थी, जो उस सीजन में किसी भारतीय गेंदबाज की सबसे तेज गेंद थी. ताजा जानकारी के अनुसार, मयंक चोट से पूरी तरह से उबर गए हैं और बीसीसीआई की मेडिकल टीम ने उन्हें खेलने के लिए हरी झंडी दे दी है. वह 15 अप्रैल को आईपीएल के साथ जुड़ चुके हैं. मयंक की वापसी की संभावना 14 अप्रैल 2025 को चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ खेले गए मैच में थी लेकिन वह टीम से नहीं जुड़ पाए. एलएसजी को अपना अगला मुकाबला 19 अप्रैल को जयपुर में राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ खेलना है. इस मैच से मयंक यादव के वापसी की उम्मीद जताई जा रही है. हालांकि, उनकी भागीदारी की आधिकारिक पुष्टि होना अभी बाकी है. मयंक को आईपीएल 2025 के लिए आईपीएल ने 11 करोड़ रुपये में रिटेन किया है, जो उनकी अहमियत को दर्शाता है. वह स्थायी रूप से टीम का हिस्सा हैं, और उनकी जगह किसी और को शामिल नहीं किया गया है. आईपीएल मयंक के करियर को दीर्घकालिक रूप से मजबूत करने के लिए सावधानी बरत रहा है. टीम के मेंटर जहीर खान ने पुष्टि की है कि मयंक की फिटनेस और प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए नेशनल क्रिकेट एकेडमी के साथ मिलकर काम किया गया है.

चहल की फिरकी में फंसा केकेआर, पंजाब ने 111 रन डिफेंड करके रचा इतिहास

चंडीगढ़(एजेंसी),। पंजाब ने आईपीएल इतिहास में अब तक के सबसे कम स्कोर का बचाव करके इतिहास रच दिया है. मुल्लांपुर में खेले गए आईपीएल 2025 के 31 वें मैच में पंजाब ने पहले 15.3 ओवर में 111 रन बनाए और फिर केकेआर को 15.1 ओवर में 95 रन पर ढेर कर दिया. पंजाब की जीत में अहम भुमिका निभाने वाले चहल ने 4 ओवर में 28 रन देकर 4 विकेट झटके, जिसकी वजह से उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच का अवॉर्ड दिया गया. 111 रनो का बचाब करने के लिए पंजाब के गेंदबाजों ने शानदार गेंदबाजी की, युजवेंद्र चहल के अलावा तेज गेंदबाज मार्को जानसन ने तीन विकेट चटकाए और बाकी गेंदबाजों ने एक एक विकेट हासिल किए, जिसकी वजह से पंजाब आईपीएल के इतिहास में सबसे कम स्कोर का बचाव करने में कामयाब रहा. 112 रनों का पीछा करते हुए, कोलकाता ने अपने दोनों सलामी बल्लेबाज सुनील नरेन (5) और क्विंटन डी कॉक (2) को जल्दी-जल्दी खो दिया. उसके बाद कप्तान अजिंक्य रहाणे और अंगकृष रघुवंशी ने सतर्क रुख अपनाया और पावरप्ले के अंत में टीम को 55/2 पर पहुंचा दिया. दोनों ने 60 रनों की साझेदारी की और केकेआर मैच जीतने की राह पर डाल दिया.

सौरभ चौधरी ने शूटिंग वर्ल्ड कप में रचा इतिहास 10 मीटर एयर पिस्टल में जीता ब्रॉन्ज मेडल

पेरू(एजेंसी)। पूर्व एशियाई खेलों और युवा ओलंपिक चैंपियन सौरभ चौधरी ने पेरू के लीमा में लास पालमास शूटिंग रेंज में वर्ष के दूसरे अंतर्राष्ट्रीय निशानेबाजी खेल महासंघ (आईएसएसएफ) विश्व कप राइफल/पिस्टल/शॉटगन चरण के पहले दिन 10 मीटर एयर पिस्टल पुरुष स्पर्धा में कांस्य पदक जीतकर अपनी झोली में एक और विश्व कप पदक जोड़ लिया. चीन के हू काई ने 246.4 के स्कोर के साथ गोल्ड मेडल जीता, जो विश्व रिकॉर्ड से सिर्फ 0.1 कम था, जबकि ब्राजील के ओलंपिक पदक विजेता फेलिप अल्मेडा वू ने सिल्वर मेडल जीता, जबकि सौरभ को 219.1 के साथ ब्रॉन्ज मेडल से संतुष्ट होने पड़ा. इससे पहले, दो भारतीय, सौरभ और वरुण तोमर ने शीर्ष-8 फाइनल में जगह बनाई थी, जिसमें सौरभ ने क्वालीफिकेशन में 578 के स्कोर के साथ पांचवां स्थान, जबकि वरुण ने 576 के साथ 8वां स्थान हासिल किया था. दोनों भारतीयों ने फाइनल में भी शानदार शुरुआत की, जिसमें सौरभ दूसरे और वरुण तीसरे स्थान पर रहे, जबकि दूसरे चीनी झी यू ने शुरुआती पांच शॉट के बाद बढ़त हासिल की. हालांकि, इसके बाद भारतीय जोड़ी को 10-रिंग तक पहुंचने में मुश्किल हुई, क्योंकि पहले दो सिंगल्स शॉट के बाद हू आगे निकल गए.

फास्ट टैग सिस्टम खत्म! 15 दिन बाद लागू हो रही नई पॉलिसी, सीधे बैंक खाते से कट जाएगा टोल

नई दिल्ली(एजेंसी) । देश के टोल बूथ को लेकर सरकार जल्द ही एक बड़ा बदलाव करने वाली है। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने घोषणा की है कि देश के राजमार्गों पर टोल भुगतान का तरीका बदलने जा रहा है। सरकार अगले 15 दिनों के भीतर एक नई टोल पॉलिसी पेश करने की तैयारी में है, जिसके मई से लागू होने की संभावना है। हालांकि, मंत्री ने इस नई नीति के बारे में विस्तृत जानकारी साझा नहीं की है, लेकिन उन्होंने संकेत दिया है कि इसके लागू होने के बाद टोल को लेकर किसी को भी शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। इस नई प्रणाली के आने से मौजूदा फास्टैग सिस्टम भी पूरी तरह से खत्म हो जाएगा। गडकरी ने स्पष्ट किया कि नई प्रणाली के तहत फिजिकल टोल बूथ की आवश्यकता नहीं होगी। इसके बजाय, सैटेलाइट आधारित ट्रैकिंग और वाहनों की नंबर प्लेट की पहचान तकनीक का उपयोग किया जाएगा। इसके माध्यम से टोल की राशि सीधे वाहन मालिकों के बैंक खातों से स्वचालित रूप से कट जाएगी। क्या है नया त्नक्क-आधारित टोलिंग सिस्टम? देश में सड़कों के बढ़ते जाल के साथ टोल बूथों की संख्या में भी काफी वृद्धि हुई है। सरकार अब इन टोल बूथों को समाप्त कर त्नक्क-आधारित टोलिंग प्रणाली को बढ़ावा देने जा रही है, जो वर्तमान स्नस्ञ्जड्डद्द सिस्टम की जगह लेगी। टोल बूथों के निर्माण से आधारभूत संरचना की लागत काफी बढ़ जाती है, जिससे टोल संग्रह की लागत में भी इजाफा होता है। इन्हीं समस्याओं के समाधान के लिए सरकार यह नई टोलिंग प्रणाली लाने जा रही है। इस नई प्रणाली में त्नक्क-तकनीक की मदद से सीधे वाहन चालक या मालिक के बैंक खाते से टोल की राशि काटी जाएगी। वाहनों की निगरानी त्नक्क-के माध्यम से की जाएगी और तय की गई दूरी और समय के आधार पर टोल की राशि की गणना की जाएगी। सरकार का मानना है कि यह नई प्रणाली टोल संग्रह को अधिक कुशल और पारदर्शी बनाएगी, साथ ही यात्रियों के लिए भी यह काफी सुविधाजनक साबित होगी।

स्कोडा ऑटो इंडिया ने काइलैक के सफल लॉन्च के बाद नई स्कोडा कोडिएक को पेश किया

नई दिल्ली(एजेंसी)। स्कोडा ऑटो इंडिया ने काइलैक रेंज के सफल लॉन्च के बाद अब अपनी लग्ज़री 4×4 एसयूवी कोडिएक की नई जनरेशन लॉन्च करने की घोषणा की है। यह कोडिएक की दूसरी जनरेशन है, जो भारत और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में पेश की जा रही है। भारत में यह कार लग्ज़री लुक, बेहतर आराम, ऑफ-रोड चलने की ताकत, शानदार रोड परफॉर्मेंस और सात सीटों की सुविधा के साथ आ रही है। पेट्र जैनेबा, ब्रांड डायरेक्टर, स्कोडा ऑटो इंडिया ने कहा, "मार्च में, काइलैक की लॉन्चिंग और कुशाक व स्लाविया के सपोर्ट से हमने भारत में अपनी सबसे बड़ी मासिक बिक्री हासिल की। यह इस साल हमारे कई नए रिकॉर्ड्स में से एक है। हमारी प्रोडक्ट रणनीति के तहत, नई कोडिएक का लॉन्च हमारे प्रोडक्ट रेंज के दूसरे पहलू को दिखाता है, जिसमें स्कोडा की लग्ज़री और टेक्नोलॉजी की ताकत झलकती है। कोडिएक अब हमारे लिए ऑक्टैविया और सुपर्ब की तरह एक खास और महत्वपूर्ण नाम बन गया है। यह एसयूवी शहर की सड़कों पर शानदार लग्ज़री और बेहतरीन ड्राइविंग अनुभव देती है, और इसमें हर तरह के रास्तों पर चलने की शानदार क्षमता भी है।" स्कोडा की 4×4 कोडिएक में 2.0 TSI इंजन लगा है, जो 150 किलोवाट की पावर और 320 एनएम का टॉर्क देता है। इसकी ताकत 7-स्पीड डुअल क्लच DSG ऑटोमैटिक गियरबॉक्स के जरिए दोनों पहियों तक पहुँचती है। यह कार MQB37 EVO प्लेटफॉर्म पर बनी है और दो वैरिएंट्स – स्पोर्टलाइन और सिलेक्शन L&K – में आती है, दोनों में 7 सीटें मिलती हैं। कोडिएक को भारत में छत्रपति संभाजी नगर की फैक्ट्री में असेंबल किया जाता है और एआरएआइ के मुताबिक इसकी माइलेज 14.86 किमी/लीटर है। कोडिएक की नई पीढ़ी अपनी पिछली पीढ़ी की तुलना में 59 एमएम लंबी है। इसकी लंबाई 4,758 एमएम और ऊंचाई 1,679 एमएम है।

एसबीआई कार्ड और टाटा डिजिटल की टाटा न्यू एसबीआई कार्ड लॉन्च करने के लिए साझेदारी

नई दिल्ली: एसबीआई कार्ड, भारत के सबसे बड़े प्योर प्ले क्रेडिट कार्ड जारीकर्ता, ने आज टाटा डिजिटल के साथ साझेदारी में टाटा न्यू एसबीआई कार्ड लॉन्च करने की घोषणा की। अपनी तरह का यह अनूठा लाइफस्टाइल को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड विभिन्न क्षेत्रों के जागरुक ग्राहकों के लिए एक प्रीमियम और अत्यधिक फायदेमंद वाली खरीदारी का अनुभव प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस को-ब्रांडेड कार्ड को दो वेरिएंट टाटा न्यू इनफिनिटी एसबीआई कार्ड और टाटा न्यू प्लस एसबीआई कार्ड में लॉन्च किया गया है। ग्राहक सभी खर्चों पर रिवार्ड अर्जित करते हैं, चाहे ऑनलाइन हों या इन-स्टोर, घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय मर्चेंट आउटलेट्स पर न्यूकॉइन्स के रूप में, जिन्हें टाटा न्यू ऐप पर रिडीम किया जा सकता है। इस लॉन्च के साथ, टाटा न्यू एसबीआई कार्ड के ग्राहक अब एक बेहतर खरीदारी अनुभव के लिए कई तरह के लाभों का आनंद ले सकते हैं। कार्डधारक टाटा न्यू इनफिनिटी एसबीआई कार्ड के साथ खर्च पर 10 प्रतिशत तक और टाटा न्यू प्लस एसबीआई कार्ड के साथ खर्च पर 7 प्रतिशत तक न्यूकॉइन्स के रूप में पुरस्कार का आनंद ले सकते हैं। ये मासिक रूप से कार्डधारक के टाटा न्यू ऐप के भीतर न्यूपास खाते में जमा किए जाते हैं। इन न्यूकॉइन्स को किराने का सामान, यात्रा बुकिंग, आभूषण, फैशन, इलेक्ट्रॉनिक्स और फार्मेसी सेवाओं सहित उत्पादों और सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला में ऑनलाइन और इन-स्टोर दोनों जगह भुनाया जा सकता है, जो ग्राहकों की विभिन्न जीवनशैली की जरूरतों को पूरा करता है। यह को-ब्रांडेड कार्ड दैनिक भुगतानों पर भी रिवार्ड प्रदान करता है, जिसमें यूपीआई लेनदेन पर न्यूकॉइन्स में 1.5 प्रतिशत तक का कैशबैक (रूपे वेरिएंट के साथ) और टाटा न्यू के माध्यम से किए गए बिल भुगतानों पर 5 प्रतिशत तक का कैशबैक मिलता है। ग्राहक एसबीआई कार्ड स्प्रिंट के माध्यम से डिजिटल रूप से कार्ड के लिए नामांकन कर सकते हैं, एसबीआई कार्ड वेबसाइट स्ड्ढ ष्टड्डह्स्र.ष्श्द्व पर जाकर, और चुनिंदा क्रोमा स्टोर्स पर एसबीआई कार्ड के रिटेल कियोस्क पर जाकर ऑफलाइन नामांकन का विकल्प भी चुन सकते हैं। लॉन्च पर बोलते हुए, सुश्री सलिला पांडे, एमडी एवं सीईओ, एसबीआई कार्ड ने कहा, आज के युग में, बदलती प्राथमिकताओं के साथ, ग्राहकों की जीवनशैली की जरूरतें और अधिक विविध हो गई हैं।

भारतीय गेहूं उद्योग को वैश्विक पहचान देने के लिए इंदौर में दो दिवसीय कॉन्क्लेव का आयोजन

रायपुर। गेहूं और गेहूं उत्पादों के क्षेत्र में नवाचार, स्थिरता और मूल्य वर्धन को बढ़ावा देने के लिए कार्य करने वाले अग्रणी उद्योग संघ व्हीट प्रोडक्ट्स प्रमोशन सोसाइटी (डब्ल्यूपीपीएस) द्वारा आयोजित डब्ल्यूपीपीएस सीईओ कॉन्क्लेव 2025 आगामी 24ङ्क25 अप्रैल को इंदौर के मैरियट होटल में आयोजित किया जाएगा। यह दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय स्तर का कॉन्क्लेव भारत के गेहूं उद्योग को वैश्विक मंच पर स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। गेहूं और गेहूं आधारित उत्पाद: सतत विकास और बाज़ार नेतृत्व के लिए सहयोग विषय पर केंद्रित यह आयोजन, 400 से अधिक उद्योग प्रमुखों, अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों, नीति निर्माताओं, तकनीकी विशेषज्ञों और खाद्य नवाचार में कार्यरत प्रोफेशनल्स को एक साझा मंच प्रदान करेगा। यह मंच प्रोडक्शन से लेकर एक्सपोर्ट तक, पूरी सप्लाई चेन को सशक्त करने, उद्योग-नीति समन्वय को बढ़ावा देने और वैश्विक व्यापार के नए अवसरों पर विचार-विमर्श के लिए एक परफेक्ट मंच है। कॉन्क्लेव के पहले दिन 24 अप्रैल को उद्घाटन सत्र में अनेक प्रतिष्ठित वक्ता शामिल होंगे जिनमें श्री सुनील अग्रवाल (अध्यक्ष, एम.पी. रोलर फ्लोर मिल्स एसोसिएशन), श्री अजय गोयल (चेयरमैन, डब्ल्यूपीपीएस), श्री डीन डायस (सीईओ, सीरियल्स कनाडा ङ्क वर्चुअल), श्री जॉन साउथवेल (वरिष्ठ व्यापार एवं निवेश आयुक्त, ऑस्ट्रेड, ऑस्ट्रेलियाई सरकार), श्री अविनाश चंदानी (पार्टनर, डेलॉइट इंडिया), प्रो. रमेश चंद (सदस्य, नीति आयोग) और डॉ. सुभ्रतो गुप्ता, आईएएस (सचिव, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार), पतंजलि फूड्स लिमिटेड के सीईओ श्री संजीव अस्थाना शामिल हैं। इस अवसर पर डब्ल्यूपीपीएस के चेयरमैन श्री अजय गोयल ने कहा, डब्ल्यूपीपीएस सीईओ कॉन्क्लेव 2025 न केवल भारत के गेहूं उद्योग के हितधारकों के लिए एक संवाद मंच है, बल्कि यह इस क्षेत्र को वैश्विक मानकों पर प्रतिस्पर्धी और सतत रूप से सशक्त बनाने की दिशा में एक प्रयास भी है। हमारा उद्देश्य केवल व्यापारिक विस्तार नहीं बल्कि न्यूट्रिशन, टिकाऊ प्रोडक्शन और टेक्नोलॉजी इंटेग्रेशन जैसे विषयों पर गंभीर विमर्श को बढ़ावा देना है। हमें विश्वास है कि यह कॉन्क्लेव किसानों, उद्यमियों और नीति निर्माताओं के बीच नई संभावनाओं को जन्म देगा।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, शुक्रवार 18 अप्रैल 2025

मुख्यमंत्री साय ने शहीद तात्या टोपे की पुण्यतिथि पर उन्हें किया नमन

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने 1857 की क्रांति के महानायक, क्रांतिकारी और देशभक्त सेनापति शहीद तात्या टोपे की पुण्यतिथि (18 अप्रैल) पर उन्हें सादर नमन किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि तात्या टोपे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उन अमर योद्धाओं में से हैं, जिनकी रणनीतिक कुशलता, अदम्य साहस और मातृभूमि के प्रति समर्पण आज भी हर देशवासी को गर्व और प्रेरणा से भर देता है। वे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के ऐसे सेनानायक थे जिन्होंने अंग्रेजी सत्ता को खुली चुनौती दी, और जब युद्ध के पारंपरिक रास्ते बंद हो गए, तब उन्होंने गुरिल्ला युद्ध नीति अपनाकर संघर्ष को जिंदा रखा। तात्या टोपे की वीरगाथा भारत की आज़ादी की कहानी का स्वर्णिम अध्याय है।

संक्षिप्त समाचार

रुद्र महायज्ञ में नकली शंकराचार्य के आने का विरोध, झम्मन शास्त्री बोले- आयोजक पर हो कार्रवाई

रायपुर (विश्व परिवार)। दुर्ग जिले के जामुल में रुद्र महायज्ञ में नकली शंकराचार्य के आने का विरोध धर्मसंघ, पीठपरिषद आदित्य वाहिनी और आनंद वाहिनी ने किया है. पीठ परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष झम्मन शास्त्री ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा, 21 से 27 अप्रैल तक दुर्ग में रुद्र महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें नकली शंकराचार्य अधोक्षजानंद को बुलाया जा रहा है. उन्हें गोवर्धन मठ पुरी जगतगुरु शंकराचार्य के रूप में प्रचारित कर आमंत्रित किया जा रहा है, जिसका हम विरोध करते हैं. झम्मन शास्त्री ने कहा, यह फर्जी मामला है. इसमें कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए. आयोजक के ऊपर भी कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए. वर्तमान में पुरी के प्रामाणिक शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती महाराज है. दुर्ग में पूरे मामले को लेकर हमने जिला प्रशासन को पत्र लिखकर जानकारी दी है. आगे मुख्यमंत्री से मुलाकात कर अपनी बात मुख्यमंत्री रखेंगे.

विधायक पुरंदर मिश्रा ने रविशंकर शुक्ल वार्ड में लगाई चौपाल समस्याओं का किया निराकरण

रायपुर (विश्व परिवार)। पंडित रविशंकर शुक्ल वार्ड में विधायक पुरंदर मिश्रा ने बुधवार को जनसंपर्क कर जनता की समस्याओं को सुना, राज तालाब सभा भवन हेतु राशि की भी स्वीकृति दी साथ ही साथ पुलिस प्रशाशन को असामाजिक तत्वों पर कार्यवाही करने का आदेश दिया। इस दौरान भाजपा मंडल अध्यक्ष राम प्रजापति, छाया पार्षद ज्ञानचंद चौधरी, फागूलाल चौधरी, भाजपा प्रदेश प्रवक्ता सुनील चौधरी, दीनानाथ साहू अशोक साहू दिनेश नेताम संजय रजक संजय बारीक विनोद साहू राजकुमार चौधरी नरेन्द्र चौधरी कुलविंदर सिंग हुंजन धनंजय महानंद साहू, गजेंद्र चौधरी, शिवप्रसाद गुप्ता, नरेंद्र चावला, वीरेंद्र सिंह कश्यप, निखिल चौधरी, तनय चौधरी सहित समाज के पदाधिकारी और कार्यकर्ता, नागरिक गण, उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री साय की अध्यक्षता में कैबिनेट की बैठक, लिए गए अनेक महत्वपूर्ण निर्णय

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की अध्यक्षता में आज यहां मंत्रालय महानदी भवन में आयोजित कैबिनेट की बैठक में अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए-

मंत्रिपरिषद की बैठक में परीक्षा की तैयारी कर रहे युवाओं के हित में निर्णय लिया गया कि छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग, छत्तीसगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मण्डल एवं विशेष कनिष्ठ कर्मचारी चयन बोर्ड, सरगुजा/ बस्तर/ बिलासपुर द्वारा आयोजित परीक्षाओं में छत्तीसगढ़ के स्थानीय निवासी अभ्यर्थी जो परीक्षा अथवा साक्षात्कार में उपस्थित होंगे उन्हें उनके द्वारा दी गई परीक्षा शुल्क की राशि वापस की जाएगी। इससे सिरियस केन्डीडेट की परीक्षा में उपस्थिति का प्रतिशत बढ़ेगा, वहीं नॉन सिरियस केन्डीडेट और इनइलिजिबल केन्डीडेट परीक्षा फॉर्म नहीं भरेंगे और इनके कारण राज्य शासन को होने वाली आर्थिक क्षति भी कम होगी।

कैबिनेट की बैठक में राज्य के छोटे व्यापारियों के हित में एक बड़ा फैसला लेते हुए छत्तीसगढ़ बकाया कर, ब्याज एवं शास्ति के निपटान (संशोधन) अध्यादेश-2025 के प्रारूप में निहित संशोधन का अनुमोदन किया गया। जिसके अनुसार राज्य सरकार छोटे व्यापारियों को प्रोत्साहित करेगी और 10 साल से अधिक पुराने लंबित मामलों में 25 हजार रूपए तक की वैट देनदरियों को माफ करेगी। इससे 40 हजार से अधिक व्यापारियों को लाभ होगा और 62 हजार से अधिक मुकदमेबाजी के मामलों में कमी आएगी।

कैबिनेट की बैठक में नवा रायपुर, छत्तीसगढ़ में एनआईएफटी (NIFT) के कैम्पस को मंजूरी प्रदान की गई। राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (NIFT) का नया कैम्पस छत्तीसगढ़ के नवा रायपुर में स्थापित किया जाएगा। कपड़ा मंत्रालय, भारत सरकार के अनुसार इस परियोजना की कुल संभावित लागत करीब 271.18 करोड़ रुपये होगी। इसमें भूमि क्रय हेतु 21.18 करोड़, भवन निर्माण के लिए 200 करोड़ और मशीनरी, फर्नीचर आदि के लिए 50 करोड़ रुपये का व्यय शामिल है।

इस संस्थान की स्थापना से फैशन शिक्षा के क्षेत्र में प्रदेश के युवाओं को नए अवसर मिलेंगे और फैशन उद्योग को तकनीकी रूप से प्रशिक्षित मानव संसाधन भी उपलब्ध हो सकेंगे। राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (NIFT) भारत में फैशन शिक्षा का एक प्रमुख संस्थान है, जिसकी स्थापना 1986 में कपड़ा मंत्रालय, भारत सरकार के तहत हुई थी। एन.आई.एफ.टी. के पूरे भारत में 17 परिसर हैं, जिनमें दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और बेंगलुरु शामिल हैं। यह संस्थान फैशन डिजाइन, प्रबंधन और प्रौद्योगिकी में स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रम प्रदान करता है। संस्थान फैशन डिजाइन, टेक्सटाइल डिजाइन, फैशन प्रबंधन और फैशन प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में विशेषज्ञता रखता है। यह छात्रों को व्यावहारिक अनुभव और प्लेसमेंट के अवसर प्रदान करने के लिए फैशन उद्योग के साथ सहयोग करता है।

मंत्रिपरिषद ने राज्य के नगरीय निकायों में जैव अपशिष्ट सह कृषि अपशिष्ट के प्रसंस्करण हेतु स्थापित किये जा रहे बायो-सीएनजी संयंत्रों हेतु रियायती लीज (Lease) दरों पर शासकीय भूमि आबंटन किये जाने की सहमति प्रदान करते हुए आगे की कार्यवाही के लिए नगरीय प्रशासन विभाग एवं संबंधित नगर निगमों को अधिकृत किया है।

मंत्रिपरिषद ने राज्य में सहकारिता को प्रोत्साहन दिये जाने के उद्देश्य से सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत शक्कर वितरण हेतु अप्रैल 2025 से मार्च 2026 तक आवश्यक शक्कर का क्रय राज्य के सहकारी शक्कर कारखानों से करने का निर्णय लिया है। इस हेतु शक्कर का क्रय मूल्य 37,000 रूपए प्रति टन (एक्स फैक्ट्री, जी.एस.टी. अतिरिक्त) निर्धारित किया गया है।

मंत्रिपरिषद ने स्थानीय रोजगार और सूक्ष्म-लघु उद्योगों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड (BEML) को राज्य में हैवी अर्थ मूविंग इक्विपमेंट मैन्युफैक्चरिंग संयंत्र स्थापित करने की सैद्धांतिक मंजूरी दी है। इसके लिए 100 एकड़ भूमि को टोकन दर पर आबंटित करने का निर्णय लिया है।

राजीव अग्रवाल को सीएसआईडीसी के अध्यक्ष के रुप में कार्यभार ग्रहण करने पर अमर पारवानी ने दी बधाई

रायपुर (विश्व परिवार)। देश के सबसे बड़े व्यापारिक संगठन कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष अमर पारवानी, चेयरमेन मगेलाल मालू, अमर गिदवानी, प्रदेश अध्यक्ष जितेन्द्र दोशी, कार्यकारी अध्यक्ष विक्रम सिंहदेव, परमानन्द जैन, वाशु माखीजा, महामंत्री सुरिन्द्रर सिंह, कार्यकारी महामंत्री भरत जैन, एवं कोषाध्यक्ष अजय अग्रवाल ने बताया कि आज कैट के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अमर पारवानी के नेतृत्व में कैट का एक प्रतिनिधी मंडल ने श्री राजीव अग्रवाल जी को छत्तीसगढ़ स्टेट इण्डस्ट्रियल डेव्हलपमेंट कार्पोरेषन लिमिटेड (सीएसआईडीसी) के अध्यक्ष के रुप में कार्यभार ग्रहण करने पर पुष्पगुच्छ भेंट कर बधाई एवं शुभकामनाएं साथ ही उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

अमर पारवानी ने बताया कि छत्तीसगढ़ स्टेट इण्डस्ट्रियल डेवलपमेंट कार्पोरेशन लिमिटेड (सीएसआईडीसी) के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री राजीव अग्रवाल ने कार्यभार ग्रहण किया। उन्होनें कहा कि प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी की मेक इन इंडिया की अवधारणा को सफल बनाने के लिए पूरे देश में छत्तीसगढ़ की उद्योग नीति सबसे ज्यादा सफल रही। प्रदेश में चार इण्डस्ट्रियल क्लस्टर की स्थापना की घोषणा गई है। इनमें से दो राजनांदगांव जिले के घुमना तहसील में और दो नवा रायपुर में स्थापित होंगे। देश-दुनिया में छत्तीसगढ़ की पहचान बनाने में हम सफल हुए हैं, आने वाले समय में हिन्दुस्तान दुनिया के तीन सबसे शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में खड़ा रहेगा। छत्तीसगढ़ तेजी से विकास करेगा और 2047 तक छत्तीसगढ़ हिन्दुस्तान के तीन प्रमुख राज्यों में खड़ा होगा। अब छत्तीसगढ़ अलग वैश्विक पहचान बनाएगा। नवनियुक्त अध्यक्ष श्री राजीव अग्रवाल जी को पुन: बधाई दी।

आरडीए अध्यक्ष नंदकुमार साहू की पहली समीक्षा बैठक

नई नगर विकास योजनाओं और रिडेव्हलेपमेंट की योजनाएं पर होगा काम

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री नंदकुमार साहू ने आज प्राधिकरण की विभिन्न योजनाओं की जानकारी ली और कार्यों की समीक्षा की। इस अवसर पर उन्होंने कमल विहार जैसी नई नगर विकास योजनाएं (टॉऊन डेव्हलेपमेंट स्कीम) बनाने और रिडेव्हलेपमेंट योजना पर कार्य योजना बनाने का निर्देश दिया। बजट की जानकारी लेते हुए उन्होंने पूर्ण विकसित हो चुकी योजनाओं को नगर पालिक निगम और विद्युत सब-स्टेशन विद्युत मंडल को हस्तांतरित करने तथा वर्तमान योजनाओं में साफ ङ्क सफाई, बकाया राशि वसूली पर जोर दिया।

समीक्षा बैठक में प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री कुन्दन कुमार के निर्देशन में तैयार किए गए पावर पांईट प्रेजेन्टेशन के माध्यम से वर्तमान में चल रही विकास और निर्माण योजनाओं की जानकारी दी गई। इसमें कौशल्या माता विहार नगर विकास योजना, इन्द्रप्रस्थ रायपुरा, बोरियाखुर्द योजना निर्माणाधीन प्रधानमंत्री आवास योजना के निर्माणाधीन फ्लैट्स, डिपाजिट योजना के अन्तर्गत देवेन्द्रनगर योजना में बन रहे प्रधानमंत्री एकता माल की भी जानकारी दी गई। चर्चा के दौरान प्राधिकरण की संपत्ति विक्रय का विवरण और शिकायतों के लिए इंटनेट के माध्यम से ऑनलाईन सुविधा प्रारंभ किए जाने के बारे में बताया गया कि इससे कोई भी भारतीय नागरिक रायपुर में प्राधिकरण की संपत्तियों को खरीदने के लिए देश-दुनिया के किसी भी कोने से आवेदन कर सकता है। यह प्रक्रिया काफी पारदर्शी है। इससे प्रापर्टी एजेंन्ट आम लोगों को परेशान नहीं कर पाएंगे। समीक्षा बैठक में यह भी बताया गया कि आरडीए इस समय कर्ज से मुक्त संस्था है तथा टिकरापारा के पुराने 96 टिनामेन्टस के न्यू डेव्हलपमेंट पर कार्य कर रहा है। राज्य शासन व्दारा टिकरापारा के 96 टिनामेन्टस को जर्जर घोषित करने के बाद इसकी अंतिम घोषणा तथा निविदा प्रक्रिया किया जाना है।

कांग्रेस ने निगम नेता प्रतिपक्ष के नाम पर मचा सियासी संग्राम, संदीप साहू ने राजीव भवन पहुंचकर जाहिर की अपनी नाराजगी

रायपुर (विश्व परिवार)। कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ के रायपुर नगर निगम से बागी पार्षद आकाश तिवारी को नेता प्रतिपक्ष बनाया है। जिसके बाद से पार्टी के भीतर हंगामा मच गया है। इस दौरान विरोध में वार्ड नंबर 1 के कांग्रेस पार्षद संदीप साहू अपने समर्थकों के साथ राजीव भवन पहुंचकर फैसले के विरोध में अपनी नाराजगी जताई है। वहीं साहू समाज ने भी फैसले से नाराज होकर संदीप साहू को नेता प्रतिपक्ष बनाये जाने के लिए 24 घंटे का अल्टीमेटम दिया है। आकाश तिवारी ने कांग्रेस से टिकट न मिलने पर निर्दलीय चुनाव लड़ा था। वहीं अब कांग्रेस ने उन्हें अपना नेता प्रतिपक्ष बना दिया है जिसके चलते वार्ड नंबर 1 के कांग्रेस पार्षद संदीप साहू विरोध में उतर आए हैं। वहीं पार्टी के इस फैसले के बाद शहर जिला कांग्रेस के संयुक्त महामंत्री लीलाधर साहू ने इस्तीफा दे दिया है। मामले में लीलाधर साहू ने कहा- कांग्रेस अगर ये फैसला वापस नहीं लेती, तो साहू समाज के लोग भी कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर प्रदर्शन करेंगे।

शहर जिला कांग्रेस कमेटी ने नगर निगम बजट के पहले संदीप साहू को नेता प्रतिपक्ष घोषित किया था। इसके लिए आदेश भी जारी कर दिया गया था। पार्षद संदीप साहू ने कहा कि, उनकी नियुक्ति वरिष्ठ की पर्यवेक्षक प्रतिमा चंद्राकर की मौजूदगी में पार्षदों और विधायकों से चर्चा के बाद हुई थी। आगे उन्होंने कहा कि, पीसीसी के पर्यवेक्षक ने सभी छाया पार्षदों और विधायकों से चर्चा कर मेरे नाम का ऐलान किया था।

छत्तीसगढ़ में अस्थायी बिजली कनेक्शन के लिए ऑनलाइन सिस्टम लागू

व्यवसायियों को मिली राहत

रायपुर (विसं)। छत्तीसगढ़ सरकार ने एक अभिनव कदम उठाते हुए व्यवसायों के लिए अस्थायी बिजली कनेक्शन प्राप्त करने की प्रक्रिया को पूरी तरह डिजिटल और सरल बना दिया है। स्टेट सिंगल विंडो पोर्टल के माध्यम से शुरू की गई इस ऑनलाइन प्रणाली का उद्देश्य नियमों में सुधार करना और कठिन प्रक्रियाओं को सरल बनाना है। इस पहल से न केवल पारदर्शिता बढ़ेगी, बल्कि व्यवसायियों को समय और लागत की बचत भी होगी। छत्तीसगढ़ सरकार की इस पहल को उद्यमियों और व्यापारियों ने खूब सराहा है।

नई प्रणाली के तहत, व्यवसायी अब घर बैठे ही स्टेट सिंगल विंडो पोर्टल पर अस्थायी बिजली कनेक्शन के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदन की स्थिति को रीयल-टाइम में ट्रैक करने की सुविधा ने प्रक्रिया को और भी पारदर्शी बना दिया है। पहले जहां कागजी कार्रवाई और कई दफ्तरों के चक्कर लगाने पड़ते थे, वहीं अब यह काम कुछ ही क्लिक में पूरा हो जाएगा। स्वचालित सिस्टम यह सुनिश्चित करता है कि सभी नियामक आवश्यकताएं पूरी हों, जिससे त्रुटियों की संभावना कम हो और ऑडिट प्रक्रिया भी सरल हो।

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा कि हमारी सरकार का लक्ष्य है कि छत्तीसगढ़ में व्यवसाय करना आसान और सुगम हो। इस ऑनलाइन सिस्टम के जरिए हमने अस्थायी बिजली कनेक्शन की प्रक्रिया को न केवल तेज किया है, बल्कि इसे पारदर्शी और व्यवसायी-अनुकूल भी बनाया है।

नेशनल हेराल्ड मामले में जनता का ध्यान भटकाने कांग्रेस कर रही प्रदर्शन : किरण सिंहदेव

रायपुर (विश्व परिवार)। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंहदेव ने कहा कि ईडी स्वतंत्र जांच एजेंसी है और उसने नेशनल हेराल्ड मामले में चार्ज शीट सक्षम न्यायालय में दाखिल किया है। जिसमें सोनिया गांधी राहुल गांधी सैम पित्रोदा और सुमन दुबे को आरोपी बनाया है। 2013 में सुब्रमण्यम स्वामी ने यह विषय सामने लाया था। कांग्रेस जनता का माइंड डाइवर्ट करने के लिए देशभर में प्रदर्शन कर रही है। जनता को गुमराह करने के बजाय अदालत में जाएं। यह भ्रष्टाचार और एक बड़ा घोटाला है। दो राउंड राहुल और सोनिया से पूछताछ के बाद 661 करोड़ किसी अचल संपत्ति जप्त करने की कार्रवाई की गई है। गलत दिशा देने ब्रह्म का वातावरण बनाने का काम कांग्रेस कर रही है। गांधी परिवार के खिलाफ क्या कार्रवाई नहीं हो सकती। क्या वे देश के कानून और संविधान से ऊपर हैं।

पत्रवार्ता के दौरान प्रदेश महामंत्री संजय श्रीवास्तव, वरिष्ठ प्रवक्ता संदीप शर्मा, जिलाध्यक्ष रमेश ठाकुर उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी देश भर में धरना देने की बात कर रही है, उन्हें धरना देने का अधिकार है लेकिन जमीन और फंड लूटने का अधिकार नहीं है। 1937 में नेशनल हेराल्ड को शुरू किया गया था, शुरुआत में इसके 5 हजार शेयर होल्डर्स थे, यानी नेशलन हेराल्ड कभी नेहरू खानदान की जागीर नहीं रहा। इसमें उस समय के बड़े-बड़े क्रांतिकारियों का भी सहयोग था। नेशनल हेराल्ड का प्रकाशन 2008 में बंद हो गया, क्योंकि वह आर्थिक रूप से विफल रहा। इसके बाद कांग्रेस पार्टी ने 90 करोड़ रुपये की राशि एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड को दी, जो इस अखबार को प्रकाशित करती थी। कांग्रेस एक राजनीतिक पार्टी है जिसे कई प्रकार की छूट मिलती है लेकिन राजनीतिक पार्टी किसी निजी संस्था को पार्टी का फंड नहीं दे सकती, यह पूरी तरह से गैर कानूनी है। कांग्रेस ने नेशनल हेराल्ड की पूरी संपत्ति को गांधी परिवार के हाथों में लाने के लिए एक कॉर्पोरेट षड्यन्त्र रचा। यंग इंडिया नाम की एक कंपनी बनाई गई जिसमें 38 प्रतिशत हिस्सा सोनिया गांधी का और 38 प्रतिशत राहुल गांधी का रखा गया। 9 करोड़ के इक्विटी शेयर इस कंपनी को ट्रांसफर किए गए।

9 करोड़ के इक्विटी शेयर के ट्रांसफर के बाद यंग इंडिया कंपनी के हाथ में नेशलन हेराल्ड की पूरी संपत्ति आ गई, जिसमें दिल्ली में बहादुर शाह जपुर पर एक संपत्ति, लखनऊ, मुंबई, भोपाल और पटना की हजारों-करोड़ की संपत्ति शामिल है। कांग्रेस ने बताया कि यंग इंडिया फाउंडेशन चैरिटी के लिए बनाया गया था लेकिन आज तक उस से क्या चैरिटी हुई इसकी कोई जानकारी उपलध नहीं है। ईडी ने कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष मोती लाल वोहरा से पूछताछ की थी, उसके बाद पवन बंसल से पूछताछ हुई, उसके बाद सोनिया और राहुल गांधी से पूछताछ की गई। पूरे मामले में जो 90 करोड़ रुपये लोन का बकाया था उसकी जगह 50 लाख देकर पूरा लोन राइट ऑफ करा लिया गया। यानी 50 लाख में हजरों करोड़ों की संपत्ति को अपने नाम करा लिया।

रायपुर रेल मंडल में ट्रेनों के सुरक्षित परिचालन को लेकर भिलाई-3 स्टेशन में संरक्षा सेमिनार का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। 17 अप्रैल 2025 को दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर रेल मंडल के संरक्षा विभाग के द्वारा ट्रेनों के सुरक्षित परिचालन हेतु परिचालन एवं विद्युत परिचालन विभाग के कर्मचारियों के साथ भिलाई-3 स्टेशन में संरक्षा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें निम्न बिंदुओं पर चर्चा की गई- शंटिंग के दौरान बरती जानेवाली सावधानियां एवं जी. एंड एस. आर. नियम 6.07 पर चर्चा (सामान्य नियम 6.07.01 से 6.07.05), स्पैड से बचाव एवं ऑटोमेटिक सिगनलिंग के फेलुअर के दौरान दी जानेवाली प्राधिकार और चालक द्वारा ली जानेवाली सावधानियां, हाल ही में हुई दुर्घटनाओं का विश्लेषण एवं आग से बचाव तथा अग्निशामक यंत्र का उपयोग एवं प्रदर्शन। इस संरक्षा सेमिनार में संरक्षा सलाहकारो ने संरक्षा सेमिनार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संरक्षा संगठन/रायपुर मंडल के द्वारा प्रत्येक माह में 02 संरक्षा संगोष्ठी का आयोजन रायपुर मंडल के विभिन्न स्टेशनों में किया जाता है, जिससे कर्मचारियों में कार्य करने के दौरान संरक्षा के प्रति जागरुकता लाई जा सके। उक्त संरक्षा संगोष्ठी में संरक्षा सलाहकार, सुपरवाइजर, एवं फील्ड कर्मचारियों को मिलाकर कुल 58 लोगों ने भाग लिया।

सावड़िया परिवार की दोहरी उपलब्धि : रवि शंकर भारतीय कॉस्ट सेवा में ऑल इंडिया द्वितीय स्थान पर चयनित

पिता मधुसूदन सावड़िया बने थे ITAT के लेखा सदस्य

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के सावड़िया परिवार ने एक बार फिर प्रदेश का नाम राष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया है। श्री रवि शंकर सावड़िया, सुपुत्र श्री मधुसूदन सावड़िया, ने भारतीय कॉस्ट सेवा (Indian Cost Service) की प्रतिष्ठित परीक्षा में ऑल इंडिया द्वितीय स्थान प्राप्त कर एक अद्वितीय उपलब्धि हासिल की है। अब वे भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के व्यय विभाग में सहायक निदेशक (Assistant Director) के पद पर नियुक्त होंगे। यह न केवल उनके परिवार के लिए, बल्कि पूरे छत्तीसगढ़ राज्य के लिए अत्यंत गौरव का क्षण है।

रवि शंकर की इस सफलता की विशेष बात यह है कि उन्होंने अपने करियर की शुरुआत से ही निरंतर उत्कृष्टता का प्रदर्शन किया है। वे चार्टर्ड अकाउंटेंसी की तीनों परीक्षाओं में ऑल इंडिया रैंक लाकर पहले ही अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा चुके हैं- Foundation में 12वीं रैंक, Intermediate में 9वीं रैंक, और Final में 20वीं रैंक। यह सिलसिला अब PSC की Indian Cost Service परीक्षा में द्वितीय स्थान तक पहुँच चुका है।

उनकी इस सफलता के पीछे एक मजबूत पारिवारिक आधार रहा है। उनकी माता जी, जो एक पोस्ट ग्रेजुएट और गृहिणी हैं, उनके पूरे करियर में प्रेरणा का सबसे बड़ा स्रोत रहीं। उनके शब्दों में, माँ ने न केवल पढ़ाई के हर पड़ाव में मार्गदर्शन दिया, बल्कि आत्मबल और संतुलन बनाए रखने की सीख भी दी। उनकी बहन भी पढ़ाई में अत्यंत प्रतिभाशाली हैं और वर्तमान में CA Final की तैयारी कर रही हैं।

यह उल्लेखनीय है कि श्री रवि शंकर के पिता, श्री मधुसूदन सावड़िया, जो स्वयं एक प्रतिष्ठित चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं, का चयन वर्ष 2023 में आयकर अपीलीय अधिकरण में लेखा सदस्य के रूप में हुआ था। यह छत्तीसगढ़ के इतिहास में केवल तीसरी बार हुआ जब किसी व्यक्ति को इस प्रतिष्ठित पद पर नियुक्ति मिली हो। उस वर्ष पूरे भारत से केवल 5 चार्टर्ड अकाउंटेंट्स का चयन हुआ था, जिनमें श्री सावड़िया प्रमुख थे। इस दोहरी उपलब्धि पर सावड़िया परिवार को समाज के सभी वर्गों से बधाइयाँ प्राप्त हो रही हैं। यह सफलता न केवल उनके परिवार की मेहनत और समर्पण का परिणाम है, बल्कि राज्य की युवा पीढ़ी के लिए एक सशक्त प्रेरणा भी बनकर उभरी है।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354